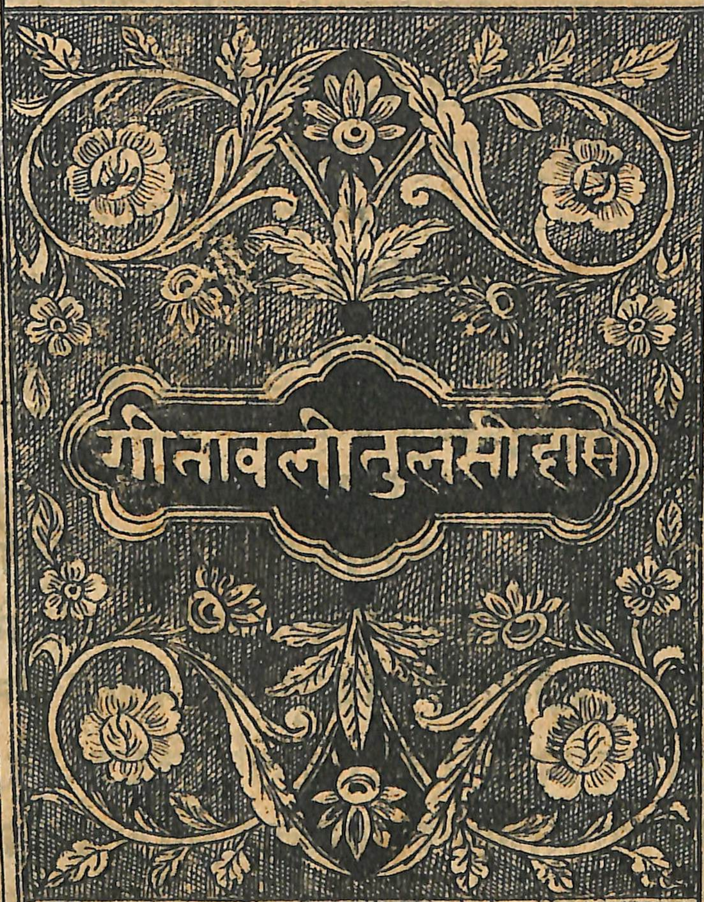
श्रीगणेशायनमः

मतबअ इलाही पएदर आगरा




# गीतावलीतुलसीदास

मुरल्हर कम्बोह टोला मच्छखांके

एहतमाम से छपी

…ायनमः नीलाम्भुजं श्यामलकोमलांगंसीता स
…पित वाम भाग पाणौ महा सायक चारु चापंनमामि रा
मंरघुवंश नाथं ॥ राग आसावरी ॥ आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई
रूप शील गुण धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ अति पुनी
त मधु मास लग्न ग्रह बार योग समुदाई ॥ हर्षवन्त चर अचर
भूमि सुर तनु रुह पुलक जनाई ॥ वर्षहि बिबुध निकर कुसु
मावलि नभ दुन्दभी बजाई ॥ कौशल्यादि मातु मन हर्षित यह
सुख बरणि न जाई ॥ सुनि दशरथ सुत जन्म लियो सब गुरु जन वि
प्र बुलाई ॥ बेद विहित करि क्रिया परम सुचि आनंद उर न समाई ॥
सदन बेद धुनि करत मधुर मुनि बहु बिधि बाज बधाई ॥ पुरवासि
न प्रिय नाथ हेतु निज निज सम्पदा लुटाई ॥ मणि तोरण केतु पता
कन पुरी रुचिर करि छाई ॥ माग धसूत द्वार बंदी जन जहँ तहँ करत
बड़ाई ॥ सहज सृंगार किये बनिता चलि मंगल बिपुल बनाई ॥ गा
वहि देहि आशीस मुदित चिर जीवौ तनय सुखदाई ॥ बीथिन कुङ्कु
म कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई ॥ नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भरि
देह दशा बिसराई ॥ अमित धेनु गज तुरग बसन मणि जात रूप अधि
कारी ॥ दिन्ह भूप अनुरूप जाहि जोई सकल सिद्धि गृह आई ॥ सुखी भये
सुर संत भूमि सुर खलगण मन मलिनाई ॥ सबै सुमन बिकसत रवि
निकसत कुमुद बिपिन बिलखाई ॥ जो सुख सिंधु सुकृत सीकर
ते शिव विरंचि प्रभुताई ॥ सोई सुख अवध उमगि रह्यो दश दिशि कौन
यत्न करौं गाई ॥ जो रघुबीर चरण चिंतत कलिन की गति प्रगट दिखाई ॥
अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ़ तुलसी दास तब पाई ॥ राग जयति
श्री टेक सहेली सुनि सोहिलो रे सोहिलो सोहिलो सोहिलो सो
हिलो सब जग आज पूत सपूत कौशल्या जायो अचल भयो कुल

राजु १ चैत चारु नौमी सित मध्य गगन मन भानु
लग्न भलो दिन मंगल मोद निधानु २ व्योम पवन पावक जल थल
हि पिता दशरथ सु मंगल मूल सुरदुंदुभी बजावहिं गावहिं हरषहिं बरषे
हिं फूल ३ भूपत सदन शोहिलो मनि बाजे गहगहे निशान जहं तहं
सजि हिं कलश ध्वज चामर तोरण केतु बितान ४ सीच सुगंध रचे चौक
गृह आंगन गली बजार दल फल फूल दूब दधि रोचन घर मंङ्गल चा
५ मुनि सानंद उठे दशरथ सकल समाज समेत लिये बोलि गुरु
सचिव भूमि सुर प्रमुदित चले निकेत ६ वेद कर्म करि पूजा पितर सुर दि
एम हिं देन दान लेहिं सो सरसुल तीन उराट मेंगङ्गल मुद कल्याण
आनंद मंह आनन्द ७ अवध आनन्द बधावन होइ उपमा कहें चारि फल की
मोहिं भलन कहे कवि कोइ ८ सखि आरती विचित्र थाल कर जूथ जूथ व
नारि गावति चली बधावन लैलै निज निज कुल अनुहारि ९ असही दु
सही मरहि मही मन बैरिन बढ्यो बिषाद १० पसु त्रचारि नाउ चिरंजीव हु
शंकर गौरि प्रसाद ११ लैलै ढोव प्रजा प्रमुदित चले भांति भांति भरि
भार करहिं गान करि आन राय की नाचहिं राजदुआर २१ गज रथ बाजि
बाहनी वाहन सबनि संवारे साज जनु उछल पति रति पति को पाल पुरवि
हल सहित समाज २२ घंटा घंटि पखाउज आउझ झांझ बेनु डफ तार
नूपुर धुनि मंजीर मनोहर कर कंकन झनकार २३ नृत्य करहिं नट नटी ना
रि नर अपने अपने रंग मनहु मदन रति विविध भेष धरि नटत सुदेश
सुगंध २४ उघरहिं छंद प्रबंध गीत पद राग ताल बंधान सुनि किन्न
र गंधर्व सराहत बिथकहिं बिबुध विमान २५ कुंकुम अगर अरगजा छिर
कहिं भरहिं गुलाल अबीर नभ प्रसून झरि पुरी कोलाहल भै मन भाव
ते भीर बड़ी बयस विधि भयो दाहिनो गुरु सुर आशिर्वाद दशरथ
सुकृत सुधा सागर सब उमगे तजि मर्याद २८ ब्राह्मण भेद मांगध गित

...धुनि मंगल गान निकसत पैठत लोग परस्पर बोल
त लगि लगि कान १८ बरषहिं मुकुता रत्न राजमहिषी पुर सुमुखि सम
न बमरे नगराने छावरि मणि गण जनु जुआरज बधान १९ कीन्ह बेद बि
धि लोकरीति नृपं मंदिर परम हुलास कौशल्या कैकयी सुमित्रा रह
स विवश रनिवास २० रानिन दिये वसन मणि भूषण राजा सहन भंडार
मागध सूत भाट नट याचक जंह तंह कराहि कवार २१ बिप्रवधू सनमा
नि सुआसिनि जन पुरजन पहिराइ सनमाने अवनीप अस्प पूणी पूतई
पूर मेघा मनाई २२ अष्ट सिद्धि नवनिद्धि भूति सब भूपति भवन कमा
हि समय समाज राज दशरथ को लोकप सकल सिहांहि २३ को कहि
प्रा के अवध वासिन को प्रेम प्रमोद उछाहु पूरद पूष गणे पूणिगणेशु
हि अग्रम निगम अवगाहु २४ शिव विरंचि मुनि सिद्ध प्रशंसत बड़भू
प के भाग तुलसीदास प्रभु सोहिलो गावत उमंगि उमंगि अनुराग २५
२ राग बिलावल आज महा मंगल कोशल पुर सुनि नृप के सुत चारि
भये सदन सदन सोहिलो सुहावनन भ अरु नगरनि सान हये सजि स
जि जान अमर किन्नर मुनि जानि समय शुभ मान ठये नाचहिं नभ
अपसरा मुदित मन पुनि पुनि बर्षहि सुमन चये अति सुख बेगि बोलि
गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गये जातिकर्म करि कनक बसन म
णि भूषित सुरभि समूह दये दल रोचन फल फूल दूब दधि युवतिनि भ
रि भरि थार लये गावति चलीं भीर भई बीथिन बंदिन बाकुर विरद बये
कनक कुम्भ चामर पताक ध्वज जंह तंह बंदन बार नये ... प्रबीर
अरगजा छिरकहिं सकल लोक एक रंग रये उमंगि चल्यो आनन्द लो
कनि हूं देत सबनि मन्दिर रितये तुलसीदास पुनि भरे देखियत राम
कृपा चितवनि चितये ३ राग जयति श्री गावै विबुध बिमल बरवाणी
भुअन कोटि कल्याण कन्द जयो पूत कौशल्या रानी माह पक्षति

थि बार नखत ग्रह योग लग्न शुभ ठानी जल थल गगन प्रसन्न सा
धु मुनि द्विज दिग्गज हिय हुलसानी बर्षत सुमन बधावन गगन भई है
न जात बखानी ज्यौं हुलास रनिवास नरेसहि त्यों जनपद रजधानी
अमर नाग मुनि मनुज सपरिजन विगत विषाद गलानी मिलहिं मां
झ रावण रजनीचर लंक संक अकुलानी देव पितर गुरु विप्र पूजि नृप
दये दान रुचि जानी मुनि बनिता पुरनारि सुआसिनि सहस भांति स
नमानी पाइ अघाइ असीसत निकसत याचक जन भये दानी यों प्रसन्न
केकयी सुमित्रहि होइ महेश भवानी दिन दूसरे भूप भामिनि दोउ भ
ई सुमंगल खानी भयो सोहिलो सोहिले मो सृष्टि सोहिले सानी न
चत गावत गो मन भावत सुख आवत अधिकानी देत लेत पहिरत प
हिरावत प्रजा प्रमोद अघानी गान निसान कोलाहल कौतुक देख
त दुनी सिहानी हरि विरंचि हर पुर शोभा कुलि कोसल पुरी लोभानी
आनंद अवनि राजरवनी सब भागहु को रिव जुडानी आशिष देइ स
राहहिं सादर उमा रमा ब्रह्मानी विभव विलास बाढि दशरथ की दे
खि न जिन्हहिं सोहानी कीरति कुशल भूति जय ऋधि सिधि तिन प
र सबै कोहानी छठी बारहो लोक वेद विधि करी सुविधान विधानी रा
म लक्ष्मण रिपुदवन भरत धरे नाम ललित गुरु ज्ञानी सुकृत सुमन ति
ल मोद बास विधि यतन यन्त्र भरि घानी सुख सनेह सब दियो दशरथहि
खरि खेलेल थिर थानी अनुदिन उदय उछाह उमग जग घर घर अव
ध कहानी तुलसी राम जन्म यश गावत सो समाज उर आनी ४ राग के
दार अवध बधावने घर घर मंगल साज समाज शकुन सुहावने मुदि
न करत जनि जनि निज काज छन्द निज काज साज सवांरि पुर नर नारि
रचना अनगनी गृह अजिर अटनि बजार बीथिन चारु चौकें विधि च
नो चामर पताका नेजा तोरण कलश दीपावली बनी सुरस सुकृत

...धुनिमंगल बांधि सुमंगि जननी जनु जनी १ चैत चतुर्दसी चांदनी
अमल उदित निसि राज उडगण अवलि लसित पोद पारि दिसा उमगन आ
नंद आज छन्द आनन्द उमगत आजु विबुध विमान विपुल बनाइ कै
गावत बजावत नटत हर्षत सुमन बर्षत आइ कै नरनिरषिन भसुषे
खि पुर छवि परसपर सराहि कै रघुराजसाज सराहि लोचन लाहु लेत
अघाइ कै २ जागिए राम छठी सजनारी रजनी रुचिर निहारी मंगल
मोद मढी मूरति जनु नृप बालक भरी छन्द मूरति मनोहर चारि वि
रचि विरंचि परमारथ भयी अनुरूप भूपहि जानि पूजन योग विधि पूरा
कर दयी तिनकी छठी मंजुल मठी जग सरस जिनकी सरसयी किय
नींद भामिनि जागरन अभिरामिनी यामिनि भयी ३ सेवक सजग भये
समय सुसाधन सचिव सुजान मुनि वर गुरु नृप पये लौकिक वैदिक
विविध विधान छन्द बैदिक विधान अनेक अलौकिक आचरण सु
नि जानि कै बलिदान पूजा मूलि कामणि साधि राखे आनि कै जे
देव देवी सेइयत हित लागि चित सनमानि कै ते यंत्र मंत्र पवारु
रखत सवनि सापहिचानि कै ४ सकल सुआसिन गुरुजन पुरजन
पाहुन लोग विबुध विलासिनि सुर मुनि याचक जो जेहि योग छन्द
जोहि योग जेहि तेहि भांति तेहि पहराइ परिपूरण किय जय कहत
देत असीस तुलसी दास ज्यों हुलसत हिये ज्यों आज कालि हु पर्व जा
गन होहिंगे निवते दिये ते धन्य पुण्य पयोधि जे तेहि समय सुख जो
वन जिये ५ भूपति भागवली सुरनर नाग सराहि सिराहिं किय वरवेष
अली सम्पति सिधि अणिमादिक माहिं छन्द अनिमादि सारद सै
ल नंदनि बाल लालहि पारहीं भारजन्म जे पायेन ते परितोष उमा रमा
ल हीं निज लोक विसर लोकपन घरकीन चरची चालहीं तुलसी तप
सिनि ताप जग जनु प्रभु छठी छायालहीं ६ ५ राग जयति श्री

...[illegible] चरण पारण निखा
चाज आज अनन्थ गद गदे सानन्द बधाये नाम करन रघु [illegible]
पसु दिन सोधाये पाय रजाय सुराधकी ऋषि राय बुलाये प्रिय
सचिव सेवक सखा सादर सिर नाये साधु सुमति समरथ सबै सा
नंद सिखाये जल दल फल मणि मूलि मंगल काज लिखाये २ गण
प गौरिहर पूजिकै गोवृन्द दुहाये घर घर मुद मङ्गल महा गुणगण
सुहाये तरल मुदित जहं तहं चले मन के भय भाये सुरपति प्रास
न धन मनोमानु लमिलि धाये २ सृह आंगन चौहट गली बाजार ब
नाये कलश चवर वर तोरण ध्वजा सुवितानतनाये चित्र चारु चौ
कार चो लिखि नाम जनाये भरि भरि सरवर वापिका अरगजा सनाये
३ नरनारि बिपल चारिमें सब साज सजाये दशरथ पुर छवि आपनी
सुरनगर लजाये बिबुध विमान बनायकै आनंदित आए हर्षि सुम
न वर्षन लगे गए धनु जनु पाए ४ चार बिप दुवद केरविकुल गुरु ज्ञानी
आपु वशिष्ठ अथर्व बनी महिमा जग जानी लोक रीति विधि वेद की ग
रिकसो सुवानी शिशु समेत वेगि वोलिये कौशल्या रानी ५ सुन
तसुता प्रिनिले चली गावतिवड भागी उमा रमा शारद सचालरवि
मुनि अनुरागी निज निज रुचि वपु विरचिके हिलि मिलि संग लागी
तेहि औसर तिहु लोक की सुद्ध शाजनु जागी ६ चारु चौक वैठत भई
नृप भामिनि शोहै गोद मोद मूरत लियें सुकृति जनु जो है सुख
सुखमा कौतुक कला लखि सुनि मुनि मोहै सो समाज ज्यों कहि
सके ऐसो कवि को है ७ लगे पठन रक्षा रिचा ऋषिराज बिराजे गा
न सुमन हिजय जय बहु बाजन बाजे भये अमंगल लंक में संक
संकट गाजे भुअन चारि दश के बड़े दुख दारिद भाजे ८ बाल बि
लोकि अथर्वनी हंस हरि हि जनायो शुभ को शुभ मोद मोद को राम
नाम सुनायो आलु बाल कलकौं शिला दल बरण सुहायो कन्द

आनन्द को जनु अंकुरि जायो ६ जोहि जानि जपि जोरिके करपुट पुरि रखि जय जय जय करुणा निधे सादर सुर भाषे सत्य सिंधु सांचे सद जिह्वा स्वर शाखे प्रणत पाल पाये सही जे फल सु मिलाखे २० भूमिदेव सुर देखिकै नरदेव सुखारी वालि सचिव सेवक सखा पट धारि भंडारी देहु जाहि जोई चाहिए सनमानि सभा री लगे छन दियहर्षि के टेरि टेरि हंकारी २१ राम निछावरि लेन को टरि टोत भिषारी बहुरि देव वेद देखिये मानदुं धन धारी भरत ल षण रिपुदवन हूं धरे नाम बिचारी २२ भये भूप वालक निके नाम नि नूप मनी के गये पोच संकट मिटे तब ते पुरली के सुफल म नोरथ विधि किए सब विधि सवही के अब हैहूं गाय सुने सव के तु लसी के २३ ६ राग बिलावल सुभाग सेज सोहति कौ शल्या तु चिर राम शिशु गोद लिये वार वार विधु वदन विलोकत लोचन चा रु चकोर किये कवहु पौढ़ि पय पान करावति कवहु करा खति रही हि यें वाल के लिगावति हलरावति पुलकति प्रेम पियूष पिये विधिम हेश मुनि सुर सिहात सव देखत अंवर ओट दिये तुलसिदास अस सुख रघुपति पे काहू तो पायो नकियो ७ राग सोरठ है है लाल कव हि बड़ु वलि भेया राम लखण भावते भरत रिपुदमन चारु चहू भेया वाल विभूषण वसन मनोहर अंगनि विरचि वनैहौं छगण मगनमि ल्नि अजिर खेलिहौ हुमुकि हुमुकि कव धैहौ कलवल वचन नोतरी मंजुल कहिमा मोहि वुलैहौ पुरजन सचिव राबरानी सब सेवक सखा सहेली लैहे लाचन लाहु सुफल लखि फलित मनोरथ वेली जा सु ख की लाल साल टूप्यिव शुक सनकादि उदासी तुलसी नेहि सुख सिन्धु को पिला मगन प्रेम पय प्यासी ८ पगनि कव चलिहौ चारो भैया प्रेम पुलकि उरलाइ सुअन सव कहति सुमित्रा भैया सुंदर तन

शिशु वसन अभूषण नख सिख निरखि निकैया दलि तृण प्राण निछा
वरि करि करि लैहैं मात बलैया किलकनि नटनि चलनि चित·
वनि भजि मिलनि मनोहरतैया मणि खंभनि प्रति बिम्ब झलक
छवि छलकिहि भरि अंगनैया बाल विनोद मोद मंजु विधु ली·
लाल लित जोहैया भूपति पुण्य पयोधि उमगि घर घर आनंद ब·
धैया ह्वै है सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया अनाया
स पाई है सो जन्म फल तो नर बचन सुनैया ॥ भरत राम रिपुदवन ल·
खण के चरित सरित अन्हैवैया ॥ तुलसी तब ज्यों अजहुं जानिबे
रघुवर नगर बसैया ॥९॥ चुपरि उबटि अन्हवायके नयन आं·
जे रचि रुचि तिलक गोरोचन को कियो है ॥ भूपर अनूप मसि बिन्दु बारे बा
रे वार विलसत सीस पर हेरि हेरु हियो है ॥ मोद भरि गोद लिये लालति सु
मित्रा देखि देव कहै सब को सुकृत उपवियो है ॥ मातु पितु प्रिय परिज
न पुरजन धन्य पुण्य पुञ्ज पेखि पेखि प्रेम रस पियो है ॥ लोहित ललित ल·
घु चरण कमल कर चलि चाहि सुछबि सुक विजिय जियो है ॥ बालके लिवान बरू
लनि कि झलमलत शोभा की दिअढ मानो रूप दीप दियो है ॥ राम शिशु सानुज च
रित चारु गाइ सुनि सुजननि सादर जनम लाहु लियो है ॥ तुलसी बिहाइ दशरथ
दश चारि पुर ऐसे सुख योग विधि विरच्यो न बियो है ॥१०॥ राम शिशु गोद महा मोद
भरे दशरथ कौशिलहुं लल कि लखणलाल लयो है ॥ भरत सुमित्रा लये कैके·
यी समन सत्रु तन प्रेम पुलक मगन मन भयो है ॥ मेढी लटकन मणि कनक रचित
बाल भूषण बनाइ आछे अङ्ग अंग ठयो है ॥ चाहि चुचुकारि चूम्बि लालत लाव·
त उर तैसे फल पावत जैसे सुबीज बयो है ॥ घन ओट विबुध बिलोकि वर्षत फूल अनु
कूल वचन कहत नेह मयो है ॥ ऐसे पितु मातु पूत पुर परिजन विधि जानियत आ·
यु भरि रई निर्मियो है ॥ अजर अमर होहु करें हरि हर छोहु जठर जठरन आशिर्वा
द ह्यो है ॥ तुलसी सराहैं भाग तिनके जिनके हियें डिंभन राम रूप अनुराग रंग रं·
यो है ॥ ॥ ॥ ॥...

...धवरो ॐ आजु अनरसेहैं भोर के पय पियत ननीके रहत न बैठे
ठाढे पालने भूलत हूं रोवत राम मेरो॥ सोसोचु सवही के देव पितर यह पूजियेतु
लाती लियेघी के नदपि कवहूं कवहुं सखि ऐसेही आरत जव परत दृष्टि दुष्टनी
के वेगि वोलि कुलगुरु छुयें माथो हाथ अमीके सुनत आइ ऋषि कुश हरे नरसिंह
मंत्र पढेजो सुमिरत भय भीके जासु नाम सर्वस सदाशिव पार्वती के नाहि फ़रावनि
कोशिला यह रीतिप्रीतिनि की हिय हुलसति तुलसी के १२ माथो हाथ ऋषि जवदिये
राम किलकन लागि महिमा समुझि लीला विलोकि गुरु सजल नयन तनपुलक
रोम जागे लिये गोद धाये गोद ते मोद मुनि अनुरागे निरखि मात हर्षि हिये
आली ओट कहति मृदु वचन प्रेम केसे पागे तुम्ह सुरतरु रघुवंश के देत अ
भिमत मांगे मेरे विशेषि गति रावरी तुलसी प्रसाद जाके सकल अमङ्गल
भागे १३ अमिय विलोकनि करि कृपा मुनि वरजव जोए तवतेराम अनुभर
तलहणरिपुदवन सुमुख सखि सकल सुअनसुख सोए लाय सुमित्रा लिये
हिये फणी मणि ज्यों गोए तुलसी निछावरि करत मातु अतिप्रेम मगन मन स
जल सुलोचन कोए १४ मात सकल कुलगुरु वधू प्रियसखी सुहाई सादर सव मङ्ग
ला किये महि मति महेश पर सवनि सुधेनु दुहाई वोलि भूप भूसुर लिये अति विनय
वडाई पूजि पायसन मान दान दिय लहीं अशीस मुनिवर्षे सुमन सुरसांई घर घ
र पुर वाजन लगी आनंद वधाई सुखसनेह ते हि समय को तुलसी जाने जाको
चौरो चित चहु भाई १५ राग धनाश्री ॐ याशिशु के गुण नाम वडाई को कहि सकै
सुनहुं नरपति श्रीपति समान प्रभुताई यद्यपि वुधि वयरूप शील गुण समय चारु
चारयौ भाई तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भक्ति सुखदाई सुरनर मुनि
करि अभय दनुज हति हरिहिं धरणि गरुआई कीरति विमल विश्व अघमो
चनि रहिहि सकल जग छाई याके चरण सरोज कपट तजि जो भजिहै मन
लाई सकल सुगल सहित तरिहै भव यह नक छू अधिकाई सुनि गुरु वचन
पुलकि तन दम्पति हर्ष न हृदय समाई तुलसिदास अवलोकि मातु सुखप्रभु
मन मे मुसुकाई १६ राग विलावल ॐ अवध आजु आगमी एक आयो करत

लनिरविकहे सबगुणगणवहुनमिपरिचोपायो वूढोवडो प्रमाणिकब्राह्मणशंकर नामसुहायोसंगशिसुशिष्यसुननकौशल्याभीतरभवनबुलायो पायपखारिपूजिदियआसन असनवसनपहिरायोनेलेचरणचारुचारोसुतमाथेहाथदिवायो नखशिषवालविलोकि विप्रतनुपुलकनयनजलछायो लैलैंगोदकमलकरनिरखतउरप्रमोदअनुमायोजन्मप्रसंगकह्यौ कौशिकमिसुसीयसयम्वरगायो रामभरतरिपुदवनलखणकोजयसुखसुयशसुनायो तुलसिदासरनिवासरहसवशभोसबकोमनभायो सनमान्योमहिदेव अशीशतसानंदसदनसिधायो १७ रागकेदारा ॥ पौढियेलालपालनेहौं झुलावौं करपदमुखचखुकमललसतलखिलोचन भ्रमरभुलावौं वालविनोदमोदमंजुलमणिकिलकनिखानिखुलावौं तेइअनुरागतागगुहिवेकहेमतिमगनयनिबुलावौंतुलसीभणितभलीभामिनिउरसोपहिराइफुलावौं चारुचरित्ररघुवरतेरेहिमिलिगाइचरणचितुलावों १८ सोईलाललाडिलेरघुराई मगनमोदलियगोदसुमित्राबारबारवलिजाईहंसेहसत अनरसेअनरसतप्रतिविंवनिज्यौंझांई तुमसवकेजीवनकेजीवनसकलसुमंगलदाई मूलमूलसुरवीथिवेलितमतोमसुदलअधिकाई नखतसुमनभविटपवोडिमनुछटाछटकिछविछाई हौंजंभातअलशाननातततुचवानिजानिमैंपाई गाईबारहलाडवोलिहोंसुखनीदरीसुहाई वहुरूछौनाछगनमगनमेरे कहतिमल्हाइमल्हाई सानुजहियहुलसतितुलसीकेप्रभुकीललितलरिकाई १९ ललनलोनेलरुआवलिमैया ॥ सुखसोइयेनीदवेरियाभइचारुचरितचहूंभैया ॥ कतिहिमल्हाइलाइउरछिनछिनछगनछवीलेछोटेछैयामोदकन्दकुलकुमुदचन्द्रमेरेरामचन्द्ररघुरैया रघुवरवालकेलिसंतनकीसुभगसुमुरसुरगैया ॥ तुलसीदुहिपीवतसुखजीवतपयसुप्रेमघनधैया २० सुखनीदकहतिआलिआइहौं रामलखणरिपुदवनभरतशिसुकरिसनसुमुखसोवाइहौं रोवनिधोवनिअनसानिअनरसनिडिठिमिठिनिठुरनशाइहौं हंसनिखेलनिकिलकनिआनन्दनिभूपतिभवनवसाइहौं गोदविनोदमोदमयमूरतिहरषिहरषिहलराइहौं ननुनिलनिलकरिवारिराम

परलेहैंरोगवलाइहौं रानीराउसहितसुतपरिजननिरखिनयनफलुपाइहौं चारुचरितरघुवंशतिलककेनहंतुलसिहिंमिलिगाइहौं २१राग असावरी कनकरत्नमयपालनोरच्यौ मनहुंमारसुनहार विविधिखेलौनाकिंकिनी लागेमंजुलमुक्ताहार रघुकुलमंडनरामलला १जननिउवटिअन्हवाइकैम णिभूषणसजिलियेगोद पादायेपटुपालनेशिसुनिरखिमगनमनमोददशरथ नंदनरामलला २मदनमोरकीचंद्रिकामलकनिनिंदरनितनुज्यातिनीलक मलमणिजलदकीउपमाकहेलघुहोति आनुसुकृतफलरामलला ३ल घुलघुलोहिततललसितहैंपदपाणि अधरयकरंग कोकविजोकविकाहि शकेमरवशिरवसुंदरसवअंग परिजनरंजनरामलला ४पगनूपुरकटिकिं किणीकरकंजमपहुंचीमंजु हियहरिनरवअद्भुतनवन्योमनोमनसिजमणिग णगंजु पुरजनसुरमणिरामलला ५लोचननीलसरोजसेभूपरमसिविंदु विराजजनुविधुमुखछविअमियकोरसकरारच्यो आज शोभासागररामलला ६गमुआरीअलिकावलिलसैलटकनललितललाट जनुउडगणविधु मिलनकोचलेनमविदारिकेरिवाट सहजसुहावनरामलला ७देखिखेलौना किलकहींपदपाणिविलोचनलोल विचित्रविहंगअलिजलजज्यौंसुखमास रकरनकलोल भक्तकल्पतरुरामलला ७बालबोलिविनुअर्थकेसुनिदेनप दारथचारि जनुइनवचननतेंभयेसुरतरुतापसत्रिपुरारि नामकामधुकराम लला ९सखीसुमित्रावारहींमणिभूषणवसनतिभाग मधुरदुलाइसल्हावहीं गावहिंउमगिउमगिअनुरागे हैंजगमंगलरामलला १०मोतीजायोसीपमें अदितिजयोजगभानु रघुपतिजायोकोशिलागुणमंगलरूपनिधानु भु वनविभूषणरामलला ११रामप्रगटजवतेंभये गयेसकलअमङ्गमूलगीतमु दिनहितउदितहैं नितवैरिनकेउरसूल भवभयभंजनरामलला १२अनुजस खाशिशुसङ्गलैखेलनजैहैंचोगान लाडूनरवरभरपरैगोसुरपुरवाजिहैंनि सान रिपुगणगंजनरामलला १३रामअहेरेचलहिंगेजवगजरथवाजिसंवारि दशकधरउरधकीअवजनिधावैधनुधारिअरिकरिकेहरिरामलला १४गीतसु

मिचासाखिनके सुनिसुनिसुरमुनि अनुकूल दय अशीशजपजयकहैंहैं वैवैं
फूल सुरसुखदायकरामलला २५ बालचरितमय चंद्रमायह सोरहकलानि
धानचितचकोरतुलसी कियोकरै प्रेमअमीरसपान तुलसीकेजीवनरामल
ला २६ २२ रागकान्हरा ॥ पालनेरघुपतिहिझुलावहि लैलैनामसप्रेमसरससुस
रकोशल्याकलकीरतिगावै केकिकण्ठहितश्याम वरणवपुवालविभूषणविर
चवनाये अलकैंकुटिलललितलटकनभ्रूनीलनलिनदोउनयनसोहाये शिशु
सुभावसोहतजवकरगहिवदननिकटपदपल्लवल्याये मनहुंसुभगयुगभुजग
जलजभरिलेतसुधाशशिसोंसुचिपाये उरअनूपविलोकिखेलौनाकिलकतपु
निपुनिपाणिपसारत मनहुंउभयअम्भोजअरुणसोंविधुभयविनयकरतअ
तिआरत तुलसिदासवहुवासविवश अलिगुंजतसोनहिजातवखानी मनहुं
सकलसुतिरिचामधुपह्वै विसदसुयश वरणतवरवानी २३ रागविलावल ॥ झूल
तरामपालनेसोहैं भूरिभागजननीजनजोहैं तनमृदुमंजुलमेचकताई झलक
तिवालविभूषणझांई अधरपाणिपदलोहितलोने सरसिंगारभवसारससोने
किलकतनिरखिविलोनालोना मनहुविनोदलरयछविछौना रंजितअंज
नकंजविलोचन भ्राजतभालतिलकगोचन लखैमसिविंदुवदनविधुनीके
चितवतचितचकोरतुलसीके २४ रागकल्याण ॥ ललितशिशुरूपरामसकलगु
णनिकायधामकौतुकीकृपालब्रह्मजानुपाणिचारी नीलकञ्जजलदपुञ्ज
मरकतमणिसदृशश्याम कामकोटिशोभाअंगअंगनूपुरवारी हाटकमणिर
तखचितचित्रइंद्रमंदिरानिवाससदनविधिरच्यौ संवारी विहरतनृपअजिर
अनुजसहितवालकेलिकुसलनीलजललोचनहरिमोचनभयभारी अरुण
चरणअंकुशध्वजकंजकुलिशचिन्हरुचिरभ्राजतअतिनूपुरवरमधुरमुखरका
रीकिंकिनिविधिजालकम्बुकण्ठललितमालउरविसालकेहरिनखकंकन
करधारी चारुचिबुकनासिकाकपोलभालतिलकभृकुटिश्रवणअधरसुन्दर
द्विजछविअनुपन्यारी मनहुंअरुणकंजकोशमंजुलयुगपांतिप्रसवकु
न्दकलीयुगलयुगलपरमसुभवारी चिक्कनचिकुरावलीमनोषडंग

घिमरडलीवनी विशेषगुञ्जनजनु वालककिलककारी इकटकप्रतिविम्ब निरखिपुलकनहरिहर्षलैउळगजननीरसभंगजियविचारी शोबहुंसन कारिशंभुनारदादिसुकमुनीशकरतविविधुयोगकामक्रोधलोभजारी द॰ शदशगृहसोइउदारभंजनसंसारभारलीलाऽपवतारतुलसिदासत्रास हारी २५रागकान्हरा॥ अंगनफिरतघुटुरुवनधाये नीलजलजतनश्या मरामशिशुजननिनिरखिसुखनिकटबुलाये वंधुकंसमनुऽपरुणपदपंकज अंकुशप्रमुखचिह्न वनिआये नूपुरजनुमणिवरकलहंसनिरचेनीडदै वाहुवसाये करिमेखलवरहारग्रीवदररुचिरवाहुभूषणपहिराये उरश्री वत्समनोहर हरिनखहेममध्यमणिगणवहुलाये सुभगचिवुकद्विज ऽधरनासिकाश्रवणकपोलमोहिऽपतिभाये भ्रूसुन्दरकरुणारसपूर णलोचनमनहुंयुगलजलजाये भालविशाललिलितलटकनवरवा॰ लदशाकेचिकुरसुहाये मनुद्वौगुरुशनिकुजऽागे करिशशिहिमिलनत मकेगणआये उपमाएकऽभूतभईतवजवजननीपटपीतउढाये नील जलदपरउडगणनिरखिततजिसुभावजनुतडितछपाये अंगअंगपर मारनिकरमिलिछविसमूहलैलैजनुछाये तुलसिदासरघुनाथरूपगुण तौकहौ जोविधिहोहिवनाये २६ रागकेदारा॥ रघुवरवालछविकहौंव रणि सकलसुखकीसींवकोटिमनोजशोभाहरणि रुचिरनूरकिंकिनी मनुहरतिरुनुझुनुकरणि वसीमानहुंचरणकमललनिऽपरुणतातजितर णि मञ्जुमेचकमृदुलतनुअनुहरतिभूषणभरणि मनहुंसुभगशिंगार शिशुतरुफल्योऽद्भुतफरणि भुजनिभुजगसरोजनयननिवदननिविधु जित्यौलरणि रहेकुहरनिसलिलनभउपमाऽपरद्विदिउरणि लसतक रप्रतिविम्बमणिऽागनघुटुरुवनिचरणि जलजसंपुरसुछविभरिभरिधर तिजनुउरधरणि पुण्यफलअनुभवतिसुतहिविलोकिदशरथघरणि वसति तुलसीहृदयप्रभुकिलकनिनटनिलरखरणि २७ नेकुविलोकि॰ धौंरघुवरणि चारिफलत्रिपुरारितोकोंदयेहैंनृपघरणि वालभूषण

बसनसुंदर रुचिर राज भररी। परस्पर खेलनि अजिर उठि चलनि गिरि गिरि
पररी। झुकनि झांकनि छांह सो किलकनि नटनि हठि लररी। तोतरी बोलनि
विलोकनि मोहनी मनुहररी। सखि बचन सुनि कोशिला लखि सुठर पारेट
ररी। लेति भरि भरि अङ्क सैंतति पैन जनु दुहु कररी। चरित निरखत विवुध तुल
सी ओटरदै जल धररी। चहत सुर सुरपति भयो सुरपति भयो चहै तररी॥
२८ राग जयतिश्री॥ भूमितल भूपके सोना॥ राम लखन रिपुदवन भरतश्री
सुनिरखत अति अनुराग वाल विभूषण लसत पाइ मृदु मंजुल अंग वि
भाग दशरथ सुकृत मनोहर विरवनि रूप करह जनु लाग राज मराल वि
लविराजत विहरत जेहर हृदय तडाग नेन प अजिर जानु पाणि धावन
धरणि चट कचलकाग सिद्ध सिहात सराहत मुनिगण कहै सुरकिन्नरना
ग है चरु विहंग विलोकियै वालक वसि पुर उपवन वाग परिजन सहित रा
य रानिन्ह कियो मज्जन प्रेम प्रयाग तुलसी फल चारयो ताके मणि मरकत पं
कजरज २९ राग असावरी॥ छगन मगन अंगन खेलत चारु चारो भाई
सानुज भरत लाल लखण राम लोने लोने लरिका लखि मुदित मात समुदा
ई बाल वसन भूषण धरें नखशिख छवि छाई नील पीत मनसिज सरसि
ज मंजुल मालनि मानो है देहनिते छविपाई ठुमुकु ठुमुकु पगधरणि न
टनि लरखरणि सुहाई भजनि मिलनि रूठनि टूठनि किलकनि अवलो
कनि बोलनि वरणि न जाई जननि सकल चहुं ओर आल वाल मणि
अंगनाई दशरथ सुकृत विवुध विरवा वलि सुतविलोकि जनु विधि वर
वारि वनाई हरि विरंचि हरहेरि राम प्रेम परवश नाई सुख समाज रघुरा
ज के वरणत विशुद्ध मन सुरनि सुमन झरि लाई सुमिरत श्रीरघुवीरय
की लीला लरिकाई तुलसिदास अनुराग अवधि आनन्द अनुभवतत
व को सो अजहु अघाई ३० राग विलावल॥ आंगन खेलै आनन्द कन्द
रविकुल कुमुद सुखद चहुं चन्द सानुज भरत लखण संग सोहै शिशु भू
षण भूषित मन मोहै तनु छवि मोर चंद जिमि झलकै मनहुं उमगि अंग अंग

दविछलकै कटिकिंकिनिपायेंजनिवाजें पंकजपाणि पहुंचिश्रांराजें कछु-
लाकरुठवघवनहानीके नयनसरोजमयनसरसीके लटकनलसनललाट
लटूरी दमकतहेदें दंतुरिश्रांरूरी मुनिमनहरतिमंजुमसिवुन्दा ल-
लितवदनवलिवालसुकुन्दा कुलही विचविचित्ररूगूली निरखहिं-
मातमुदितश्रतिफूली गहिमणिखंभनिडिग डिगडोलत कलवलवच
ननोतरेवोलत किलकनरुकिरुंकतप्रतिविम्बनि देतपरमसुख
पितु अरु अम्बनि ॥ सुमिरत सुखमाहियहुलसी है गावतप्रेमपु-
लकितुलसी है ॥३१॥ रागकाह्नरा ॥ ललितसुनहिलाललिसचुपा
यें कोणिश्याकलकनकश्रजिरमहिसिखवतिचलन अंगुरि श्रांला
यें ॥ कटिकिंकिनी पैंजनी पायनि वाजतिरुनुरुनि मधुरेगायें पहु-
चीकरनि कंठकठुला वन्यो केहरिनखमणिजरितजरायें पीनसुची
रवि चित्ररुंगुलियासोहतिश्यामशरीरसुहायें दतिश्रां दैदै मनोहर
सुख छविश्ररुणश्रधरचितलेतचोरायें ॥ चिबुककपोलनासिका
सुन्दर भालतिलक मसिविन्दुवनायें ॥ राजतनयन मञ्जुन युतखञ्ज
नकञ्जमीन मद नायें लटकनिचारुभृकुटिश्रां टेढी मेढी सुभगसुदे
हसुभायें किलकिकिलकिनाचनचुटकी सुनिदुरपतजननिपाणि
कुटुकायें गिरत घुटुरुवनिटेकिउठि श्रनुजनि तोतरिवोलत पूदे
खायें वालकेलि श्रव लोकिमात सव मुदितमगन श्रानंद श्रनभाये
देखतनभघन श्रोटचरितमुनि योगसमाधिविरति विसराये तुल
सिदासजेरसिकनयेहिरसतेनरजनजडजीवतजगजाये ॥३२॥ रागल
लित ॥ छोटी छोटी गोडिश्रां श्रंगुरिश्रां छवीली छोटीनखजोति-
मोती मानो कमल दलनिपर ललित श्रांगनखेलैं ठुमुकुठुमुकुचलें
रुनुरुनुपायपैंजनी मृदु सुखर किङ्किनीकलित कटि हार करलजदि
मंजु कर कंजनि पहुंचिश्रां रुचिरतर पियरीदीनीरुशुली सांवरे
शरीरखुली वालकदामिनि श्रोढिमानो वारे वारिधर उरवघ नहा

ट कण्ठ कठुला मूंडले केशनें ठील स्टकनमसिविन्दु मुनिम्नुह
र अञ्जनरञ्जितनयनाचित चोरे चितवनि मुखशोभापर वोरअ
मित असमशर चुटुकी बजावतिनचावति कौशल्यामाता वालके
लिगावति मल्हावति प्रेमसर किलकि किलकि हसें द्वैदेंतुरि
यां लसें तुलसी के मनवसें तोतरे वचनवर ३३ सादर सुमुखि विलो
कि राम शिशु रूप अनूप लिये कनियां ॥ सुंदर श्याम सरोज वरणत
नसब अंग सकल सुखदनियां ॥ अरुण चरण नखज्योति जगमग
गति रुनुझुनु करति पाय पैंजनियां ॥ कनकरत्न मणि जटित रटि
त कटि किङ्किनि कलित पीत षटतनियां ॥ पहुंची करनि पदि
क हरिनख उर कठुला कण्ठ मंजु जगमणियां ॥ रुचिर चिवुक
रद अधर मनोहर ललित नासिका लसति नथुनियां ॥ विकर भृकु
टि सुखमानिधि आनन कलक कपोल कान निनगफनियां ॥
भाल तिलक मसि विन्दु विराजत सोहति शीश लाल चौतनियां ॥
मन मोहनी तोतरी वोलनि मुनि मन हरणि चो हसनि किलकि
नियां ॥ वालसुभाय विलोल विलोचन चोरति चितहि चारु चितवनि
यां ॥ सुनि कुल वधू रोखनि झांकति राम चन्द्र छवि चन्द्र वदनियां
तुलसिदास प्रभु देखि मगन भई प्रेम विवश कछु सुदिधिन अपानयां
३४ ॥ रागविलावल ॥ सोहत सहज सुहाये नयन ॥ खञ्जन मीन
कमल सकुचत तव जव उपमा चाहत कवि दयन ॥ सुंदर सव अङ्ग
नि शिशु भूषण राजत जनु शोभाये लयन ॥ वडो लाभ लोभवश र
हिगये लखि सुखमा बहु मयन ॥ भोर भूप लिये गोद मोद भरे निरखि
त वदन सुनत कलवयन वालक रूप अनूप राम छवि निवसति तुल
सिदास उर अयन ३५ ॥ रागविभास ॥ भोर भये जागहु रघुनंद
न ॥ गत वालीक भक्तन उर चन्दन शशि कर हीन सीन दिति तारे ॥
तम तुर मुखर सुनहु मेरे प्यारे निक सित कञ्ज कुमुद विलखाने

लै परागरस मधुप उडाने अनुज सखा रावबोलन आये बन्दिन अति पुनीत गुण गाये मनभावनो कलेवो कीजे तुलसिदास कहुं जूठनदीजे ३६ प्रात भयो तात वलमात विधुवदन पर मदनवारों कोटि उठो प्राणप्या रे मूल मागध वन्दी वदतविनुदावली द्वार शिशु अनुजप्रियतमति हारे कोक गतशोक अवलोकि शशि हीन छवि अरुण भये गगन कर रुचिर भरतारे मनहुं रवि बाल मृगराजन मनिकर करिदलिन अनि ललिन मणिगण विथारे सुनहुं तमचुर मुखर कीर कलहंस पिक के करवकलित वोलत विहंग बारे मनहुं मुनि वृन्द रघुवंशमणि रवरे गुण आश्रम निवस परिवारे सरनि विकशित कञ्जपुञ्ज मकर न्द वर मञ्जुलतर मधुकर गुंजारे मनहुं प्रभु जन्म सुनि वयन अमर वती इन्दिरा नन्दि मन्दिर संवारे प्रेम सम्मिलत वर वचन रचना अक निराम राजीवलोचन उघारे दास तुलसी मुदित जननि करे आरती सहज सुंदर अजिर पाउधारे ३७ जागिये कृपानिधान जान रायरामचं द्र जननी कहै बार बार भोर भयो प्यारे राजिवलोचन विशाल प्रीति वापिका मराल ललित वदन उपर मदन कोटि वारिडारे अरुण उदि तदिगत सर्बरी शशांक किरन हीन दीन दीपक जोति मलिन हिति समूह नारे मनहुं ज्ञान घन प्रकाश वीते सब भवविलास आस त्रास तिमिर तोष तरणि तेज जारे बोलत खग निकर मुखर मधुर कर प्रती नि सुनहु श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम बारे मनहुं वेद वन्दी मुनि वृन्द सूत मागधादि विरुद वदन जय जय जय जति कैटभारे विकसित कमलावली चले प्रपुञ्ज चञ्चरीक गुञ्जत कल कोमल धुनि त्यागि क ञ्ज न्यारे जनु विराग पाइ सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुण निहा हारे सुनत वचप्रियरसाल जागे अतिसय दया ल भागे जंजाल विपुल दुख कन्द म्वनटारे तुलसिदास अति अनं द देखिकै मुखार विन्द छूटे भ्रमफन्द परम मंद द्वन्द भारे ३८ बोलत स

वनियकुमार ठाढे नृपभवन द्वार रूप शील गुण उदार जागहु मेरे प्यारे ॥ विलषित कुमुदिनि चकोर चक वाक हर्ष भोर करत सोर तमचुर खग गुञ्जत अलि न्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन करि भूषण सजि सकल अंग संग अनुज बालक सब विविधि विधि सवारे ॥ करतल गहि ललित चाप भंजन रिपु निकर दाप कटि तट पट पीन तूण सायक अनि आरे ॥ उपवन मृगया विहार कारण गवने कृपाल जननी मुख निरखि पुण्य पुञ्ज निज विचारे ॥ तुलसिदास संग लीजे जानि दीन अभै कीजे दीजे मति विमल गावें चरित वृति हारे ॥ ३९ ॥ रागनट ॥ खेलन चलिये आनंद कन्द ॥ सखा प्रिय नृप द्वार ठाढे विपुल बालक वृन्द नृषित तुम्हरे दरश कारण चतुर चातक दास ॥ वपुष वारिद वर्षि छवि जल हरहु लोचन प्यास ॥ बन्धु वचन विनीत सुनि उठे मनहु केहरि बाल ललित लघु सर चाप कर उर नयन बाहु विशाल चलन पद प्रति विम्ब राजत अजिर सुखमा पुञ्ज ॥ प्रेमवस प्रति चरण महि मनो देति आसन कञ्ज ॥ निरखि परम विचित्र शोभा चकित चितवहिं मात ॥ हर्ष विवस न जात कहि निज भवन विहरहु तात ॥ देषि तुलसीदास प्रभु छवि विहि सब पल रोकि ॥ थकित निकर चकोर मानहु सरद इन्दु विलोकि ४० विहरत अवध वीथिन राम ॥ सङ्ग अनुज अनेक शिशु नव नील नीरद श्याम ॥ तरुण अरुण सरोज पद बनि कनक मय पद त्राण ॥ पीन पट कटि तूण वर कर ललित लघु धनु वाण ॥ लोचननि को लेत फल छवि निरखि पुर नर नारि ॥ वसत तुलसीदास उर अवधेश के सुत चारि ॥ ४१ ॥ रागनट ॥ करतल शोहत वान धनुहियां खेलत फिरत कनक आंगन पैपायन्द लाल चनहियां ॥ दशरथ कुसुद इन्दु चिंतामनि प्रगटे भूतल महियां ॥ हारि दरवन मोह तम नाशन सुखदायक महि महियां ॥ जो सुख तिहूं लोक मे नाही सो पै यन प्रभु पहियां ॥ तुलसी जन्म मरण भक्तन को नेरु वार तदैव हियां ॥ ४२

जैसे राम ललित तैसे लोने लखण लाल ॥ तैसेई भरत शील सुख मास नेह विधि तैसेई सुभग सङ्ग सत्रुसाल धरे धनुसर करकसे कटि तर कशि पीरे पट ओरें चले चारु चाल अंग अंग भूषण जरायके जगमग। तहरत जनके जी केति मिस्जाल ॥ खेलत चौहट घाट बीथी बाटिका। नि प्रभु शिवसु प्रेम मानस मराल ॥ सोभादान दैदै सन मानतया चक जानि करत लोक लोचन निहाल ॥ रावण दुरित दुख दले सुर कहैं। आजु अवध सकल सुखके सुकाल ॥ तुलसी सराहैं सिद्ध सुकृत कौश ल्या जूके जैसे भूरिभाग भाजन भुआल ४३ राग ललित ॥ ललित ललित लघु लघु धनुसरक रतैं सीर कशि कटि के से पट पियरे ॥ ल लित पनही पाय पैजनी की झिंमिधुनि सुनि सुख लहे मनरहे नितनियरे पहुंची अंग रचा उ हृदय पदिकहा रु कुण्डल तिलक छवि गडी कलिजि परे ॥ शिर टेढी पागें लाल नीरज नयन विशाल सुन्दर वदन ठाढ़ सु सुभग सकल अंग ॥ अनुज बालक संग देखे नर नारि रहे ज्यों कुरङ्ग दियरे ॥ खेलत अवध खोरि गोला भौंरा चकडोरी मूरति मधुर बसे तुलसीके हियरे ४४ छोटिये धनुहियां पनहियां पगनि छोटी छोटिये कछौटी कटि छोटियेन रकशी ॥ लसत झंगुली झीनी दामिनी की छविछीनी सुन्दर वद शिर पगिया जरकशी ॥ दय अनुहरत वि भूषण विचित्र अङ्ग जोहे जिय आवति सनेह की सरकशी ॥ मूरति की सूरति कही न परे तुलसी पैं जानै सोइ जाके उर कसे के करकशी ४५ ॥ रागटोडी ॥ राम लषण एक ओर भरत रिपुदवन लाल एक ओर भ ये ॥ सरजु तीर सम सुभग भूमितल गणि गुणि गोइयां बांटि लयें ॥ कन्दुक केलि कुशल हय चढि चढि मन कसि कसि ठोकि ठोकि खये ॥ करक मलन विचित्र चौगानै खेलन गये खेल रिझये ॥ व्योमविमानन विबुध बिलोकत खेलक पेषक छांह छये ॥ सहित समाज सराहि दशरथ ही बर्षत निजतरु कुसुम चये ॥ एक लेंवढत येक फेरत सब प्रेमपमे

रवि नीर भये येक कहत भइ है रा राम जूकी एक कहत भैया भरत ज
ये प्रभु बकु सत गज वाजि बसन मणि जय धुनि गगन निशान हये पाइ
सखा सेवक याचक भरि जीवन दूसर द्वार गये नभ पुर परति निछावर
जहं तहं सुर सिर निवर दान हये भूरि भाग अनुराग उमगि ले गाव।
तसुनन चरित नितये हारे हर्ष होन हिय भरत हि जीते सकुचि शिरन।
यन नये तुलसी सुमिरि सुभाय शील गुण सुकृती जोये हि रंग रये ५६ खे
लि खेलि सुखेलन हारे उतरि उतरि चुचुकारि तुरंग निसादर जाइ जो
हारे बंधु सखा सेवक सराहि सन मानि सनेह सम्भारे दिये बसन गज।
वाजि साजि शुभ साज सुभाँति सवारे मुदित नयन फल पाइ गाइ।
गुण सुर सान न्द सिधारे सहित समाज राज मंदिर कहुं राम राय पगु
धारे भूप भवन घर घर घमाइ कल्याण को लाह सम्भारे २ निरीषि हर्षि।
आरती निछावरि करत शरीर बिसारे २ नितये सङ्गल मोद अव धसव
विधि सब लोग सुखारे २ तुलसी तिन समते तिन के ग्रभु ते प्रभु चो रित
पयारे ५७ राग सारङ्ग॥ रक्षत महामुनि याग जके २ नीच निशाचर देत दुस
ह दुख कृशतनु तापतयो २ आप जापन यमि हर तबसत सवते वय हमंच
हयो २ विप्र साधु सुर धेनु धरणि हित हरि अवतार लयो २ सुमिरत श्री सारं
ङ्ग पाणि छन में सब सोच गयो २ चले मुदित कौशिक कोशल पुर शगुन नि।
साय हयो २ करत मनोरथ जात पुलकि प्रगटत आनन्द नयो २ तुलसी
प्रभु अनुराग उमगि मङ्गल मूल भयो ५८ आजु सकल सुकृत फल।
पाइहौं २ सुख की सींव अवधि आनंद की अवधि विलोकि हौं
जाइहौं २ सुतनि सहित दशरथ हिं देखिहौं प्रेम पुलक उर लाइहौं
२ राम चंद्र मुख चंद्र सुधा नैन चकोर निप्यास हौं २ सादर समा
चार नृप बूझि हैं हौं सब कथा सुनाइहौं २ तुलसी है कृत रत्य आश्रम हिं
राम लखन लै आइ हौं २ ५६ राग नट देखि मुनि सबके पद आजु भ
यो प्रथम गणतीमें अब तें जहं लौं साधु समाजु २ चरण बन्दि कर जो

रिनिहोरत कहिप कृपा करि कालु ॥ मेरे कछु न भदे रामबिनु देह गेह स-
बराजु ॥ भली कही तुम्ह सों त्रिभुवन मे को सुकृती गिरताजु ॥ तुलसीरा
मजन्महि ते जनियत सकल सुकृत को साजु ॥ ५० ॥ राजनराम लखण.
जो दीजे ॥ यशरावरो लाभ ढोट निहूं मुनि सनाथ सब कीजे ॥ डर पनहों.
सांचेहु सनेहबश सुत प्रभाव बिमु जाने ॥ बूझिये बामदेव अरु कुल
गुरु तुम पुनि परम सयाने ॥ रिपु रण दलि मखरखि कुशल अति अ-
लप दिननि घर ऐहैं ॥ तुलसिदास रघुवंशतिलक को कविकल की
रति गैहें ५१ ॥ रहे ठगी से नृपति सुनि मुनिवर के वचन ॥ कहि न शकत
कछु राम प्रेम बश पुलक गात भरे नयन गुरु बसिष्ट समुझाइ कह्यो
तबहि यह षति जाने शेषशयन ॥ सौंपे सुत गहि पाणि पाय परि भू-
सुर उर चले उमगि चपन ॥ तुलसी प्रभु जोहत पोहत चित सोहत मोह-
त कोटि भपन ॥ मधु माधव मूरति दोऊ सङ्ग मानो दिन मणि गमन कि
पो उत्तर अपन ५२ ॥ राग सारङ्ग ॥ ऋषि संग हर्षि चले दोऊ भाई ॥ पि
तु पद वन्दि शीश लियो आयसु सुनि सिष आशिष पाई ॥ नील पीत पा
थोज बरण वपु बय किशोर बनि आई ॥ सर धनु पाणि पीत पट कटि
तट कसे निखंग बनाई ॥ कलित कण्ठ मणि माल कलेवर चन्दन
खौरि सुहाई ॥ सुंदर बदन सरोरुह लोचन सुखद विवरणि न जाई प
ल्लव पञ्ख सुमन शिर सोहत क्यों कहो वेष लोनाई ॥ मनो मूरति धरि.
उभय भाग भई त्रिभुवन सुंदरताई ॥ पैठत सरनि शिलनि चढि चित
वत खग मृग बन रुचिराई ॥ सादर सभय सप्रेम पुलकि मुनि सुनि पु-
नि लेन बुलाई ॥ एक तीर तकि हती ताडका विद्या विप्र पढाई ॥ राखोप
ज्ञ जौ निरजनीचर भै जग विदित बडाई ॥ चरण कमल रज परसि अ
हिल्या निज पति लोक सिधाई ॥ तुलसिदास प्रभु के बूझे मुनि सुरस
रि कथा सुनाई ॥ ५३ ॥ राग नट ॥ दोउ राजसुअन राजत मुनि के संग ॥ नख
शिख लोने वदन लोचन दामिनि वारिद वरण अंग

आर नि ....

शिखा सुहाई उपवीत पट धनु शर कर कसें कटि निखंग ॥ मानो मखरु
जनि शिचर हरिवे को सुत पावक के साथ पठयो पतंग ॥ करत छांह घ
न वर्षे सुर सुमन छवि वरणत अतुलित अनंग ॥ तुलसी प्रभु विलो
कि मग लोग खग मृग प्रेम मगन रंगे रूप रंग ॥ ५४ ॥ राग कल्याण ॥ मुनि
के संग विराजत वीर ॥ काक पक्ष धर कर कोदण्ड सर सुभग पीत पट क
टि तूणीर ॥ वदन इन्दु अम्भोरुह लोचन श्याम गौर शोभा सदन शरी
र ॥ पुलकत ऋषि अवलोकि अमित छवि उर न समाति प्रेम की भीर ॥
खेलत चलत करत मग कौतुक विलमत सरित सरोवर तीर तोरत लता सुमन
सरसीरुह पियत सुधासम शीतल नीर ॥ बैठत विमल शिलनि विटपनि त
र पुनि पुनि वरणत छांह समीर ॥ देखत नटत केकि कल गावत मधुप म
राल कोकिला कीर ॥ नयननि को फल लेत निरखि खग मृग सुरभी व्रजव
धू अहीर ॥ तुलसी प्रभुहिं देत सब आसन निज निज मन मृदु कमल कु
टीर ॥ ५५ ॥ राग कान्हरा ॥ सोहत मग मुनि संग दोउ भाई तरुण तमाल चा
रु चंपक छवि कवि सुभाय कहि जाई ॥ भूषण वसन अनुहरत अंगनि
उमगति सुन्दरताई ॥ वदन मनोज सरोज लोचन निरषि लोभाई ले
ताई ॥ अंसनि धनु शर कर कमलनि कटि कसे निखंग वनाई ॥ सकल
भुवन शोभा सर्वस लघु लागत निरखि निकाई ॥ महि मृदु पथ घन छांह
सुमन सुर वर्षि पवन सुखदाई ॥ जल थल रुह फल फूल सलिल सब क
रत प्रेम पहुनाई ॥ सकुच सभीत विनीत साथ गुरु बोलनि चलनि
हाई ॥ खग मृग सुभग विचित्र विलोकत विच विच लसति ललित ल
रिकाई ॥ विद्या दई जानि विद्यानिधि विद्यहु लही बडाई ॥ ख्याल दली
ताडका देखि मुनि देत अशीश अघाई ॥ बूझत प्रभु सुरसरि प्रसंग क
हि निज कुल कथा सुनाई ॥ गाधि सुवन सनेह सुख सम्पति उर आश्रम
न समाई ॥ वन वासी वटु जती योगिजन साधु सिद्ध समुदाई ॥ पूजत पे
खि प्रीति पुलकि तन नयन लाभ लुटि पाई ॥ मख राखो खल दल दलि

जव लवा जन विवुध वधाई ॥ निज प्रत चरित सहित तुलसी विन वसत ल
षण रघुराई ॥ ५६ ॥ मंजुल मङ्गल मयन पटोटा ॥ मुनि मुनि तिय मुनि
शिसु विलोकि कहै मधुर मनोहर जोटा ॥ नाम रूप अनुरूप वेष वय
राम लषण लाल लोने ॥ इनने लहि जनु घन दामिनि द्विति मनसिज
मर कत सोने ॥ चरण सरोज पीत पट कटि तट तूणनीर धनु धारी के
हरि कंध काम करि कर वर विपुल वाहु वल भारी ॥ भूषण रहित सम
प सम भूषण पाई सु अङ्ग निसोहै नव राजीव नयन पूरण विधु वद
न मदन मन मोहै ॥ शिर निम्र षण्ड सुमन दल मण्डन वाल सुभाय व
नाये ॥ केलि अङ्ग तनु रेनु पंकज जनु प्रगटत चरित चोराये ॥ मख रासि
वे लागि दशरथ सों मांगि आश्रम महिं आने ॥ प्रेम पूजि पाहुने प्राण
प्रिय गाधि सुअन सन माने ॥ साधन फल साधक सिद्ध निके लोचन फ
ल सव ही के ॥ सकल सुकृत फल मान पिनाके जीवन धन तुलसी के
५७ ॥ राग सुहव ॥ राम पद पद्म पराग परी ऋषि तिय तुरत त्यागि
पाहन तनु छवि मय देह धरी ॥ प्रवल पाप पति शाप दुसह दव दारु
ण जरनि जरी सींचि कृपा जल विवध वेलि ज्यों फिरि सुख फर निफ
री ॥ निगम अगम मूरति महेश मति युवति वराइ वरी ॥ सोई मूरति
जानो नयन पथ एक टक ते न टरी ॥ वरणति हृदय सरूप शील गु
ण प्रेम प्रमोद भरी ॥ तुलसी ऐसे केहि आरत की आरति प्रभु न ह
री ५८ परत पद पंकज रज कर विरवनी ॥ भई प्रगट अति दिव्य देह धरि
मानो त्रिभुवन छवि छवनी ॥ देषि वडो आचार्य्य पुलकित नु कहति
मुदित है सुनि भवनी ॥ जो चलिहैं रघुनाथ पया देहि शिला नहीं
रहिहै अवनी ॥ परसि जे पाय पुनीत शंभु शिर सोह तीन पथ गव
नी ॥ तुलसिदास तेहि चरण की महिमा कहम निकवनी ॥ ५९ ॥ भू
रि भारा भाजन भई ॥ रूप राशि अवलोकि वन्धु द्वौ प्रेम सुरंग रई ॥ क
हा कहौं केहि भांति सराहै नहि करतूति नई ॥ विनु कारण करुणा कर

रघु वर केहि केहि गति न दई ॥ करि बहु विनय राखि उर मूरति मङ्ग
लमोद मई ॥ तुलसी है विशोक पवि सो कहि प्रभु गुण गनति गई ॥
६० ॥ राग काह्नरा ॥ ए कौशिक मख के रखवारे नाम राम अरु लख
खन ललित अति दशरथ राय दुलारे मेचक पीत कमल कोमल
कल काकपक्ष धर वारे ॥ शोभा सकल सकेलि मदन विधि सुकर स
सेमीसें वारे ॥ सहस समूह सुबाहु सरिस खल समर शूल भट भारे
केलि तूण धनु बाण पाणि रण निदरि निशाचर मारे ॥ ऋषि नृप
नारि स्वयम्बर पेखन जनक नगर पगु धारे मग नर नारि निहारत स
दर कहि बड भाग हमारे ॥ तुलसी सुनत एक एक नि सों चलत
विलोकनि हारे ॥ एकनि वचन लाहु मानो अधनि लहे विलोचन
तारे ॥ ६१ ॥ राग टोडी ॥ आए सुनि कौशिक जनक हरषने हैं बोलि गु
रु भूसुर समाज सों मिलन चले जानि बडे भाग अनुराग अकुलाने हैं
नाइ शीश पगनि असीस पाइ प्रमुदित पावडे अरघ देत आदर सों आ
ने हैं ॥ असन वसन वास के सुपास सब विधि पूजि प्रिय पाहुने सुभाय सन
माने हैं ॥ विनय बडाई करि पाई हु परस्पर करत पुलकि प्रेम आनन्द
अघाने हैं ॥ देखे राम लखन निमेषें बिथकित भई प्राणहूं ते प्यारे लागे बि
नु पहिचाने हैं ॥ ब्रह्मानन्द हृदय दरश सुख लोयननि अनुभव उभय सरस
राम जाने हैं ॥ तुलसी विदेह की सनेह की दशा सुमिरि मेरे मन माने राउ नि
पट सयाने हैं ॥ ६२ ॥ राग मल्लार ॥ कोशल राय के कुअँर ढोटा ॥ राजत
रुचिर जनक पुर पैठत श्याम गौर नीको जोटा ॥ चौतनि शिरनि कनक क
लि कानि नि कटि पट पीत सुहाये ॥ उर मणि माल विशाल विलोचन सी
य स्वयम्बर आये ॥ बरणि न जात मनहिं मन भावत सुभग अवहिं ब
योरी ॥ भई है मगन विधु वदन विलोकन वनिता चतुरि चकोरी ॥
कहं शिव चाप लरिक वन बूझत विहंसि चितै तिरछौहें ॥ तुलसी गलि
न भीर दरशन लगि लोग अटनि अवरोहें ॥ ६३ ॥ अवधेश के सुत दोऊ अ

दि मंदिरन विलोकत सारं ई जनकनगर सब कोऊ ॥ श्यामगौरसुन्दर किशोर तनु तूण वाण धनु धारी ॥ कटिपपीत कण्ठ मुक्तामणि भुजविशाल बलभारी ॥ मुखमयंक सरसीरुह लोचन तिलक भाल टेढी भौंहें ॥ कलकुण्डल चौतनी चारु अति चलत मत्तगजगौहें ॥ विश्वामित्र हेतु पठये नृप इनहिं ताडिका मारी ॥ मख राख्यो रिपु जीति जान जगमग मुनिवधू उधारी पियपाहुने जानि नर नारि न नयन निमेष न दये ॥ तुलसिदास प्रभु देखि लोग सब जनक समा भय ॥ ४ ॥ रागटोडी ॥ बूझत जनक नाथ ढोठा दोऊ काके हैं तरुण तमाल चारु चंपक वरण तनु कौन बडे भागी के सुकृत परिपीके हैं ॥ सुखके निधान पाये हियके विधान लापे ठग केसे लाडू खाये प्रेम मधु छाके हैं स्वारथ रहित परमारथी कहावत हैं भे सनेह विवश विदेहता विवाके हैं ॥ शील सुधाके अगार सुखमाके पारावार पावत न परि पारि पैरि थाके हैं ॥ लोचन ललकि लागे मन अति अनुरागे एक रस रूप चित सकल सभाके हैं ॥ जिय जिय जोरत सगाई राम लक्ष्मण सो आपने आपने भाय जैसे भाप जाके हैं ॥ प्रीतिको प्रतीतिको सुरिवे को सेई वे को शरणको राम रघु तुलसि हू ताके हैं ॥ ६५ ॥ रागमलार ॥ ए कौन कहांते आये ॥ नील पीत पथोज वरण मनहरण सुभाय सुहाये मुनिसुत किधौं भूप कुंअर किधौं ब्रह्म जीव जग जाये रूप जलधि के रत्न सुछवि तिय लोचन ललित ललाये किधौं रवि सुअन मदन ऋतुपति किधौं हरि हर भेष बनाये किधौं आपने सुकृत सुरतरु के सुफल रावरे हि पाये भये विदेह नेह वश देह दशा विसराये पुलक गात न समात हर्ष हिय सलिल सुलोचन छाये ॥ जनक वचन मृदु मञ्जु मधुर भरे भक्ति कौशिक हि भाये ॥ तुलसी अति आनन्द उमगि उर राम लक्ष्मण गुण गाये ६६ ॥ कौशिक कृपालु हू को पुलकि तन तनु भो उमगन अनुराग सभा के सराहे भाग देखि दशा जनक की कहि

वेकोमनुभो॥ प्रीतिकेनपातकीदियेहुं शापपायवडोमखमिसमेरो
नव अवधमवनुभो॥ प्राणहुंतेप्यारेसुतमांगेदियेदशरथसत्यसिन्धु
शोचसहेमूनोसोमवनुभो॥ काकशिषाशिरकरकेलितूणधनुशर
वालकविनोदजातुधाननिसोरगुभो॥ वृत्तविदेह अनुराग आ
चरजवशरजविराजपागभयोमहाराजअनुभो॥ भूमिदेवनरदेव
सचिवपरसपरकहतहमहिसुरतरुशिवधनुमो॥ सुनतराजाकीरी
तिउपजीप्रतीतिप्रीतिभागतुलसीकेभलेसाहवकोजनुभो॥६॥
चारयौभलेवेटादेवदशरथरायकेपूजेसेरामलक्षणभरतरिपु
हणतसेशीलशोभासागरप्रभाकरप्रभायकेताडकासंहारिमखरखे
नीकेपालेव्रतकोटिकोटिभटिकियेएकएकधायके॥ एकवाण
वेगहीउडानेजातुधानजानसूखिगयेगानहैपतोआभयेवायके
शिलाछोरुछुअतअहल्याभईदिव्यदेहगुणपेषेपारसकेपंकरुह
पायके॥ रामकेप्रसादगुरुगोतमखसभयेरावरेहुसतानन्दपूतभयेम
यके॥ प्रेमपरिहासपोषेवचनपरसरकहतसुनतसुखसवहीसुभा
यके॥ तुलसीसराहेभागकोशिकजनकजूकेविधिकेसुढरहोतसुढ
रसुदायके॥ ईश्वरदोऊदशरथकेवारे॥ नामरामघनश्यामलख
णलघुनखशिख अंगउजियारे॥ निजहितलागिमागिआनेमैध
र्मसनरखवारे॥ धीरवीरविरुदैतवांकुरेमहावाहुवलभारे॥ एक
तीरतकिहतीताडिकाकियेसुसाधुसुखारे॥ यज्ञराखिजगसाखि
तोषिऋषिनिदरिनिशाचरमारे॥ मुनितियतारिस्वयम्बरपेषन
आयसुनिवचनतिहारे॥ पेठदेखिहैंपिनाकुनेकुजेहिनृपविला
जजरजारेसुनिसानंदसराहिसपरिजनवारहिवारनिहारे॥ पूजि
सप्रेमशशिकौशिकहिंभूपतिसदनसिधारे॥ शोचतसत्यसनेहवि
वशनिशिनृपहिगनतगइतारे॥ पठयेवोलिभारगुरुकेसंगरङ्कभू
मिपगुधारे॥ नगरलोगसुधिपाइमुदितसवसवहीकाजविसारे॥ म

मनहुं मघा जल उमगि उदधि रुख चले नदीनद नारे ॥ ये किसोर धनु·
घोर बहुत बिलखात बिलोकनिहारे ॥ टरौ न चाप तिन्हहि ने जिन्ह सुभट
न कौतुक कुधर उखारे ॥ ये जाने बिन जनक जानियत करि प्रण भूप·
हंकारे ॥ नतरु सुधासागर परिहर कत कूप खनावत खारे ॥ सुखमा
सील सनेह सानि मानो रूप बिरंचि संवारे ॥ रोम रोम पर सोम काम श
त कोटि वारि फेरि डारे ॥ कोउ कहै तेज प्रताप पुंज चितये नहि जा·
त निहारे ॥ संभु सरासन सैल अजर गो दिनकर वंस दियारे ॥ एक
कहै कछु होइ सुफल भए जीवन जन्म हमारे ॥ अवलोके भरि नयन·
आजु हम तुलसी प्राण पियारे ॥ ६६ ॥ जनक बिलोकि बार बार रघुवर
को ॥ मुनि पद सीस नाय आयसु असीस पाइ राई बामें कहत गवनु कि
यो घर को ॥ नीद न परति राति प्रेम परा एक भांति सोचत सकोच न बिरंचि
हरि हर को ॥ तुम तें सुगम सब देव देखिबे को अपजस हम किपो जोग व
युग पर को ॥ ल्यापो सङ्ग· कौसिक सुनापे कहि गुण गण आपे देखि
दिनकर कुल दिनकर को ॥ तुलसी तजै सनेह को सुभाउ बाउ मानो च·
लदल को सो पात चरै चित नर को ॥ ६७ ॥ राग केदारा ॥ रङ्ग· भूमि भोरही
आइ कै राम लखण लखि लोग लूटि हैं लोचन लाभ अघाइ कै ॥ भू
प भवन घर घर पुर बाहर इहै चर्चा रह छाइ कै ॥ मगन मनोरथ मोद ना
रि नर प्रेम बिवस उठे गाइ कै ॥ सोचत बिधि गति समुझि परसपर कहत बच
न बिलखाइ कै ॥ कुंअर किसोर कठोर सरासन असमंजस भये आइ
कै ॥ सुकृत संभारि मनाइ पितर सुर सीस ईस पद नाइ कै ॥ रघुवर क
र धनु भङ्ग· चहत सब अपनो सो हित चित लाइ कै ॥ लुनि अनुकूल मुनि
न मन मानहु धरत धीर जांड धाइ कै ॥ कौसिक कु वारक एक न सो कह
न प्रयान जनाइ कै ॥ सीय राम संयोग जानियत रच्यो बिरंचि बनाइ कै ॥ मा·
नस ताहि सवाहि मयन बर बाहु उछाहु बढाइ कै ॥ सानुज राज समाज·
बिराजत काम पिनाक नवदाइ कै ॥ बडी सभा लखो लघु बडेपन तुरो

वराई पाइकै ॥ कोमो हिहै और कोलाम करघुनायकहि बिहाइकै ॥ गव निहैं गवहिंगवाइगवें गइ नृप कुलवलहि लजाइकै ॥ करि खारथमा न का भजन क कोहमरएहितससुदा ट्रक ॥ भली भांत साहिव तुलसी घा लिहै व्याहवजाइकै ॥ ७१ ॥ रागटोडी ॥ भोर फूलवी निवे कों गये फुलवा ई ॥ शीश निटे पारो उपवीतपीतपट करि दोना वामकर निस्रलेनि भेस पाइहैं ॥ रूपके अगार भूपके कुमार सुक मार गुरु के सुठि प्राणाधारसं गसेवकाईहै ॥ नीचज्यौं टहलकरें रुखराखै अनुसरैं कोपिकसे को हीनन किये दुहुं भाईहैं ॥ सखिन सहिततेहि औसर संयोगवि धिगौरि जापूजिवे को जानकीजू आईहैं ॥ निरखेल सरणराम जाने रुतुपति कामसोहिमानो मदनमोहनी भूकजाईहै ॥ राघोजू औजान की लोचननि लिवेको मोदकहिवे को यागन मैवातेसी वनाई हैं ॥ सामीसिपसखिन लसरणतुलसी कौनेसोनै सोमन भयोजा कीजैसि भै सगाई हैं ॥ ७२ ॥ पूजिपार्वती भले भाय पाय परि कै ॥ सजलसुलोचनासिथिलतनपुलकित आवे नवचनमनरह्यो प्रेम भरिकै ॥ अन्तरजामिनि भवभामिनिखामि निसों कही चहौं वातमात अन्तनोहि लरिकै ॥ मूरति कृपाल मंजुमा लदेवोलनि भई पूजो मन कामना भावतोवर वरिकै ॥ राम्कापूल हपाइवेलि ज्योंवोडी वनाइ मागकोपितापिफैलफूलकरिकै ॥ लहिायी कहोंगी तव साची कही अम्बसियगहेपाइहै उठाइमायेहाथधरिकैं ॥ मु दित अासीससुनिसीसनाइपुनिपुनि विदाभईदेवीसों जननिडरखरिकै ॥ हर षिसहेलीभयोभावतोगावतगीतगवनी भवनतुलसीसहियोहरिकै ॥ ७३ ॥ ऊरूभूमि पायेदसरथकिशोरहें फेपतीलोसेपेषनचले हैंपुरनेरनारिवा रवूढे अंधपंगुकरतनिहोरहैं ॥ नीलपीतनीरजकनकमरकतघनदामि नावरणवनाएकेनिचोरहें ॥ पहूजतवानेरमल्लकपालसिनना मजेस सुजेनेसदेकं भरगिन्नोरहें ॥ तणासरोजचाहअंगजाजानुवन्ददेकेपर वशगलवाहवज्यसज्ञोरेहैं ॥ नीकेकैनिवगकरोकरकनलनलसेवारा

शिखासनमनोहरकठोरहैं॥ काननकनकफूलउपवीतअनुकूल पिअरेदुकूविलसनआछे छोर हैं राजिवनयनविधुवदनटेपारे शिर नखशिखअंगनठगोरहैं सभासरवरलोककोकनदकोकगण प्रमुदितमनदेखिदिनमणिभोरहैं॥ अवुधअसैलेमैलेमहिपा लभयेकछुकउलूककछु कुमुद चकोरहैं भाईसों कहतवातकौशि कहिसकुचातवोलघनघोरसेवोलतथोरथोरहैं॥ सनमुखसवहिं विलोकतसवहिनीकेकृपासोंहेरतहंसितुलसीकीओरहें ७४ ययेईरा मलखराजेमुनिसंगआयेहैं॥ चौतनीचोलनिकाछेसखासोहैंआगे पाछेआछेहूंतेआछेआछेभायभायेहैं सांवरगोरेशरीरमहावाहुभहा वीरकटितूणतीरधरधनुषसोहायेहैं॥ देखतकोमलकलअतुल विपुलवलकौशिककोदंडकलाकलितशिखायेहैं इनहींताडिका मारीगौतमकीतियतारीभारीभारीभूरिभटरणविचलायेहैं ऋषिम खरखवारेदशरथकेदुलारेरंगभूमिपगुधारेजनकवुलायेहैं॥ इनके विमलगुणगणपुलकिततनुसतानन्दकौशिकनरेशहीसुनायेहैं॥ प्रभुपदमनदियेसोसमाजचितकियेहुलसिहुलसिहियेतुलसिहु गायेहैं ७५ रागकान्हरा॥ सीयस्वम्वरमाईदोभाईआयेदेखनसुनत चलीप्रमदाप्रमुदितमनप्रेमपुलकितनमनहुमदनमंजुलपेष न॥ निरखिमनोहरताईसुखपाईकहेंएकएकसोंभूरिभागहमध न्यआलिएदिनएसन॥ तुलसीसहजसनेहसुरंगसवसोसमाज चितचित्रसारलागीखेलन ७६ रागगौरी॥ रामलखणजवदृष्टिपरे रीअवलोकनसवलोगजनकपुरमानोविधिविविधिविदेहकरे रीधमुषयज्ञकमनीअवनीतलकौतुकहीभयेआइखरेरीछ विसुरसभामनहुमनसिजकेकलितकल्पतरुरूपफरेरीसकलकामव र्षतमुखतकर्षतचितहितनहर्षभरेरीतुलसीसवैसराहतभूपहिभलेपलवा सेसुढरढरेरी ७७ नेकुसुमुखिचितलाइचितोरीराजकुंअरमूरतिरचिवे

कीउचिसुचिविधिश्रमकियोहै कितोरी ॥ नखशिषसुंदरता अ
वलोकत कहैनपरत सुखहोत जितोरी ॥ सांवर रूपसुधांभरिवे
कहुं नयनकमलकल कलशरितोरी मेरेजान इन्हवोलिवेकारण
चतुरजनकठयोठटइतोरी तुलसीप्रभु भंजिहैं शंभुधनु भूरिभाग
सियमातपितोरी ७९ रागसारंङ्ग ॥ जवतेराम लखणचितयेरी रहेएकट
कनरनारिजनकपुरलागत पलककल्पवितयेरी प्रेमविवशमागत
महेशसोदेखतहीरहियेनितयेरी कैयेसदावसहुइननकेएनयनज
हु जितयेरी कोउसमुझाइकहै किनभूपहिवडेभागआयेइतयेरी विर
चतइनहिविरञ्चभुवनसवसुंदरताखोजतरितयेरी तुलसिदासतेधन्य
जन्मजगनवचक्रमजिनकेहितयेरी ७६ सुनुसखिभूपनिभलोइकियोरी
जेहिप्रसादअवधेशकुंअरहौनगरलोगअवलोकिजियोरी मानिप्रती
तिकहेंमेरेतेंकतसंदेहवसकरलिहियोरी नौलौंहैपहशम्भुशरासन
श्रीरघुवरजौलौंनलियेरी ॥ जेहिविरञ्चिरचिसीयसंवारीरामहिं ऐ
सोरूपदियोरी ॥ तुलसिदासतेचतुरविधातानिजकरयहसंयोगसिये
री ॥ ८० ॥ अतुकूलनृपहिशूलपाणिहैं नीलकण्ठकारुण्यसिन्धु
हरदीनवन्धु दिनदानिहैं ॥ जोपहिलेहीपिनाकजनककहंगयेसौंपिजियजानिहै ॥ बहुरिविलोचनकेफलसवहिसुलभकि
येआनिहै ॥ सुनियतभवभावतेरामहैं सियभावतीभावनिहै ॥
परिखतप्रीतप्रतीतिपयप्रणरहैकाजठटुठानिहै ॥ भयेविलो
किविदेहनेहवसवालकविनुपहिचानिहै ॥ होतहरेहोनेवि
रवन दलसुमतिकहत अनुमानिहैं ॥ देखियतभूपभोरके
सेउडगण गरत गरीव गलानिहै ॥ तेज प्रताप वढत कुं
अरनिको यदपि संकोची वानिहैं ॥ बयकिशोर वरजो
र डाह वलमेरुमेलिगुणतानिहैं ॥ अवशिरामजीवविलोच
नशंभुसरासनभानिहैं देखिहै व्याहउछाहनारिनरसकलसुमङ्गलानि

मिहैं ॥ भूमि भाग तुलसी लेऊं जे सुनिहैं गाइ बखानिहैं ॥ ८१ ॥ रागकेदा
रा ॥ रामहिं नीके निरखि सुनयनी ॥ मनसहु अगम समुझि यह अवसर
क. तसकुचति पिकबयनी ॥ बडे भाग मख भूमि प्रगट भइ सीय सुमङ्ग
लमयनी ॥ जाकारण लोचन गोचर भई मूरति सबसुखदयनी ॥ कुलगु
रुतियके वचन मधुर सुनि जनक युवति मति पयनी ॥ तुलसी सिथिल
देह सुधि बुधि करि सहज सनेह बिपयनी ॥ ८२ ॥ मिलो वर सुन्दर सुन्द
रि सीतेहि लायक सांवरो सुभग सोभाहू को पर मसिंगारु मनहू को मन
मोहै ॥ उपमा को आन को है सुखमा सागर संग अनुज राजकुमारु ॥ ललि
तसकल अंग तनु धरें कै धौं अनङ्ग नयननि को फल कै धौं सिय को सुह
लसारु ॥ सरद सुधा सदन छबिहि निन्दै बदन अरुण आयत नव नलि
नलोचन चारु ॥ जनक मन की रीति जानि विहित प्रीति ऐसी तो मूर
ति देखे रह्यो पहिलो विचारु ॥ तुलसी नृपहि ऐसो कहि न बुझावको
ऊ पण औ कुंअर दोऊ प्रेम की तुला धौं नारु ॥ ८३ ॥ राग सारङ्ग. देखि
देखिरी दोउ राजसुवन ॥ गौर स्याम सलोने लोने लोयननि जिनकी
सोभा ते सोहैं सकल भुवन ॥ इनहि ताडिका मारी मुनि तिय तारी ऋषि
मख राख्यो रण दले हैं दुवन ॥ तुलसी प्रभु को अब जनक नगर नभ
सुयस बिमल रवि बाहन भवन ॥ ८४ ॥ राग टोडी ॥ सभा रङ्ग. भूमि आ
जु बैठे जाइ कै ॥ आपने आपने थल आपने २ साज आपनो २ बखानक
बनाइ कै ॥ कौशिक सहित राम लषण ललित नाम लरिका ललाम.
सोने पट घिल लाइ कै ॥ दरस लालसा बस लोग चले भाय भलि विक
सत मुख निकसत धाइ धाइ कै ॥ सानुग सानन्द हिये आगे ह्वै जनकलि
ये रचना रुचिर सब सादर देखाइ कै ॥ दिये दिये आसन सुपास साव
काश अति आछे २ दिये बिछि पिन छ नाबि छाइ कै ॥ भूप निकियो.
सुजान और राव चसुमि राउ देखि बे को दाउ हरखे निरखि बिहाइ कै भु.
वन मूल सोहै सुख सुख अनन्त नैन लोभानु भोर भूप निकिर राजु बाइ कै

कौतुक को लाहलनिसान गानपुरनभवषतसुमन विमानरहसुख के ॥ हित अनहितरत विरतविलोकि वाल प्रेममोद मगनजनम फल पाइके ॥ राजा की रजाइ पाइसचिवसहेली धाइसतानन्द ल्याये सि पसिविका चढाइ के ॥ रूपदीपिका निहारि मृगमृगीनर नारिविय के विलोचन निमिषें विसराइ के ॥ हानि लाहु अनषञ छाहु वाहुव लकहि वन्दी बोले विरद अकस उपजाइ कै ॥ दीपदीपके महीप आय सुनि पैंज पराकीजै पुरुषार्थ को अवसर भो आइ कै ॥ आना कानीक रहँसी सुहाचाहीन लागी देखि दशाकहत विदेह विलपाइ के ॥ घरनि सिधारियेसुधारिये आगिलकाज पूजिधनु कीजे विजपवजाइ के ॥ जन कवचनछुयेविरवालजासेवीरहेसकलसकुचि शिरनाइ के ॥ तुलसी लषणमाषेरोषेराखेराम रुख भाखेमृदु परुषसुभाय नरि साय के ॥ ८५

भूपति विदेह कही नीकी येजो भई है ॥ वडेही समाज आज राजनिकी लाजपतिहांकि आंकएक कहीपिनाक छीनि लई है ॥ मेरो अनुचि तनकहतलरिकाई वश प्रणपरमिति और भांतिसुनिगई है ॥ नतरु प्रभुप्रतापउतरु चढाय चापदेतौ पै देखायवल फलपापमई है ॥ भूमि केहरैपाउ खरेया भूमिधरनिके विधि विरचे प्रभावजाको जगजई है ॥ विहंसि हिये हरषि हटके लषणराम सोहत सकोच शीलनेह नारिनई है ॥ सहमी सभासकल जनक भयेविकल राम लखि कौशिक अ शीस आज्ञा दई है ॥ तुलसी सुभाय गुरु पाय लागि रघुराय ऋषिराय की रजाइ माये मानि लई है ॥ ८६ ॥ सोचनजनक पोचपेचपरिगई है ॥ जोरि कर कमल निहोरि कहे कौशिक सों आयसु भो राम को से मे रेदुचितई है ॥ वाणजातिधानपति भूपदीपसातहू के लोक पदिले कनपिनाक भूमि लई है ॥ जोतिलिङ्ग कथासुनिजाकी अन्त पाये विनु आये विध हरिहारिसोई हाई है ॥ आपुही विचारिये निहारि ये सभाकी गत वेद मरयाद मानो हेतु वाद हई है ॥ इन को जिनो

है मनु सोभा अधिकानी ननु सुखनि की सुखमा सु लहर सई है रावरो
भयो सांवल कै है कोउ किये बल कधौं कुल को प्रभाउ कैधौं लरिकई
है ॥ कन्या कल कीरति विजय विश्व की बटोरि कैधौं करतार इनहीं
को निरमई है ॥ पण को न मोह विशेषि चिन्ता सीनाहू की सुनि है पै
सोई सोई जोई जोई बई है ॥ रहे रघुनाथ कि निकाई नीकी नीके ना
यनाथ निनिहारे करतूति जा की नई है ॥ कहे साधु गाधिसु अनसा
हे राज महाराज जानि जियठीक भली दई है ॥ हरषे लषण हरषाने वि
लखाने लोग तुलसी मुदित जा को राजा राम जई है ॥ ८७ ॥ सुजन स
राहे ॥ जो जन कवान कही है राम हि सोहानी जानि मुनि मन मानी सु
नि नीच महि पावली दहन विनु दही है ॥ कहे गाधि नन्दन मुदित रघुन
न्दन सों नृप गति अगह गिरा न जाति गही है ॥ देखे सुने भूपति अनेक झू
ठे झूठे नाम सांचे निरहुति नाथ साखी देति मही है ॥ राग औ विराग भोग योग यो
गवत मनु योगी याग वलिक प्रसाद सिद्ध लही है ॥ ताते नेन रागिते न सीरे सु
धा करहू ते सहज समाधि निरुपाधि निरवही है ॥ ऐसेऊ अगाध बोध
रावरे सनेह वस विकल विलोकियत दुचितई सही है ॥ काम धेनु कृपाहु
लसानी तुलसीश उर पराग्रि सुहेरि मरयादा वांधि रही है ॥ ८८ ॥ ऋ
षिराज राजा आजु जनक समान को ॥ आपु यहि भांति प्रीति सहित सरा
हि पतरागी औ विरागि बड़भागी ऐसो आनको ॥ भूमि भोग करत अनुभ
वत योग सुख मुनि मन अगम अलख गति जानको ॥ गुरु हर पद नेह गे
ह वसि भो विदेह अगुण सगुण प्रभु भजन सयान को ॥ कहनि रहनि
एक विरति विवेक नीति वेद बुध संमत पथीन निरवाण को ॥ गिनुगु
ण की कठिन गांठि जड़ चेतन की छोरि अनायास साधु सोधक अपान
को ॥ सुनि रघुवीर की बचन रचना की रीति भये मिथिलेश मानो दीप
क विहान को ॥ मिट्यौ महा मोह जी को छुट्यौ पोच सोच सी को जान्यो अ
वतार भयो पुरुष पुराण को ॥ सभा नृप गुरु नर नारि पुर नभ सुर सब-

चित्तवन मुख करुणानिधानको ॥ एकहि कहत एक प्रगट सप्रेम वस
तुलसी मनोरिहै शरासन ईशानको ॥ ८८ ॥ राग मारू ॥ सुनो भैया भूप
सकल दै कान ॥ वज्ररेख गजदशन जनक प्रण वेद विदित जग जान घो
र कठोर पुरारि शरासन नाम प्रसिद्ध पिनाक ॥ जो दशकण्ठ दियो ना
वां जेहिं हर गिरि कियो मनाक ॥ भूलि भाल भ्राजत न चलत सो ज्यों वि
रञ्चिको आंक ॥ धनु तोरे सोइ वरै जानकी राउ होउ कि रंक ॥ सुनि
आमर्ष उठे अवनीपति लगे वचन जनु तीर ॥ टरै न चाप करै अप
नो सो महा महा वलवीर ॥ नमित शीश सोचहि सलज्ज सव श्रीहत
भये शरीर वोले जनक विलोकि सीय तनु दुःषित सरोष अधीर ॥ सप्त
दीप नव खण्ड भूमि के भूपति वृन्द जुरे ॥ वडो लाभ कन्या कीरति को
जहां तहं महिप मुरे ॥ डग्यो न धनु जनु वीर विगत महि किधौं कहुं सुभ
ट दुरे ॥ रोषे लषण विकट भ्रकुटी करि भुज अरु अधर फुरे ॥ सुनहु
भानुकुल कमल भानु जौं अव अनुशासन पावौं ॥ को वापुरो पिनाक मेलि
गुण मन्दर मेरु नवावौं ॥ देखो निज किङ्कर को कौतुक क्यों कोदण्ड चढावौं
लै धावौं भञ्जौं मृणाल ज्यों तौ प्रभु अनुग कहावौं ॥ हर्षे पुर नर नारि स·
चिव नृप कुंअर कहे वर वयन ॥ मृदु मुसुकाइ राम वरज्यो प्रिय वन्धु नय
न की सयन ॥ कौशिक कह्यो उठो रघुनंदन जगवन्दन वल अयन ॥
तुलसीदास प्रभु चले मृगपति ज्यों निज भक्तन सुखदयन ॥ ८९ ॥ जव
हिं सव नृपति निराश भये ॥ गुरुपद कमल वन्दि रघुपति तव चाप समी
प गये ॥ श्याम तामरस दाम वरण वपु उर भुज नयन विशाल ॥ पीन व
सन कटि कलित कण्ठ सुन्दर सिन्धुर मणिमाल ॥ कल कुण्डल पल्ल
व प्रसून शिर चारु चौतनी लाल ॥ कोटि मदन छवि सदन वदन विधु
तिलक मनोहर भाल ॥ रूप अनूप विलोकत सादर पुरजन राजसमाज
लषण कह्यो थिर होहि धरणीधर धरणि धराधर धा [illegible] ॥ कमठ
कोल दिग्दन्ति सकल अंग सजग करहु प्रभु काज ॥ चहत चप[illegible] शिव

चढु॰चढावनदशरथकोजुवराज ःगहिकरतलमुनिपुलकसहि
कौतुकहिउठाइलियो ःनृपगणमुखनिसमेतनमितकरिसजिसुख
सबहिदियो ःआकर्ष्योसियमनसमेतहरिहर्ष्योजनकहियो ःभं
ज्योभृगुपतिगर्वसहिततिहुलोकविमोहकियो ःभयोकठिनकोद
एडकोलाहलप्रलयपयोदसमान ःचौकेशिवविरंचिदिशिनायक
रहेमूंदिकरकान ःसावधानह्वैचढेविमाननचलेबजाइनिसान ःउ
मगिचलेगेआनंदनगरनभजयधुनिमंगलगान ःविप्रवचनसुनि
सखीसुआसिनिचलीजानकिहिल्याइ ःकुंअरनिरखिजयमालमे
लिउरकुंअरिरहीसकुचाइ ःवर्षहिंसुमनअशीशहिंसुरमुनिप्रेम
नहृदयसमाइ ःसीयरामकीसुन्दरतापरतुलसिदासवलिजाइ ८९
रागमल्लार ःजवदोउदशरथकुंअरविलोके ःजनकनगरनरनारि
मुदितमननिरखिनयनपलरोके ःवयकिशोरघनतडितवरणतनन
खिपअंगलोभारे ःहैवैबूझैहितलैसबविवितविधिनिजहाथसं
वारे ःसंकटनृपहिंसोचअतिसीतहिभूपसकुचिशिरनावे ःउठेरा
मरघुकुलकलकेहरिगुरुअनुशासनपाये ःकौतुकहीकोदराड
खारिडप्रभुजयअरुजानकिपाई ःतुलसिदासकीरतिरघुपतिकीमु
निनहिंहूंपुरगाई ः९०ःरागटोडी ःमुनिपदरेणुरघुनाथमाथेधरी
है ःरामरुखनिरखिलषनकीरजाइपाइपाइधरणधरणिसुसावधा
नीकरीहै ःसुमिरिगणेशगुरुगौरिहरभूमिसुरसोचतसकोचतसको
चीवानिखरीहै ःदीनबन्धुकृपासिन्धुसभाकोसकोचकुलहूकीला
जपरीहै ःपेषिपुरषारथपरिषिपणप्रेमनेमासियहियकीविशेषिव
डीखरभरीहै ःशाहिनोदियोपिनाकुसहमिभयोमनाकुमहाव्याल
विकलविलोकिजनुजरीहै ःसुरहरषतबरषतफूलबारबारसिद्धमु
निकहतसगुणशुभघरीहै ःरामबाहुविटपविशालबोंडीदेखिअति
जनकमनोरथकलपवेलिफरीहै तरवानचढावतनतोनतनतोरतहू

धारसुनिसुनि शिव की समाधि टरी है ॥ प्रभुके चरित्र चारु तुलसी न तनमु
खरा कहीं सुलाभ सबही को हानि हरी है ॥ ९३ ॥ राग सारङ्ग ॥ रामकाम



रिपु चांप चढायो ॥ मुनिहीं सुलक आनन्द नगर नभ धुनि निसान
बजायो ॥ जेहि पिनाक बिनु नाक किये नृप सबहि बिषा बिदबढा
यो ॥ सोई प्रभु कर परसत टूट्यो जनु हुतो सुरारि पढायो ॥ पहि
राई जय माल जानकी जुवतिन्ह मङ्गल गायो ॥ तुलसी सुमन बर्षि ह
र्षे सुर सुयश तिहूं पुर छायो ॥ ९४ ॥ राग टोडी ॥ जनक मुदित मन टूट
त पिनाक के ॥ बाजे हैं बधावने सुहावने मङ्गल गान भयो सुख एक के रा
नी राजा रक के ॥ दुन्दुभी बजाइ गाइ हर्षि बरषि फूल सुर गंध
र्बनाचे नाच नाप क हनाक के ॥ तुलसी महीश देखे रीन जर नाम जे से मृ

न ममनो मिटाये शोक के ॥५॥ लाज तोन साज साज साज राजा राज रोषे
है ॥ कहा भो चाप के चढाये ब्याह ह्वै है बडे खाए बोले खोले सेलि असि-
एन कत चोषे हैं ॥ जानि पुरजन त्रसे धीर दै लखण राहं सेवलइन कपि
ककनीके नापे नरो पे हैं कुल हि लजावै वाल बालसे कजावै गाल कैधौं
कूर कालन एनमवि. विशेषे हैं ॥ कुंअर चढाई भौहैं अब को विलोके
मोतौ तेहो भे अचेत खेलके से धोषे हैं ॥ देषे नर नारि कहैं सागर खाय-
कावे माप वाहु पीन पांवर नि पीना खाप पोषे हैं ॥ मुदित मन लोक को
कक्का कोक गण राम के प्रताप रवि शोच सर सोषे हैं ॥ नव के देखे पा-
नोपे नवक भले लोगनि अव लोकै सुनैया साधु तुलसीहूं तोषे हैं ॥
।रागान यमाल जानकी जलज कर लई है ॥ सुमन सुमंगल सगुण
वायनाई नजुना नहु मदन माली आपु निरमई है ॥ राज देखि लखि
तरु ससुर सुआसिनि निराम ये समाजकी डवनि मली दई है ॥ चली गा
ने केरमनि निसान बाजे गह गहे लह लहे लोपन सनेह सरसई है ॥ हनो
देव दुन्दुभी हरषे वरखन फूले फलमनोरथ भो सुख सुचिन ईहै ॥ पुर
ममपरिजन रानी राउ प्रमुदित मनसा दर अनूप राम रूप रङ्ग रई है ॥
तनानन्द रूशि खसुनि पप परि पहि राय माल सियपिय हिय सोहत सोई
है ॥ मानस तें निकसी विशाल सुन माल पर मानहुं मराल पांति बैठ
रहगई है ॥ हितनि की लाह कीउ छाह की विनोद मोद शोभा की अवधि
राण्ड अव अधि कई है ॥ पौतें विपरीत अन हितन को जानि लियबि-
नात बडे प्रगट रुनि सरवांसीप ईहै ॥ निज निज बेदकी स प्रेम योगदे
मारे मुदित अशीश विप्र विदुषन दई है ॥ छवि नेहि काल की कृपाल
सीमा दूलह की हुलसनि हिये तुलसी के नित नई है ॥ ९० ॥ राग के
दारा ॥ लंदुरी लोचन को लाहु ॥ कुंअर सुंदर सांवरो ससि सुमुखि
सादर लाहु ॥ खण्ड हर को दण्ड ठाढे जानु लम्बिन बाहु ॥ रुचि तउ
र तप मालराता तदेस सुखसव काहु ॥ चितै चितहित सहित नख शि

ल अङ्ग अङ्ग निबाहु ॥ सुकृत निज सिय राम रूप बिरञ्चि मति नि (रा
हु मुरि बिमन बर बदन सो भाउ दित अधिक उछाहु ॥ मनहु हरि फल
ङ्क करि शशि समर सुधो राहु ॥ नयन सुखमा अयन हरत सरोज सुद
रताहु ॥ बसन तुलसी हास उर पुर जानकी को नाहु ॥ ९८ ॥ राग सारंग
भूप के भाग की अधिकाई ॥ टूट्यो धनुष मनोरथ पूज्यो बिधि सब ब
नत नाई ॥ तबते दिन दिन उदय जनक को जबते जानकी जाई ॥ अ
ब यहि ब्याह सुफल भयो जीवन त्रिभुवन बिदित बडाई ॥ बारहि बार प
हुनई ऐहैं राम लखण दोउ भाई ॥ यहि आनन्द मगन पुरवासिन देह
दशा बिसराई ॥ सादर सकल बिलोकत रामहि काम कोटि छवि छाई
॥ यह सुख समय समाज एक मुख क्यों तुलसी कहै गाई ॥ ९९ ॥ राग
सोरठ ॥ मेरे बालक कैसे धौं मग निरबहहिंगे ॥ भूख प्यास सीत श्रम
सकुचनि क्यों कौशिकहि कहहिंगे ॥ को भोर ही उबटि अन्हवैहैं का
ढि कलेऊ दैहैं ॥ को भूषण पहिराइ निछावरि करि लोचन सुख लै
हैं ॥ नयन निमेषन ज्यों जुगवैं नित पितु परिजन महतारी ॥ ते पठये ऋ
षि साथ निशाचर मारण मख रखवारी ॥ सुंदर सुठि सुकुमार सुकोमल
काकपक्षधर दोऊ ॥ तुलसी निरखि हरखि उर लैहौं बिधि ह्वैहैं दिन सो
ऊ ॥ १०० ॥ ऋषि नृप शीश ठगोरी सी डारी ॥ कुलगुरु सचिव निपुन ने
वनि अवरेब न समुझि सुधारी ॥ सिरिस सुमन सुकुमार सुअन दोउ सूर
सरोष सुरारी ॥ पठये बिनहि सहाय पयादेहि केलि बाण धनु धारी ॥ अ
ति सनेह कातर माता कहे लखि सखि बचन दुखारी ॥ बादि बीर जन
नी जीवन जग छत्रि जाति गति भारी ॥ जो कहिहै फिरे राम लखण घर
करि मुनि मख रखवारी ॥ सो तुलसी प्रिय मोहि लागिहै ज्यों सुभाय सु
त चारी ॥ १०१ ॥ राग सारङ्ग ॥ जबते लै मुनि सङ्ग सिधाये राम लखण के
समाचार सखि तब ते कछु अन पाये ॥ बिनु पानहीं गवने फल भोज
न भूमि शयन तरु छाहीं सर सरिता जल पान शिशुन के साथ सु सेव

बकजाही ॥ कौशिक परम कृपालु परम हित समरथ सुखद सुचाली
बालक सुठि सुकुमार सकोची समुझि सोच मोहि आली ॥ वचन सप्रे
म सुमित्रा सुनि कै सब सनेह घमरानो ॥ तुलसी आइ भरत नेहि अव
सर कही सुमङ्गल बानी ॥ १०८ ॥ सानुज भरत भवन उठि धाये ॥ पि
तु समीप सब समाचार सुनि मुदित मातु पह आये ॥ सजल नयन त
न पुलक अधर फरकत लखि प्रीति सुहाई ॥ कौशल्या लिये लाइ
हृदय बलि कहौ कछु है सुधि पाई ॥ सतानन्द उपरोहित अपने निर
हुतिनाथ पठाये ॥ क्षेम कुशल रघुवीर लखन को ललित पत्रिका ल्या
ये ॥ दलि ताड़िका मारि निशिचर मख राखि विप्रतिय तारी ॥ दै विद्या लै
गये जनकपुर है गुरुसंग सुखारी ॥ करि पिनाक पण सुनाम सुयंवर सजि
नृप कटक बटोरयो राज समाज रघुवर मृणाल ज्यौं शम्भु शरासन तोरयो ॥
यों कहि शिथिल सनेह बंधु दोउ अम्ब अङ्क भरि लीन्हें ॥ बार बार सुख चूमि
चारु मणि बसन निछावरि कीन्हें ॥ सुनत सुहावनि चाह अवध घर आ
नन्द बधाई ॥ तुलसिदास रनिवास रहस बस सखिन सुमङ्गल गाई ॥ १०९
॥ राग केदार ॥ राम लखन सुधि आई बाजै अवध बधाई ॥ ललित लगन
लिखि पत्रिका उपरोहित के कर जनक नरेश पठाई ॥ कन्या भूप विदेह
की रूप की अधिकाई ॥ तासु स्वयम्बर सुनि सब आये देश देश के नृप
चतुरङ्ग बनाई ॥ पण पिनाक पवि मेरु ते गरुता कठिनाई ॥ लोक
पाल महिपाल बाण बाणासुर रावन न शके न चाप चढाई ॥ तेहि स
माज रघुराज के मृगराज जगाई ॥ भञ्जि शरासन शम्भु को जग जा
य कलन कीरति तिय मणि सिय राई ॥ पुर घर घर आनंद महा मुनि
चाह सुहाई ॥ मात मुदित मङ्गल सजे कहै मुनि प्रसाद भये सकल सुम
ङ्गल माई ॥ गुरु आयसु मण्डप रच्यो सब साज सजाई ॥ तुलसिदास द
शरथ बरात सजि पूजि गणेशहिं चले निशान बजाई ॥ ११० ॥ राग केदार
नयन प्रेम मन मनोरथ हारी सो हरौ रिषि साहस एकने कौशिक कृपा चौगुनी

मोरी ॥ भूपपरिताप चापचिन्तानिशिशोचसकोचतिमिरनहिं थोरी
रविकुलरवि अवलोकि सभासर हितचितवारिजवनविकसोरी ॥ कुं
अरकुंअरि सबमङ्गलमूरतिनृपदोउ धर्मधुरंधर धोरी ॥ राज समाज
भूरि भागी जिनलोचन लाहु लह्यो एकठोरी ॥ ब्याह उछाह रामसीताको
सुकृत सकेलि विरंचि रच्यो री ॥ तुलसिदास जानै सोइ यह सुख जा उर
बसति मनोहर जोरी ॥ १०५ ॥ राजति राम जानकी जोरी ॥ स्यामसरोज-
जलद सुंदर वर दुलहिनि तडित वरणतन गोरी ॥ ब्याह समय सोहत
वितान तर उपमा कहुं न लहति मति मोरी ॥ मनहुं मदन मंजुल मण्ड-
पमहं छवि सिंगार शोभा इक ठोरी ॥ मङ्गलमय दोउ अङ्ग मनोहर
ग्रथित चूनरी पीत पिछोरी ॥ कनक कलस कहं देत भांवरी निरखि रू-
प सारद भइ भोरी ॥ इत वशिष्ट मुनि उतहि सतानंद वंश बखान करै
द्वौ सोरी ॥ इत अवधेश उतहि मिथिलापति भरत अङ्ग सुख सिन्धु
हलोरी ॥ मुदित जनक रनिवास रहस बश चतुर नारि चितवहिं ति-
णतोरी ॥ गान निशान वेद धुनि सुनि सुर बरषत सुमन हरषि कहं कोरी ॥
नयनन को फल पाइ प्रेमबश सकल असीसत ईश निहोरी ॥ तुलसी
जेहि आनंद मगन मन क्यौं रसना बरनै सुख सोरी ॥ १०६ ॥ दूलह राम सी-
य दुलही री ॥ घन दामिनि बरवरण हरण मन सुन्दरता नख शिख निब-
ही री ॥ ब्याह विभूषण बसन विभूषित सखि अवली लखि ठकि सी रही री ॥
जीवन जन्म लाहु लोचन फल है इतनो लह्यो आजु सही री ॥ सुखमा
सुरभि सिंगार छीर दुहि मयन अमिय मय कियो दही री ॥ मथि माखन सि-
यराम संवारे सकल भुवन छबि मनहुं मही री ॥ तुलसिदास जोरी देखि-
त सुख शोभा अतुल न जाति कही री ॥ रूप रासि विरची विरञ्चि मानो सिला
लवनि रति काम लही री ॥ १०७ ॥ जैसे ललित लखण लाल लोने ॥
तैसिये ललित उर्मिला परस्पर लखत सुलोचन कोने ॥ सुखमा सार
सिंगार सार करि कनक रचे हैं तेहि सोने ॥ रूप प्रेम परमिति न प-

ति बाहि बिध किरही मनि मोने ॥ शोभा शील सनेह सुहावन समय केलि गृह गोने ॥ देखवे आनि के नयन सुफलमय तुलसिदास के होने



॥ ५१८ ॥ राग बिलावल ॥ जानकी वर सुंदर माई ॥ इन्द्रनील मणि श्यामसुभग अंग अङ्ग मनोजनि बहु छबि छाई ॥ अरुण चरण अंगुली मनोहर नख दुतिवंत कछुक अरुणाई ॥ कंज दलन पर मनहु भोम दश बैठे अचल सुसदसि बनाई ॥ पीन जानु उर चारु जडित मणि नूपुर पद कल मुखर सुहाई ॥ पीत पराग भरे अलिगण जनु युगल जलज लखि रहे लोभाई ॥ किंकिनि कनक कञ्ज अवली मृदु मरकत शिखर मध्य जनु जाई ॥ गई न उपर समीन नमित मुखकि शिव हव दास रहो लोनाई ॥ नाभि गम्भीर उदर रेखा सर उर भृगु वरणाव

न्हसुखदाई ॥ भुजप्रलम्बभूषण अनेक युतवसन पीत शोभा अधि
काई ॥ जज्ञोपवीत विचित्र हेममय मुक्तामाल उरसि मोहि भाई ॥ कुन्द
नडिनविच जनु सुरपनिधनु निकट बलाकपांति चलि आई ॥ कम्बुक
एठचिबुकाधर सुन्दर क्यों कहों दशनन की रुचिराई ॥ पद्मकोशम
हं नसबन्धमानो निजसंगतडित अरुणरुचिराई ॥ नाशिकचारु ल
लित लोचन भृकुटिलकचन अनुपम छविछाई ॥ रहे घेरि राजीव
भयमानो चंचरीक कछु हृदय डराई ॥ भालतिलक कंचनकिरीटशि
रकुण्डल लोलकपोल निकाई ॥ निरखहिं नारि निकर विदेहपुरनि
मिनृपकी मर्याद मिटाई ॥ शारद शेष शम्भु निशिवासर चिन्तन रू
पन हृदय समाई ॥ तुलसिदास शठ क्यों करि वरणै यह छवि निगम
नेतिकहिगाई ॥ १०९ ॥ राग काह्नरा ॥ भूजानि पर जननि वारि फेरि डा
री क्यों तोरयो कोमल करकमलन शम्भुशरासन भारी ॥ क्यों मारीच सु
बाहु महा बल प्रबल ताडिका मारी ॥ मुनि प्रसाद मेरे रामलखण की वि
धि बडि करवरटारी ॥ चरणरेणु लै नयन लगावति क्यों मुनि वधू उ
धारी ॥ कहौ धौं तात क्यों जीति सकल नृप वरी विदेह कुमारी ॥ दुसह
रोषमूरति भृगुपति अति नृपति निकर क्षयकारी ॥ क्यों सौंप्यो सा
रङ्ग हारि हिय करि है बहुत मनुहारी ॥ उमगि उमगि आनन्द विलोक
ति वधून सहित सुत चारी ॥ तुलसिदास आरती उतारति प्रेममगन मह
तारी ॥ ११० ॥ राग विहागरा ॥ सुदिन सुमन आरती करैं माता ॥ कनकव
सन मणि वारि वारि वर पुलक प्रफुल्लित गाता ॥ पालागन दुलहियन
सिखावति सासु सदेश सतसाता ॥ देहिं अशीश ते बरस कोटि लगि अ
चल होहु अहिवाती ॥ राम सीय छवि देखि युवति जन करहिं परस्प
र बाता ॥ अब जान्यो सांचे सुनहु सखि कोविद बडो विधाता ॥ मंगल गा
न निशान नगर नभ आनन्द कह्यो न जाता ॥ चिरजीवहु अवधेश
सुअन सतुलसिदास सुखदाता ॥ १११ ॥ इति श्री रामगीतावली बालकाण्ड.

कांडसमाप्तम् १ ॥ रागसोरठ ॥ नृपकरजोरिकह्यौगुरुपाहीं तुम्हरी
कृपा असीसनाथमेरीसबै महेसनिबाहीं ॥ रामहोहिं युवराज जियत
मम यह लालसमनमाहीं ॥ बहुरिमोहिं जियबेमरिबेकी चिंत चिन्ता
कछुनाहीं ॥ महाराज भल काजबिचारयौवेगि लगन कीजै ॥ विधिद
हिनो होइ तबसब मिलिजन्म लाहुलुटि लीजै ॥ सुनत नगरआन
न्द बधावन कैके यी बिलखानी ॥ तुलसीदास देव मायावश कठिन
कुटिलतारानी ॥ ११२ ॥ रागगौरी ॥ सुनहु रामभेरे प्राणपियारे ॥ बारे
सत्यबचनश्रुतिसमातजातेंहौं बिछुरतचरणनिहारे ॥ बिनुप्रयास
सबधनकोफलश्रुभुपायोसोनहीं सभारे ॥ हरितजिधर्मशीलभयो
चाहत नृपतिनारिबसससवैसहारे ॥ रुचिरकांचुमणिदेखिमूढज्यौं
करतलतेचिन्तामणिडारे ॥ मुनिलोचन चकोरशशिराघवशिवजी
वनधनसोउनविचारे ॥ यद्यपिनाथतात मायावशसुखनिधानसुत
तुमहिबिसारे ॥ नदपिहमहिंत्यागहुजनिरघुपतिदीनबन्धु दयालु
मेरेबारे ॥ अतिसप्रेमविनीतबचनसुनिप्रभुकोमलचित चलन
पारे ॥ तुलसिदासजौ रहौमातुहितकोसुरविप्र भूमिभयटारे ॥ ११३
रहिचलिपैसुन्दर रघुनायक ॥ जौ सुततातबचनपालनरत जननिउ
तानमानिबेलायक ॥ वेदबिदितयहवानतुम्हारीरघुपतिसदासन्त
सुखदायक ॥ राखहुनिजमर्य्याद निगमकीहौंबलिजोंहुं घरलुघनुसा
यक ॥ सोकक्रूपपरपरिहिमरिहैनृपसुनिसंदेशरघुनाथसिधायक ॥
यहदूषणविधिलेहिहोत अबरामचरणवियोगउपजायक ॥ मानबच
नसुनिश्रवणनयनजलकछुसुभायजनुनरतनुपायक ॥ तुलसिदा
ससुरकाजनसाधौतौ नदोषमोहिमहिआयक ॥ ११४ ॥ रागसोरठा ॥
राम है कौनयतनघररहिहौं ॥ बारबारभरिअङ्कगोदलैललनकौनसो
कहिहौं ॥ यह आंगनविहरतमेरेबारे अनुजसंगभरितुलीके ॥ कैसे
हुं प्राणरहतसुमिरत सुतबहु विनोदतुमकीहै ॥ जिनश्रवननिकलकर

ननिहारे सुनि सुनिहों अनुरागी ॥ तिन अवरणनि वनगवनु सुननिहों
मोते कवन अभागी ॥ युगसम निमिष जांहि रघुनन्दन वदनकमल विं
नु देखे ॥ जो तनु रहै वर्ष वीतें वलि कहा प्रीति यह लेखे ॥ तुलसिदास उ
भयसम्त्री हरि देखि विकल महतारी ॥ गद्गद कण्ठ नयनजल फिरि फे
रि आवन कह्यो मुरारी ॥ ११५ ॥ रागविलावल ॥ रहु भवनहमारे कहे
कामिनि ॥ सादर सासु चरण सेवहु नित जो तुमरे अति हित गहस्वा
मिनि ॥ सादर सासु चरण सेवहु नित जो तुमरे अति हित गहस्वामिनि
राजकुमारि कठिन कंटक मग क्यों चलिहो मृदुपद गजगामिनि ॥
दुसह वात वरषा हिम आतप कैसे सहिहौ अगनित दिनयामिनि ॥
हौं पुनि पितु आज्ञा प्रमान करि ऐहों वेगि सुनहु दुति दामिनि ॥ तु
लसिदास प्रभु विरह वचन सुनि सहि न सकहिं मुर्छित भइ भामिनि ११६
कृपानिधान सुजान सुजान प्राणपति सङ्ग विपिन हों आवोंगी ॥ गृहतें का
टि गुणि न सुख मारग चलत साथ सुख पावोंगी ॥ थाके चरणकमल चा
पोंगी श्रम भये वाउ डोलावौंगी ॥ नयन चकोरनि मुख मयंक छवि सादर
पान करावोंगी ॥ जौ हठि नाथ राखि हौ मो कहु तौ संग प्राण पठावौंगी ॥
तुलसिदास प्रभु विनु जीवत रहि क्यों फिरि वदन देखावौंगी ११७ ॥
कहा तुम विनु गृह मेरो कौन काजु ॥ विपिन कोटि सुरपुर समान मो
कों जो पै पिय परिहरयो सुराजु ॥ वल्कल विमल दुकूल मनोहर क
न्द मूल फल अमी अनाजु ॥ प्रभु पद कमल विलोकि हौं छिनु छिनु ए
हिते अधिक कहा सुखसाजु ॥ हौं रहि भवन भोग लोलुप ह्वै पति का
नन कियो मुनि को समाजु ॥ तुलसिदास अस विरह वचन सुनि कठिन
हियो विहरयो न आजु ॥ ११८ ॥ पिय निठुर वचन कहे कारण कवन जान
त हो सव के मन की गति मृदु चित परम कृपालु रवन ॥ प्राणनाथ सुन्द
र सुजान मणि दीन वन्धु जग आरति दवन ॥ तुलसिदास प्रभु प
द सरोज तजि रहिहों कहा करोंगी भवन ॥ ११९ ॥ मैं नम सोंस न भाय

रहीहौं ॥ वूरुति श्रौर भांति भामिनि कनत कठिन कलेसं सहीहै ॥ जौंवलि हौंनोच लोचतिकै वन सुनिसियमन श्रवलम्व वलहीहै ॥ वूडतिविरह वारिनिधिमानहुं नाहवचनमिसवाहगहीहै ॥ प्राणनाथकेसाथचलीउठि श्रवधसोक सरिउमगिवहीहै ॥ तुलसीसुनीनक्रवहुंकाहूं कहुतनुपरिहरि छांहरहीहै ॥ ११९ ॥ जवहिं रघुपतिसंग सीयचली विकल वियोगलोगपुरति यकहै श्रुति अन्याउ श्ररली ॥ कोउकहमणिगणतजनकांचुलगिकरतनभूप भली ॥ कोउकहकुलकुवेलिकैकेयीदुखविषफलनिफली ॥ एककहैवन जोगजानकीविधिवडोविषमवली ॥ तुलसीकुलिशहुकीकठोरतातेहि दिनदलकिदली ॥ १२१ ॥ रागविलावल ॥ ठाढेहैं लखणकमलकर जोरे ॥ उरधकधकिनकहन कछुसकुचनिप्रभुपरिहरतसवनितृणतोरे कृपासिन्धुश्रवलोकिवश्चुननुप्राणकृपाणवीरसीछोरे ॥ नानविदामांगि येगातसोंवनि हैवातउपाइनश्रोरे ॥ जाइवररागहिश्रापसुयाज्योजन निकहतिवहुभांतिनिहोरे ॥ सियरघुवरसेवासुचिह्वैहोतोजानिहोंसही सुतमेरे ॥ कीजहुईहैविचारनिरंतरराम समीपसुकृतनहिंथोरे ॥ तुल- सीसुनिसिषचलेचकितउह्योमानोविहंगदधिकभयभोरै ॥ १२२ ॥ राग सोरठ ॥ मोकोविधुवदनविलोकनदीजे ॥ रामलखनमेरीइहेभेटवलि जाहुंमाहिमिलिलीजे ॥ सुनिपितुवचनचरणगहे रघुपतिभूप श्रंक भरि लीन्हे ॥ श्रजहुंश्रवनिविदरतिदरारसिसुसोश्रवसरसुधिकीन्हे ॥ पुनिशिर नाइगवनिकियोप्रभुमुर्छितभयोभूपनजाग्यो ॥ कर्मचोरनृपपथिक मारिमानोरामरतनलैभाग्यो ॥ तुलसीरघुकुलरविरथचढिचलेनकि दिशिदक्षिणसुहाई ॥ लोगमलिनभयेमलिनश्रवधसरविरहदिषपवनश्राई ॥ १२३ ॥ रागविलावल ॥ कहोसोविपिनहैधौंकेतिकदूरि जहांगवनकियोकुंश्ररकोशलपतिवूझतिसियपियपतिहिविसूरि ॥ प्राणनाथपरदेशपयादेहि चलेसुखसकलतजेतृणतूरि ॥ करोंवयारिविलम्वियेवतरदारौचरणसरोरुहधूरि ॥ तुलसिदासप्रभुप्रियावचन

चन सुनि निर्नीर जनपन नीर आये पूरि ॥ कानन कह्यौ अब हिं सुनि सुन्दरि रघुपनि फिरि चितये हित भूरि ॥ २२७ ॥ फिरि फिरि राम सियतन हेरत तृषित जानि जल लेन लखण गये भुज उठाइ ऊंचे चढ़ि टेरत ॥ अवनि कुरङ्ग विहग द्रुमडारनि रूप निहारत पलक न प्रेरत ॥ मगन न डरत निरखि कर कमल लनि सुभग शरासन फेरत ॥ अव लोकत मग लोग चहूं दिशि मन हुं चकोर चन्द्र महि घेरत ॥ ते जन भूरि भाग भूतल पर तुलसी राम पथिक पद जे रत ॥ १२५ ॥ राग विलावल ॥ नृपति कुंअर राजत मग जात ॥ सुन्दर वदन सरोरुह लोचन मरकत कनक वरण मृदु गात ॥ अंसनि चाप तूण कटि मुनि पट जटा मुकुट बिच नूतन पात ॥ फेरत पानि सरोजन सायक चोरत चितै सहज मुसुकात ॥ सङ्ग नारि सुकुमारि सुभग सुठि राजत विन भूषण नवसात ॥ सुखमा निरखि ग्राम वनिता निकै नलिन नयन विगसत मानो प्रात ॥ अंग अंग अंगनित अनंग छवि उपमा कहत सुकवि सकुचात ॥ सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत किशोर पथिक द्वौ भ्रात ॥ १२६ ॥ दूरे खि देखि री पथिक वर सुंदर दोऊ ॥ मरकत कलधौत वरण काम कोटि कान्ति हरण चरण कमल कोमल अति राजकुंअर कोऊ ॥ कर शर धनु कटि निषङ्ग मुनि पट सोहें सुभग अङ्ग संग चन्द्र वदनि वधू सुन्दरि सुठि सोऊ ॥ तापस वर भेष किये शोभा सब लूटि लिये नित के चोर वय किशोर लोचन भरि जोऊ ॥ दिनकर कुल मणि निहार प्रेम मगन ग्राम नारि परस्पर कहैं सखि अनुराग ताग पोऊ ॥ तुलसी यह ध्यान सुधन जानि मानि लाभ सघन कृपण ज्यों सनेह सो हिये सुगेह गोऊ ॥ १२७ ॥ कुंअर सांवरो री सजनी सुन्दर सब अंग ॥ रोम रोम छवि निहारि आलि वारि फेरि डारि कोटि भानु सुवन शरद सोम कोटि अनंङ्ग ॥ वाम अंस लसत चाप मौलि मञ्जु जटा कलाप सुचि शर कर मुनि पट कटि तट कसे निषंग ॥ आयत उर बाहु नयन मुख सुखमा को लहै उपमा अवलोकि लोक गिरा मति गति भंग।

यौंकहि भइमगनबाल वियकौसुनिसुवचनिआल विनवन चलेजात·
संगमधुपमृगविहंग ॥ बरणौकिमिनिनकिदसहि निगमअगमये
मसहि तुलसीमनबसनरंगेहचिररूपरंग ॥ १२७ ॥ रागकल्याण ॥ दे
खुकोउ परमसुन्दर सखिबटोही ॥ चलतमहि मृदु चरणअरुणवारिज
वरणभूपसुनरूपनिधि निरषिहौं मोही ॥ अमलनरकनश्याम नील
सुखमाधाम गौरतनुसुभगशोभासखिजोही ॥ सुगलविचनारि सुकुमा
रि सुठिसुंदरी इन्दिराइन्दु हरिमध्यजनुसोही ॥ करनिवरधनुतीर
रुचिरकटि तूणीर धीरसुरसुखदमर्दन अवनिद्रोही ॥ अम्बुजायत
नयनबदनछबि बहुमयन चारुचितवनि चतुरलेतचित पोही ॥ बच
नप्रियसुनिश्रवण रामकरुणाभवन चितैसन अधिकहित मोहिन·
मोही ॥ दासतुलसीनेह विवस बिसरी देह जाननहिं आपुतेहि काल
धौंकोही ॥ १२८ ॥ रागकेदारा ॥ सखिनीकेकै निरषिकोउसुठिसुन्दरब
टोही ॥ मधुरमूरति मनमोहनजोहनयोगबदनसोभासदनदेखिहौं
मोही ॥ सांवरेगोरेकिशोर सुरमुनिचितचोरउभय अन्तरयेकनारि·
सोही ॥ मनहुं वारिद विधु बीचललित अतिराजतितडित निजसह
जनिछोही ॥ उरधीरज धरिजन्मसुफलकरि सुनिहिसुमुखिजियविकल
नहोही ॥ कोजानेकौनेसुकृतलयौहै लोचनलाहु ताहीनेवारहिवारकह
नहोनोही ॥ सखिहिसुसिषदई प्रेममगनभई सुरतिविसरिगई आपनी·
ओही ॥ तुलसीरहीहैठाढी पाहनगढीसी काढीनजानेकहांतेआईकौन
कीकोही ॥ १२९ ॥ मोहेमनकेमोहनजोहनजोरजोही ॥ थोरीहीवयसगो
रस्यामसलोने लोचनललितविधुबदनबटोही ॥ सिरनिजटामुकुटम
ञ्जुतासुमनयुत नीकेसियेलसतनवपल्लवखोही ॥ किपेमुनिभेषधीरधरेधनु
तूणतीरसोहे मगकोहेलरिवपरैनमोही ॥ शोभाकोसांचोसंवारिरूपजात
रूपदारिनारिविरचीविरञ्चिसंगसोसोही ॥ राजनरुचिरतनुसुन्दरश्याम
केकछुबाहे नकन्योंघीलगेकहोंकातोही ॥ सनेहशिथिलसुनिबच

नसकलसिषचिनई अधिक इन सोसोही ॥ तुलसीमानहुं प्रभु कृपा कीमूरतिफिरिहेरिकेहरषिहिपोलियोहै पोही ॥ १३१ ॥ सखिसरदबिपलविधुबदनवधूटी ॥ ऐसीललनासलोनीनभईनहै नहोनीरतीरची विधिजोछोलनछविछूटी ॥ सांवरेगोरेपथिकवीचसोहती अधिकतिहुंत्रिभुअनसोभामानहुंलूटी ॥ तुलसीनिरषिसियप्रेमवश्य कहें निपलोचनसिसुहुंदेह अमियघूटी ॥ १३२ ॥ सोहेसांवरोपथिकपाछे ललनालोनी ॥ दामिनीबरणगोरी लखिसखि तृणतोरीबीतीहै वयकिसोरीजोवनहोनी ॥ नीकेकैनिकाईदेखिजनमसुफललोखिहमसीभूरिभागिनिनभसनसोनी ॥ तुलसीस्वामीस्वामिनिजोहमोहीहैंभामिनीसोभासुधापियेकरिअखियादोनी ॥ १३३ ॥ पथिकगोरेसांवरेसुठिलोने ॥ सङ्गसुतियजाकेतनुतेलहिहैद्युतिस्वर्णसरोरुहसोनेवयकिसोरसरिपारिमानोहरवयसशिरोमणिहोने ॥ सोभासुधाआलिअंचवहुकरिनयनमञ्जुमृदुदोने ॥ हेरतहृदयहरतनहिंहेरतचारुविलोचनकोने ॥ तुलसीप्रभुकिधौंप्रभुकेप्रेमपरेप्रगटकपटबिनुटोने ॥ १३४ ॥ मनोहरताकेमानोअयनश्यामलगौरकिसोरपथिकदोउसुमुखिनिरषिभरिनयन ॥ वीचवधूविधुवदनविराजतिउपमाकोकहुंकोउहयन ॥ मानहुंरतिवरतुनोयसहितमुनिवेसवनायोहैमयन ॥ किधौंसिंगारसुखमासुप्रेममिलिचलजगचितवितलयन ॥ अद्भुतवै किधौंपठईहैविधिमगलोगनिसुखदयनसुमिरिवुविसरलसनेहसुहावनियामवधुन्हकेवयन ॥ तुलसीप्रभुतरुतरविलम्वकियेप्रेमकनौडेकयन ॥ १३५ ॥ वयकिसोरगोरेसांवरेधनुबाणधरेहैं ॥ सबअंगसहजसुहावनेजीवजीतेनयननिवरननिविधुनिदरेहैं ॥ तूणसमुनिपरकटिकसेजटामुकुटकरेहैं ॥ मंजुमधुरमृदुमूरतिपानहोनपायनिकैसेधौंपयविचरेहैं ॥ भयवीचवनितावनीलखिमोहिपरेहैं ॥ मृगमदपियासाप्रियसखासुनिविभ्रमवमावेलि

ये मनजातहरे हैं ॥ सुनिजहँ तहँ देखन चले अनुरागभरे हैं ॥ रामपथि
कन्हविनिरखि के तुलसी मग लोगनि धामकामविसरे हैं ॥ १३६ ॥ कैसे पि
तु मातु कैसे ते प्रिय परिजन हैं ॥ जगजलधि ललालोने गौर स्याम जिन प
ठये हैं ऐसे बालकन वन हैं ॥ रूप के न पारावार भूप के कुमार मुनि भे-
ष देखत लोनाई लघु लागत मदन हैं ॥ सुखमा की मूरति सी साथ नि
सिनाथ मुखी नखसिख अङ्ग सब शोभा के सदन हैं ॥ पङ्कज करनि
चाप तीर तरकस कटि सरद सरोजहु ते सुन्दर चरन हैं ॥ सीताराम ल
षण निहारि ग्राम नारि कहैं हेरि हेरि हेरि हेली हिय के हरन हैं ॥ प्रा
णहू के प्राण से सुजीवन के जीवन से प्रेमहू के प्रेम रङ्ग कृपण के धन
हैं ॥ तुलसी के लोचन चकोरनि के चन्द्रमा से आछे मन मोर चित चा
तक के घन हैं ॥ १३७ ॥ राग भैरव ॥ देखि हौ पथिक गोरे सांवरे सुभग
हैं ॥ सुतिय सलोनी सङ्ग सहत सुगम हैं ॥ शोभासिन्धु सम्भव सेनी
के नग हैं ॥ मातपितु भागबस गये परि फन्द हैं ॥ पायन पनह्या न मृ
दु पंकज से पग हैं ॥ रूप की मोहनी मेलि मोहे अग जग हैं ॥ मुनि
भेष धरे धनुसायक सुलग हैं ॥ तुलसी हिये लसत लोने डग हैं १३८
पथिक पयादे जात पङ्कज से पाय हैं ॥ मारग कठिन कुश कण्टक निका
य हैं ॥ सखी भूखे प्यासे पै चलत चित चाय हैं ॥ इन के सुकृत सुर सङ्ग स
हाय हैं ॥ रूप शोभा प्रेम के से कमनीय काय हैं ॥ मुनि वेष किये कैधौं ब्र
ह्म जीव माय हैं ॥ वीर बरियार धीर धनु धरराय हैं ॥ दश चारि पुर पाल
आलि उरगाइ है ॥ मग लोग देखत करत हाहाय हैं ॥ धन इनको
वाम विधि वबनाय हैं ॥ धन्य ते जे मीन से अवध अम्बु पाय हैं ॥ तुलसी
सो प्रभु जिनहू के भले भाय हैं ॥ १३९ ॥ राग आसावरी ॥ सजनी हैं कोउ राजकु
मार पंथ चलत मृदु पद कमलन दौ रूप शील आगार ॥ राजिव नयन स्या
म तनु आगे शोभा अमित अपार ॥ डारों वारि अङ्ग अङ्गनि पर कोटि कोटि श
त मार ॥ पाछे गोर किशोर मनोहर लोचन ललित सुठार ॥ कटि तू

तीरकसेकरसरधनुचलेहररणसिनिभार ॥ युगलबीचसुकुमारिनारिए
कराजतिविनहिंसिंगार ॥ इन्द्रनीलहाटकमुक्तामणिजनुपहिरेम
हिहार ॥ अवलोकहु भरिनयन विकलजनिहोहुं करहुसुविचार ॥ सु
निकहुं यहशोभाकहं लोचनदेहगेहसंसार ॥ सुनिप्रियवचनचितैहैं हि
नकैरघुनाथकृपासुखसार ॥ तुलसिदासप्रभुहरेसबनिकेमन तन रहो
नसंभार ॥ ४० ॥ रागटोडी ॥ देखिरी सखी पथिकनखशिखनीकेहैं ॥
नीलेपीलेकमलसेकोमलकलेवरनितापसहुभेषकियेकामकोटिफी
केहैं ॥ सुकृतसनेहशीलसुखमासकेलिसुखविरचेविरंचिकिधौं अ
मितअमीकेहैं ॥ रूपकीसौदामिनीसोहतिसङ्ग उमहुंरमानें आछेस
ङ्ग अङ्ग लीकेहैं ॥ बनपटकसेकटितूणतीरधनुधरेधीरवीरपालक
कृपालसबहीकेहैं ॥ पानहीनचरणसरोजनिचलतमगकाननपठा
येपितुमातकैसेहीकेहैं ॥ आली अवलोकिलेहुनयननिकोफलयेहु
लाभकेसुलाभसुखजीवनसेजीकेहैं ॥ धन्यनरनारिजेनिहारिविनुगु
हकहु आपने आपनेमनमोलविनुबीकेहैं ॥ विबुधबरषिफूलहरषि
हियेकहतयामलोगमगनसनेहसियपीकेहैं ॥ योगीजनअगमद
रश पायोपांवरनमुदितवचनसुनिसुरपतिसचीकेहैं ॥ प्रीतिकेसुपा
लकसेललितसुजनमुनिमगचारुचरितलखणरामसीकेहैं ॥ योग
नविरागयागतपतीरथत्यागयेहीअनुरागभागखुलेतुलसीकेहैं
॥ ४१ ॥ रीतिचलिवेकीचाहिप्रीतिपहिचानिकै अपनीअपनीकहैं
प्रेमपरवशअहैं मञ्जुमृदुवचनसनेहसुधासानिकै ॥ सांवरेकुअर
केचरणकेचराइचीह बधूपगुधरति कहायोंजियजानिकै ॥ युगल
कमलपदअङ्गयोगवतजानगोरेगातकुंअरमहिमामहानिकैजन
कीकहनिलीकीरहनिलहरणसीकीनिनकीगहनिजेपथिकउरआ
निकै ॥ लोचनसजलतनपुलकमगनमनहोतभूरिभागीयथातुलसी
वखानिकै ॥ ४२ ॥ रागकेदारा ॥ जेहिनेहिमगसियरामलखणगत

नहँ नहँ नर नारि बिनु छर छरिगे ॥ निरषि निकाइ अधिक बिय कित
भये विविधि नयन सरयो भासुधभरिगे ॥ जोते विनु बये विनु निफल
निराये विनु सुकृत सुखेन सुखशालि फूलि फरिगे ॥ मुनिहुं मनोरथको
अगम अलभ्य लाभ सुगम सो राम लघु लोगनिको करिगे ॥ लालची कौ
डीके कूर पारस परहैं पालेजानततनको हैं कहाकी वेसी बिसरिगे ॥ बुधि
न विचारन विचारन सुधार सुध देह गेह नेह नाते मनते निसरिगे ॥ वर
षि सुमन सुर हरषि कहैं अनायास भवनिधि नीचनीके तरिगे ॥ सोस
नेह समय सुमिरि तुलसीहु केसे भली भांति भले पैन भले पांसे परिगे ॥
१७३ ॥ वोले राजदेन को रजाय सुभो कानन को आनन प्रसन्न मनमो
द बड़ो काजु भो ॥ मातु पितु बन्धु हित आपनो परम हितु मोको बिधहू के
ईश अनुकूल आजु भो ॥ असन अजीरनको समुझि तिलक तज्यो वि
पिनगवन भले भूषे को सुनाजु भो ॥ धरम धुरीन धीर वीर रघुबीर जू को
कोटि राज सरिस भरत जू को राजु भो ॥ ऐसी बाते कहत सुनत मग लोगन
की चलजान भ्रात दोउ मुनि को सोसाजु भो ॥ ध्याइवे को गाइवे को सेइवे सु
मिरिवे को तुलसी सब भांति सुखद समाजु भो ॥ १७४ ॥ सिरिस सुमन सुकु
मारि सुखमा की सी भव सियराम बड़े ही सकोच सङ्कलई है ॥ माई प्राण
को समान प्रिया हू के प्राण प्राण जानि पानि प्रीति नीति कृपाशील मई है ॥
आलवाल अवध सुकाम तरु काम वेलि दूरि करिके केमी विपानिवे
लिवई है ॥ पापु पानि पूत गुरुजन प्रिय परिजन प्रजाहू को कुटिल दु
सह दशा दई है ॥ पङ्कज से पगनि नपानही परूष पथ कैसे निवहै है ॥
नि है है गैगति नई है ॥ एही सोच सङ्कट मगन मग नर नारि सब को सुमि
त्रि राम राग रङ्गरई ॥ एक कहै विधि दाहिनो हमको भयो उन
की ही पीठ हमको सुडी ठि भई है ॥ तुलसी सहित बन वासी मुनि
हमरी औ अनायास अधिक अघाई बनि गई है ॥ १७५ ॥ राग
गोरी ॥ नीके कै मैन विलोकन पाये सखि येहि मग युग पथिक

मनोहर वधूविधुवदनसमेनसिधायेनयन सरोजकिशोर वय॰
सवरसीस जटारविमुकट वनाये ॥ कटिमुनि वसन तूण धनुशर
करश्यामलगौर सुभायसुहाये ॥ सुन्दर वदविशाल बाहुउरतनु
छविकोटि मनोजलजाये ॥ चितवतमोहि लगी चौंधीसी जानो
न कोन कहाते आये ॥ मनगयो सगसोच वशलोचन मोचतवारि
कितो समुझाये ॥ तुलसीदास लालसादरश की सोइ पुरवै जेहिआ
निदेखाये ॥ १४६ ॥ पुनिनफिरे दोउबीर वटऊ ॥ श्यामलगौरसह
जसुन्दरसखिवारक बहुरि विलोकिवे काऊ ॥ करकमलनिसरसुभ
गसरासनकटिमुनिवसन निषङ्ग सुहाये ॥ भुजप्रलम्बसव अङ्ग मनो
हरधन्यसोजनकजननिजेहिजाये ॥ शरद्विमलविधुवदनजटासिर
मञ्जुल अरुणसरोरुह लोचन ॥ तुलसिदासमनमेंमारगमेंराजतको
टिमदनमदमोचन ॥ १४७ ॥ रागकेदारा ॥ आली काहू तो बूझेनपथि
कहाधौंसिधैहैं ॥ कहांतें आयेहैकोहैंकहानामश्यामगोरेकाजकै॰
कुशलफिरि एहिमग ऐहैं ॥ उठतवयसनसभौजनसलोनेसुठिसो॰
भादेखवैयाविनुवितहीविकैहैं ॥ हियेहरिलेतलोनीललनासमेत
लोचननिलाहुदेतजहांजहांजैहैं ॥ रामलखणसियपथकीकथाप्र
थुलप्रेमविथकीकहनीसुमुखीसवैहैं ॥ तुलसीतिनसरितलेकभूरि
भागजेकसुनिकेसुचिननेहिसमपसमेहैं ॥ १४८ ॥ रागकेदारा ॥ व
हुनदिनवीतिसुधिकछुनलही ॥ गयेजोपथिकगोरेसांवरेसलोनेस॰
खिसङ्ग नारिसुकुमाररही ॥ जानिपहिचानिवितु आपुतेहूतेप्राणहू
तेप्यारेप्रियतमउपही ॥ सुधाकेसनेहहूकेसारलेसांवरे विधिजैसेभा
वतेहैं भांतिजातिनकही ॥ बहुरिविलोकिवेकबहु कहतनुपुलकिन
यनजलधारवही ॥ तुलसीप्रभुसुमिरिग्रामयुवतीसिथिलविनुप्रया
सपरीप्रेमसही ॥ १४९ ॥ रागगौरी ॥ आलीरीवेपथिकजेएहि पथपरौं
सिधाये ॥ तौरामलखण अवधतें आये ॥ सङ्ग सियसव अङ्ग सहज

सुहाये ः रतिकाम बरतु पतिको लजाये ः राजा दशरथरानिको शिला
जाये ः केकयी कुचालि करि कानन पठाये ः बचनकु मामिनिके भूप-
हि क्यों माये ः हाय हाय राय बाम बिधि भरमाये ः कुलगुरु सचिवन
का हू समुझाये ः कौंतु मणि लै अमोल मानि कंगवाये ः भाग मगलोग
निके दरसन पाये ः तुलसी सहित जिन गुणगण गाये ः १५० ः ॥ ॥



सखी जबनें सीता समेत देखे द्वौ भाई ः तबतें परै न कल कछु न सोहाई
नखशिख नीके नीके निरषिनि काई ः तनु सुधि गई मन अनन न जाई
हेरनि बिहसनि हियालिये हैं चोराई ः पावन प्रेम बिबस भई हों पराई ः
कैसो पितु मान प्रिय परिजन माई ः जीवत जीव के जीबन हि पगाई ः स
मन सोचित करि हित अधिकाई ः प्रीति ग्राम बधुन की तुलसी गाई ः
५१ ः जबतें सिधाये येहि मारग लषण राम जानकी सहित तबतें न सुधि
लहीहैं ः अबध गये धों फिरि कैधौं चढे बिन्ध्यगिरि कैधौं कहूं रहे सो कछु न काहू

कहीहै ॥ एक कहैं चित्रकूटनिकटनदीकेनीरपरणकुटीरकरिवसे वातसहीहै ॥ सुनियत भरत मनाइवेको आवत हैं होइगीपै सोई जोविधाता चितचहीहै ॥ सत्यसिन्धुधर मधुरीरघुनाथजूके आपनीनिवाहिवे नृपकीनिरवहीहै ॥ दस चारिवरषविहारवनपदचारकरिवे पुनीतशैलसरसरिमहीहै ॥ मुनिसुरसुजनसमाजकेसुधारिकाजविगरिजहांजाकीरहीहै ॥ पुरपाउधारिहैंतुलसीहूसेजननिजानिकैगरीवागाढगहीहै ॥ १५२ ॥ रागसारङ्ग ॥ एउपहीकोउकुंअरअहेरी ॥ श्यामगौरधनुवाणतूणधरिचित्रकूटअवआइरहेरी ॥ इनहिबहुत आदरतमहामुनिसमाचारमेरेनाहकहेरी ॥ वनितावंधुसमेतवसतवनपितुहितकठिनकलेशसहेरी ॥ वचनपरस्परकहतिकिरातिनि पुलकिगातजलनयनवहेरी ॥ तुलसीप्रभहिविलोकतएकटकलोचनजनुविनुपलकरहेरी ॥ १५३ ॥ चित्रकूटअतिविचित्रसुन्दरवनमहिपवित्रपावनिपयसरितसकलमलनिकन्दनी ॥ सानुजजहांवसतराम लोकलोचनाभिरामवामअङ्गवामावरविश्ववन्दिनी ॥ ऋषिवर तहांछन्दवासुगावतकलिकोकिलासुकीर्तनउनमायकायक्रोधकन्दनी ॥ वरविधान करतगानवारतधनमानप्राणझरतामरझिगझिगझिगजलतरङ्गनी ॥ वरविहारुचरणचारुपाडरचम्पकचनारुकरनहारुवारुपारुपुरपुरम्बनी ॥ येवननवटरत्लारङ्गनमत्तमृगमरालमञ्जुगुंजनहैअलिअलिङ्गनी ॥ चितवतमुनिगणचकोरवैठेनिजठौरठौरअछयअकलङ्कशरदचन्दचन्दनी ॥ उदितसदावनअकाससुदितवदततुलसिदासजयरघुनन्दनजयजनकनन्दनी ॥ १५४ ॥ फटिकशिलामृदुविशालसंकुलसुरतरुनमाललिलितलताजालहरतिछविवितानकी ॥ मन्दाकिनीतटिनितीरमञ्जुमृगविहङ्गभीरधीरमुनिगिरागंभीरसामगानकी ॥ मधुकरपिकवरहिमुखरसुन्दरगिरिनिर्झरझरजलकनघनछांहछनप्रभानभानकीमन॥

तुखतु घलिप्रभाउ सन्नन वहविदिषि चाउजनु विहार कलित अवनिप
त्रवाणकी ॥ विरचिन नहँ परणशाल अति विचित्र लषण लालनिव
सनहं नित कृपाल रामजानकी ॥ निज कर राजीवनयन पल्लव दलर
चित सयन प्यास परस्पर पियूष प्रेम पानकी ॥ सिय अङ्ग लिखे धातु राग
सुमननि भूषण विभाग तिलक कर निक्यों कहौं कला निधानकी ॥ मा
धुरी विलास हास गावत यस तुलसिदास बसति हृदय जोरी प्रियपर
मप्राणकी ॥ ५५ ॥ रागकेदारा ॥ लोने लाल लषण सलोने राम लोनी
सिय चारु चित्रकूट वैठे सुरतरु तरहैं ॥ गौरे सांवरे शरीर पीत नील नीर
जसे प्रेमरूप सुखमा के मनसिज सरहैं ॥ लोने लोने लोचन जटनिके मु
कुट लोने लोने वदन निजीते कोटि सुधकरहैं ॥ लोने लोने धनु बाण वि
षकर कमलनि लोने मुनिपट कटि लोने सर घरहैं ॥ प्रिया प्रिय बन्धु को
देखावत विटप बेलि मञ्जु कुञ्ज शिलातल दल फलकरहैं ॥ ऋषिनके
आश्रम सराहें मृगनाम कहें लागे मधु सरित झरत निर्झर हैं ॥ नाचत बरही
बौकै गावत मधुप पिक बोलत विहगन भजल थलचरहैं ॥ प्रभुहि वि
लोकि मुनि गण पुलके कहत भूरि भाग भये सब नीच नारि नर हैं ॥ तुलसी
सो सुख लाहु लूटत किरात कोल जाको सिसिकत सुर विधि हरि हर हैं ॥
५६ ॥ रागसारङ्ग ॥ आपु रहे जबते दौ भाई ॥ तबते चित्रकूट कानन
छबि दिन दिन अधिक अधिक अधिकाई ॥ सीता राम लखण पद अ
ङ्कित अवनि सुहावनि वरणि न जाई ॥ मन्दाकिनि मज्जत अवलोकत त्रि
विध पाप त्रय ताप नसाई ॥ उकठेउ हरित भये जल थल रुह नित नू
तन राजीव सुहाई ॥ फूलत फलत पल्लवत पलुहत विटप बेलि अभिमत
सुखदाई ॥ सरित सरनि सरसीरुह संकुल सदन सँवारि रमा जनु छाई ॥ कू
जत विहग मञ्जु गुञ्जत अलि जात पथिक जनु लेत बोलाई ॥ त्रिविध स
मीर नीर झर झरनि जहँ तहँ रहे ऋषि कुटी बनाई ॥ सीतल सुभग सिला
पर तापस करत जोग जप तप मन लाई ॥ भये सब साधु किरात कि

ानिनिरामदरश्यधिरिगइ कलुपाई धगमृग मुदित एक संग विहरत सहजविषमवडवयरविहाई कामकेलि वाटिका विवधुवन लघुउपमा कवि कहत लजाई सकलभुवन शोभासकेलि मनोराम विपिन विधि आनि बसाई ॥ वनमिसुमुनिनियमुनिवारलकुवरणत रघुवर विमलबडाई ॥ पुलकिशिथिलतनसजल विलोचन प्रमुदित मनजीवन फल पाई ॥ क्यों कहौं चित्रकूटगिरिसम्पति महिमामोद मनोरनाई ॥ तुलसीजहंबसिलखणरामसिय आनन्द अवधि अवधविसराई ॥ १५७ ॥ रागगौरी ॥ देखतचित्रकूटवनमनअतिहोतहुलाश ॥ सीतारामलखणप्रियतापसवृन्दनिवासरुचिनसुहावनिपावनिपापहरणीपयनाम ॥ सिद्धसाधुसुरसेवितदेनिसकलमनकाम ॥ विटपवेलि नवकिशलयकुसुमितसघनसुजाति ॥ कन्दमूलजलथलरुह अमित अनवनभांति ॥ मंजुलमञ्जुवकुलसुरतरुतालतमाल ॥ करलिकदम्बसुचम्पकपाटलपनसरसाल ॥ भूरुहभूरिभरेजनुछवि अनुरागसुभाग वनाविलोकि लघु लागहि विपुलविबुधवनवाग ॥ जाइनवरणिरामवन चितवन चितहरिलैत ॥ ललितलताद्रुमसंकुलमनहुमनोजनिकेत ॥ सरितसरनिसरसीरुहफूलेनानारङ्ग ॥ गुञ्जतमंजुमधुपगुणकूजतविविधविहङ्ग ॥ लषणकहेउरघुनंदनदेखियविपिनसमाज ॥ मानहुंचयनमयनपुरआयेउप्रियऋतुराज ॥ चित्रकूटपरराउरजानिअधिकअनुरागु ॥ सखासहितजनुरतिपतिआयेखेलनफागु ॥ झिल्लिझांझिझरनाढफपनवमृदंगनिसान ॥ भेरिउपङ्गसुभङ्गरवतालकीरकलगान ॥ हंसकपोतकबूतरबोलतचक्कचकोर ॥ गावतमनहुनारिनरमुदितनगरचहुओर ॥ चित्रविचित्रविविधमृगडोलतडोंगरडाङ्ग ॥ जनुपुरवीथिहविहरतछयलसंवारेस्वांग ॥ नचहिमोरपिकगावहिसुस्वरसुरागवंधान ॥ निलजतरुणतरुणीजनुखेलहिसमयसमान ॥ भरिभरिसूंडिकरिनि

करि जहँ तहँ डारहिं वारि भरत परसर पिचकनि मनहु मुदित नर ना
रि पीठि चढाइ सिसुन कपि कूदत डारहिं डार जनु मुह लाइ लाइगे
रुमसि भरत सरनि असवार ॰ लिये पराग सुमनरस डोलत मलयसमी
र ॰ मनहुं अरगजा छिरकत भरत गुलाल अबीर ॰ काम कौतुकी एहि वि
धि प्रभु हित कौतुक कीन्ह ॰ रीझि राम रतिनाथहि जग विजई वर दीन्ह ॰ दुस
वहु दास मोर जनि मानहु मोरि रजाइ ॰ भलेहि नाथ माथे धरि आयसु च
लेउ बजाइ ॰ मुदित किरात किरातिनी रघुबर भूप निहारि ॰ प्रभु गुन गावत
नाचत चले जोहारि जोहारि ॰ देहि असीस प्रसंसहिं मुनि सुर बरषहिं फू
ल ॰ गवने भवन राखि उर मूरति मंगल मूल ॰ चित्रकूट कानन छवि को के
वि बरनै पार ॰ जहँ सिय लखन सहित नित रघुबर करहिं विहार ॰ तुल
सिदास चांचरि मिस कहे राम गुन ग्राम ॰ गावहिं सुनहिं नारि नर पाव
हिं पद अभिराम ॰ १५८ ॰ राग वसन्त ॥ आजु वन्यो है विपिन देखो राम
धीर ॰ मानो खेलत फागु मुदित मदन बीर ॰ वट वकुल कदम्ब पनस र
साल ॰ कुसुमित तरु निकर कुरवत माल ॰ मानो विविध भेष धरे छयल
यूथ बिच बीच लता ललना वरूथ ॰ पनवानक निर्झर अलि उपंग बो
ल ललत पराबन मनु डफ मृदंग ॰ गायक सुख कोकिल झिल्लि ताल ॰ नाच
त बहु भांति रही मराल ॰ मलयानिल सीतल सुरभि मन्द ॰ वह सहित
सुमन रस रेनु वृन्द ॰ मानो छिरकत फिरत सव निसुरङ्ग ॰ भाजत उदा
र लीला अनङ्ग ॰ कीडन जेते सुर नर असुर राग ॰ हरि सिद्ध मुनिन के प
पहि लाग ॰ कह तुलसिदास तेहि छाडु मयन ॰ जेहि राख राम राजीव न
यन ॰ १५९ ॰ ऋतुपति आये भलो वन्यो समाज ॰ मानो भये है मदन म
हाराज आज ॰ मानो प्रथम फागु मिस करि अनीति ॰ होरी मिस अरि पुर
जारि जीति ॰ मारुत मिस पत्र प्रजा उजारि नगर नगर बसाए विपिन झारि
सिंहासन सैल सिला सुरङ्ग ॰ कानन छवि रति परिजन कुरङ्ग ॰ सित छ
त्र सुमन बल्ली वितान ॰ चामर समीर निर्झर निसान ॰ मधु माधव

हौ अनिपधीर ॥ वरविपुल विटपवानेत वीर मधुकर सुककोकि
लवन्दिवन्द ॥ वरणहिं विशुद्ध पशविविधछन्द ॥ महिपरतसुमनर
सफलपराग ॥ जनु देत इतर नृपकरविभाग कलिसचिवसहितनय
निपुनमार ॥ कियोविश्वविवशचारिहु प्रकार ॥ विरहिनपरनितनई
परइमारि ॥ डांढियहि सिद्धसाधकप्रचारि ॥ तिन कीन कामशकैचा
पिछांह ॥ तुलसीजेवसहिंरघुवीर बांह ॥ १६० ॥ रागमल्लार ॥ सवदि
नचित्रकूटनीकोलागत ॥ वरषाऋतु प्रवेशविशेषगिरि देखतमनअ
नुरागत ॥ चहुंदिसिवन सम्पन्नविहगमृग बोलतशोभा पावतमन
सुनरेशदेशपुर प्रमुदितप्रजा सकल सुखछावत ॥ सोहतश्यामजल
दमृदु घोरतधातुरंगमगे शृंगनि ॥ मनहुं आदि अम्भोज विराजत
सेवितसुरमुनि भृङ्ग निशिषरपरहि पन्नहिमिलतिवगपान्ति सोछ
विकविवरणी ॥ आदिवराहविहरिवारिधि मानोउड्यो है दशनध
रिधरणी ॥ जलयुतविमलशिलनिभलकतनभवन प्रतिविम्बतरङ्ग
मानहुं जगरचनाविचित्रविलसतिविराट अंग अङ्ग ॥ मन्दाकिनिहिं
मिलतझरनाझरिझरिभरि भरिजल आछे ॥ तुलसीसकलसुकृतसु
खलगेमनोरामभक्तिकेपाछे ॥ १६१ ॥ आजु कोमोरु भोर सोमाई ॥
सनोनहरिविहवन्दी धुनिगुणिगणगिरासुहाई ॥ निजनिजपतिसुन्द
रसदननितें रूपशीलछविछाई ॥ लेन असीसशीय आगेकरिमोपे
सुतवधून आई ॥ बूझीहौंनविहसिमेरे रघुवर कहांरीसुमित्रामाता ॥
तुलसीमनुहु महासुखमेरे देखिनभयोविधाता ॥ १६२ ॥ जननीनि
रषतिवाणधनुहियां ॥ वारवारउरनयननिलावनिप्रभुजीकीललित
पनहियां ॥ कवहु प्रथमज्योंजाइजगावतिकहिप्रियवचनसवारे ॥ उ
ठहुतातवलिमातवदनपर अनुजसखासवद्वारे ॥ कवहुं कहतियोंव
डीवारभईजाहु भूपपहिमैया ॥ वन्धुवोलिजैंइजोभावैगईनिछावरिमै
या ॥ कवहु समुझिवनगवनरामकोरहिचकिचित्रलिखीसी ॥ तुलसीरामप

हसमथक हैं तेलागतिप्रीति सखीरी ॥ ९६३ ॥ माई री मोहिनकोउ समुझ
वैरामगवनसांचोकिधौंसपनोमनपरतीतन आवै ॥ लगेरहतमेरेन
यननिआगेरामलखणअरुसीता ॥ तदपिदिनमिटतदाहयाउरकोवि
धिजोभयोविपरीता ॥ दुखनरहैरघुपतिहिविलोकतनतनुनरहैवि
नुदेखे ॥ करतनप्राणपयानसुनहुसखिअरुझिपरीयहिलेखे ॥ कौ
सल्याकेविरहवचनसुनिरोइउठींसवरानी ॥ तुलसिदासरघुवीरवि
रहकीपीरनजातिवखानी ॥ ९६४ ॥ जवजवभवनविलोकतिसूनो
तवतवविकलहोतिकौसल्यादिनप्रतिदुखदूनो ॥ सुमिरतिवालवि.
नोदरामकेसुन्दरमुनिमनहारी ॥ होतिहृदयअतिसलसमुझिपद
पङ्कजअजिरविहारी ॥ कोअवप्रातकलेऊमांगतरूठिचलैगीमाई
स्यामतामरसनयनस्रवतजलकाहिलेउंउरलाई ॥ जियौंतोविपतिस
हौंनिशिवासरमरोमनपछितायो ॥ चलतविपिनभरिनयनरामको
वदननदेखनपायो ॥ तुलसिदासयहदुसहदसाअतिदारुणविरहघ
नेरोदूरिकरैकोभूरिकृपाविनुसोकजनितरुजमेरो ॥ ९६५ ॥ मेरोयह
भिलाषविधाता ॥ कवपुरवैसखिसानुकूलह्वैहरिसेवकसुखदाता ॥
सीतासहितकुशलकोसलपुरआवतहैसुतदोऊ ॥ श्रवणसुधासमव
चनसखीकवआइकहैगोकोऊ ॥ सुनिसन्देशप्रेमपरिपूरणहौंसम्भ्र
मउठिधावौंगी ॥ वदनविलोकिरोकिलोचनजलहरषिहियेमहला
वौंगी ॥ जनकसुताकवसासुकहैमोहिराममलखणकहैमैया ॥ वाहुजे
रिकवअजिरचलहिंगेस्यामगौरदोभैया ॥ तुलसिदासयहिभांतिमने
रथकरतिप्रीतिअतिवाढी ॥ थकितभईउरआनिरामछविमनहुंचित्राल
पिकाढी ॥ ९६६ ॥ सुन्योजवफिरिसुमन्तपुरआयो ॥ कहिहैंकेहाप्राणप
तिकीगतिनृपतिविकलउठिधायो ॥ पापपरतमंत्रीअतिव्याकुलनृपउ
गइउरलायो ॥ दशरथदशादेखिनकह्योकछुहरिजोसंदेशपठायो ॥
दूजिनसकनकुशलप्रियनमकीहृदैघट्टहैपछितायो ॥ सांचेहुसुनवि

योगसुनिवे कहुं चितगविधि मोहि नियायो ॥ तुलसिदासप्रभुजानि निठु
रहों न्यायनायविसराया ॥ हारघुपनिकहिपरयो अवनिजनुनीरमीनवि
लगायो ॥ १६७ ॥ सुराहनमिरे गोमेरोमान सिकपछिताउ ॥ नारिवसन
विचारिकीन्हों काजसोचनराउ ॥ तिलककाजबुलाइ दैवनचौगुणो
चितचाउ ॥ हृदयदारिनज्योंनविहस्यौ ससुकिशीलसुभाउ ॥ सीयरघु
वरलषणविनुभयभभरिभाग्योंनआउ ॥ मोहिवूझिनपरतयातेंकौन
कठिनकुघाउ ॥ सुनिसुमन्त्रकिआनिसुन्दरसुवनसहितजियाउ ॥ दास
तुलसीननहमोकहुमरणअमियपियाउ ॥ १६८ ॥ अवधविलोकिहों
जीवनरामभद्रविहीन ॥ कहाकरिहैआइसानुजभरतधरमधुरीन
रामशोकसनेहसंकुलतनविकलमनलीन ॥ टूटितारोगयनमगज्यौंहो
तसरणसरणसीन ॥ हृदयससुझिसनेहसादरप्रेमपावनमीन ॥ करीतु
लसीदासदशरथप्रीतिपरमितिपीन ॥ १६९ ॥ रागगौरी ॥ करतरायम
नमोअनुमान ॥ शोकविकलसुखवचननआवैविछुरेकृपानिधान ॥
राजदेनकहुवोलिनारिवसमोजोकह्यौंवनजान ॥ आयसुशिरधरि
चलेहरषिहियकाननभवनसमान ॥ ऐसेसुतकेविरहअवधिलोंजो
राखोंयहप्राण ॥ तौमिटिजाइप्रीतिकीपरमितिअयशसुनोनिजकान
रामगयेअजहूंहोंजीवतसमुझतहीअकुलान ॥ तुलसिदासनतु
तजिरघुपतिहितकियोप्रेमपरवान ॥ १७० ॥ रागसोरठ ॥ अबनैकौ
कटुवचनकह्योरी ॥ रामजाहुकाननकठोरतेरोकसधौंहृदयरह्यो
री ॥ दिनकरवंशपितादशरथसोरामलखणसेभाई ॥ जननीतूंज
ननीतोकहाकहोंविधिकेहिखोरिनलाई ॥ होंलहिहौंसुखराजमा
तहैसुतशिरछत्रधरैगो ॥ कुलकलङ्कमलमूलमनोरथतूविनु
कोनकरैगो ॥ ऐहैंरामसुखीसवहैंहैंईशअयशमम्हरिहैं ॥ तुलसिदा
समोहिवडोसोचहैजन्मकौनविधिभरिहैं ॥ १७१ ॥ तातेंहोंदेननद्दूषण
तोहू रामविरोधीउरकठोरतेंप्रगटकियोविधिमोहू ॥ सुंदरसुखदसुशील

सुधानिधिजरणिजाइजेहिजोये ॥ विषबारुणीबन्धुकहियतविधु-
नातेमिटतनधोये ॥ होनेजोनसुजानसिरोमणिरामसबकेमनहारो
तौनेरीकरतूतिमातसुनिप्रीतिप्रतीतिकहारो ॥ मृदुमञ्जुलसांचोस
नेहसुचिसुननभरतवरवाणी ॥ तुलसीसाधुसाधुसुरनरमुनिकहत
प्रेमपहिचानी ॥ १७२ ॥ जौपैहोंमातुमतेमहह्वैहों ॥ तौजननीजगमेंया
मुखकीकहाकालिमाधैहों ॥ क्यौंहोंआजुहोतसुचिसपथनिकौनुमा
निहैसांचीमहिमामृगीकेहिसुकृतीकीखलवचनविशिषतेंवा-
ची ॥ गहिनजानिरसनाकाहूकीकहोजाहिजोसूझै ॥ दीनबन्धुका
रुण्यसिंधुबिनुकोउनहियेकीबूझै ॥ तुलसीरामवियोगविषमविषवि
कलनारिनरभारी भरतसनेहसुधासींचेसबभयेतेहिसमयसुखारी
१७३ काहेकोखोरिकैकयिहिलावौ धरहुधीरबलिजाउंतातमोहिंआ
जुविधनावांवौ ॥ सुनिवियोगदियोगएमकोहोंनहोहुंमोरेप्यारे ॥
तौमेरेनयननिआगेतेंरघुपतिवनहिसिधारे ॥ तुलसिदाससमुझा
इभरतकहंआंसुपोंछिउरलाये ॥ उपजीप्रीतिजानिप्रभुकेहितम
नहुरामफिरिआये ॥ १७४ मेरोअवधधौंकहहुकहाहै करहुराजरघुरा
जचरणतजिलैलटिलोगरहाहै ॥ धन्यमातहौंधन्यलागिजेहिरा
जसमाजढहोहैतापरमोसोप्रभुकरिचाहतसबविनुदहनिदहाहै ॥
समसपथकोउकछूकहोजिनिमैंदुखदुसहसहाहै ॥ चित्रकूटचलि
हौंचलियेकलिसमियेमोहिहहाहै ॥ योंकहिभोरभरतगिरिवरकोमा
रगबूझिगहाहै सकलसराहतएकभरतजगजनमिसुलाहुलहाहै
जानिहिसियरघुनाथभरतकोशीलसनेहमहाहै ॥ कैतुलसीजाकोरा
मनामसोंप्रेमनेमनिबहाहै १७५ भाईहोंअवधकहारहिलैहोंरा-
मलखणसियचरणविलोकनकालिकाननिहिजैहों यद्यपिमोते
कैकुमातनेहैउपतिआईपोचीसनमुखगयेशरणराखहिंगेरघुप
तिपरमसकोची तुलसीयोंकहिचलेभोरहोलोगसकलसंगलागेज

सुवनजरत देखिदारुणाइवनिकासिविहगम्मृगभागे१७६ सुकसीग
हवरहियकहम्मारो ॥ वीरकीरसियराम लखणबिनुलागवजग
अंधियारो ॥ पापिनिचेरिअयानिन्नपहितस्मअपनहितनदिचारो
कुलगुरुसचिवसाधुसोचतविधिकोनवसाङ्ग्गजारो अवलोकेन
चलतभरिलोचननगरकोलाहलभारो सुनेनवचनकरुणाकरके
जवपुरपरिवारसंभारें भैयाभरतभावतेकेसङ्गननतसवलोगसिधा
रो॥ हमपरपाइपिञ्जरानेतरसतअधिकअभागहमारो॥ सुनिख
गकहतअम्बऔंगीरहिरामुग्धिपेमपयन्यारो॥ रोतेप्रभुढिपहुँचा
इफिरेपुनिकरतकर्म्मगुणगारो॥ जीवनजगजानकीलखणके
रमरणमहीपसवारो तुलसीऔरप्रीनिकीचरचाकरतकहान्‌हल
चारो १७७ कहेसुकसुनहिशिषावनआरो विधिकरतवविपरीत
वामगतिरामप्रेमपयन्यारो॥ कोनरनारिअवधरवगम्मृगजेहि
जीवरामतेप्यारो ॥ विद्यमानसवकेगवनेवनवदनकरसकोका
रो॥ अम्बअनुजप्रियसखासुसेवकदेखिविषादनिसारो पक्षी
परवशपरेपीञ्जरनिलेखोकोनहमारो॥ रहीनृपकोनिगहिर
वकीअवरणवसवारनिहारो॥ तुलसीप्रभुनिजचरणपीठिमिसि
भरतप्राणरखवारो १७८ना दिनश्रृंगवेरपुरआयो ॥ रामसखातेस
माचारसुनिवारविलोचनछायो कुससाथरीदेखिरघुपतिकोहेतु
अपनपोजानी कहतकथासियरामलखणकीवेठहिरेनिविहानी
भोरहिभरद्वाजआश्रमह्वेकरिनिखादपतिआगे चलेजमुनतको
तडागतृषितगजघोरघामकेलागे वूझतचित्रकूटकहजेहिने
हिमुनिवालकनिवतायेतुलसीमनह्वफणिकमणिढूढतनिरखि
हरखिहियधाये१७९॥रागकेदारा॥ विलोकेदूरितेद्वोवीरउरग
यतआजानसुभगभुजसामलगौरसरीर सीसजटासरसीरुहलो
चनवनेमुनिपरिधनचीर कटनिषङ्गसङ्गसियसोभितकरनिध

रे धनुतीर मन ॥ अगहुडोततुपुलकसिथिलभयोनलिननयनभ
रे नीर ॥ गडतगे ॥ मानोसकुचपंक महुकढतप्रेमवलधीर तु
लसिदासदशादेखिभरतकीउठिधाये ॥ अतिहिं ॥ अधीर लियउठा
इउरलाइकृपानिधिविरहजनितहरिपीर १८० भरतभयेठाढे



करजोरि है नसकतसामुहसकुचवससमुझिमातकृतखोरि फि
रिहैं किधौंफिरनकहिहैंप्रभुकलिकुटिलतामोरि हृदयशोच
जलभरेविलोचनदेहनेहभइमोरि वनवासीपुरलोगमहामुनि
कियेहैं काठकेसेकोरि दैदै ॥ श्रवण सुननकोंजहंतहं रहेप्रेममन
वोरि ॥ तुलसीरामसुभाउसुमिरिउरधरिधीरजहि वहोरि वोले
वचनविनीतउचितहितकरुणारसहिनिचोरि १८१ जानतहोस
वहीकेमनकी जदपिकृपालुकरौंविनतीसोइसादरसुनदीन
हितजनकी एसेवकसतत ॥ अनन्य ॥ पतिज्यों चातकहियेकगतिघ
नकी यहविचारिगवनहुपुनीतपुरहरहुदुसह ॥ आरतपरिजनकी

मेरोपुनिजीवनजानिय अस जियजस अहिजासुगईमणिफन
कीमेटहुकुलकलङ्क कोशलपतिअघारे ॥ हुनाथमोहिवनकीमे
कोजोइजोइ लाईयलगेसोइसोजौंउत्पतिकुमातपातनकी तुल
सिदाससवदोषदूरिकरि प्रभु अव लाजकरहु निजपणकी १९२ ता
तविचारौंधौंहौंकौं आवौं तुमसुचिसुहृदसुजानसकलविधिवहुत
कहाकहिकहिसमुझावौं निजकरखालखैंचिपानहुतें जौपितुपग
पानहीवनावौं होउंनउरिणपितादशरथतेकसताकोवचनमेटि
पतियावौं तुलसीजाकोसुयशतिहुंपुरक्योंतेहिकुलहिकालिम
लावौं प्रभुरुखनिरखिनिरासभरतभयजान्योसवहिभांतिविधि
वावौं १९३ रागसोरठ ॥ वहुरोभरतकह्योकछु चहैं सकुचसिन्धु·
वोहितविवेककरिवुधिवलवचननिवाहैं छोटेहुतेछोहुकरिआ
ये मैसामुहेनहेरो एकहिवार आजुविधिमेरोशीलसनेहनिवेरो
तुलसीजौफिरिवोनवनै प्रभुतौहौंआयसुपावौं वरफेरियैलखण
लरिकाईनाथसाथहौंआवौं १९४ ॥ रघुपतिमोहिसङ्गकिनलीजे
वारवारपुरजाहुंनाथकेहिकारणआयसुदीजे यद्यपिहौंअति
अधमकुटिलमति अपराधिनकोजायो प्रणतपालकोमलसु·
भाव जियजानिशरणतकिआयो जौमेरेतजिचरणआनगतिक
हहुंकछुराखी तौपरिहरहुदयालदीनहितप्रभुअभिअंतरसा·
खी तातेनाथकहौंमैपुनिपुनिप्रभुपितुमातुगोसांई भजनहीनन
रदेहवृथाखरस्वानफेरुकीनाई वन्धुवचनसुनिश्रवणनयनराजी
वनीरभरिआयेतुलसीदासप्रभुपरमकृपागहिवांहभरतउरलाये१९५
काहेकोमाननहानिहियेहो प्रीतिनीतिगुणशीलधर्मकहुतुमअ
वलम्वदियेहो तातजातजानिवेनऐदिनकरिप्रमानपितुवानी
ऐहो वेगिधरहुधीरजउरकठिनकालगतिजानी तुलसिदास
अनुजहिंप्रवोधिप्रभुचरणपीठनिजदीन्हें मनहुसवनिकेप्राण ॥

पाहरू भरतआसधरिलीहै १८६ विनतीभरतकरजोरे दी
नबंधुदीनतादीनकीकबहूंपरैजनिभोरे तुमसेंतुमहिनाथहो
मोकोमोसेजनतुमकोबहुतेरेइहैजानिपहिचानिप्रीतिछमिबेअ
घऔगुणमेरे योंकहिसीयरामपायनपरिलषणलाइउरलीन्हे
पुलकशरीरनीरभरिलोचनकहतप्रेमप्रणकीन्हे तुलसीबीते
अवधिप्रथमदिनजौरघुबीरनऐहौ तौप्रभुचरणसरोजसपथ
जियतपरिजनहिनपैहो १८७ रागसोरठ अवसिहौंआयसुपा
इरहौंगो जन्मिकेकयाकोषिकृपानिधिक्योंककुचपरिहौंगो भरत
भूपसियरामलषणबनसुनिसानन्दसहौंगो पुरपरिजनअवलोकि
मातसबसुखसंतोषलहौंगो प्रभुजानतजोहिभांतिअवधिलौंबन
पालिनिबहौंगो आगेकीविनतीतुलसीतबजबफिरिचरणगहौंगो
१८८ रागसोरठ प्रभुसोंमैंढीठौबहुतकईहै कीजैक्षमानाथआरतलौंब
हीकछुकिनईहै योंकहिंबारबारपायनपरिपावरपुलकिलईहै
अपनोदिनदेखिहौंडरपततजेहिविषबेलिबईहै आपोसदासुधारि
गोसांयोजनतेंबिगरिगईहै थकेवचनपैरतसनेहसरिपरयोंमानों
घोरधईहै चित्रकूटतेहिसमयसबनिकीबुद्धिविषादहईहै तुल
सीरामभरतकेबिछुरतशिलासप्रेमभईहै १८९ जबतेचित्रकूटतेआ
ये नन्दिग्रामखनिअवनिडासिकुशपर्णकुटीकरिछाये अजिनबस
नफलअसनजटाधरेरहतअवधिचितदीन्हे प्रभुपदप्रेमनेमब्रतनिर
तमुनिनानिमित्तसुखकीन्हेसिंहासनपरपूजिपादुकाबारहिंबारजोहा
रे प्रभुअनुरागमागिआयसुपुरजनसबकाजसम्हारे तुलसीज्योंज्यों
घटततेजतनुत्योंत्योंप्रीतिअधिकाई भयेनहैंनहोंहिंगेकहूंभुव
नभरतसेभाई १९० रागरामकली राखिभांतिभलिभलाईभलीभां
तिभरतस्वारथपरमारथपथीजयजयजगकरत जोब्रतमुनिव
रनिकठिनमानसआचरतसोब्रतलियोचातकज्योंसुनतपातक

रत सिंहासनपरसुभगरामचरणपीठिधरत चालतसवराजका
ज आयसुअनुसरत आगुअवधविपिनवन्धुसोचजरणिजरत
तुलसीसमविषमसुगमअगमलखिनपरत ९१ मोहिभावतिकहि
अवतिनहिभरतजूकीरहनि सजलनयनसिथिलवयनप्रभुगुण
गणकहनि असनवसनसयनधरमगुरुअगहनि दिनदिनपण
प्रेमनेमनिरुपाधिनिरवहनि सीतारघुनाथलखणविरहपीर सह
नि तुलसीतजिउभयलोकरामचरणचहनि ९२ जानीहैं शङ्कर ह
नुमान भरतलखणरामभगति कहतसुगमकरतअगमसुनतमी
ठीलगति लहतसकृतचहतसकलयुगयुगजगमगति रामप्रेम
पथतेंकवहुंडोलतिनाहिडगति ऋधिसिधिविधिचारिसुगति
जाविनुगतिअगति तुलसीतेहिसनमुखविनुविषयठगनिठग
ति ९३ रागगौरी कैकेयीकरीधौंचतुरईकौन रामलखणसियव
नहिंपठाएपतिपठयेसुरभौन कहाभलोधौंभयोभरतकोलगेत
रुणतदौनपुरवासिनकेनयननीरविनुकवहुनेदेखतिहीनकौश
ल्यादिनरातिविसूरतिवैठिमनहिमनमौन तुलसीउचितनहोइ
रोइवोप्राणगएसंगजौन ९४ हाथमीजिवोहाथरह्यौ लगीन
सङ्गचित्रकूटहुतेंह्यौंकहाजातवह्यौ पतिसुरपुरसियरामलख
णवनमुनिव्रतभरतगह्यौ होंरहिघरमसानपावकज्यौंमरिवोईमृत
कदह्यौ मेरोहियोकठोरकरिवेकहविधिकहुंकुलिशलह्यौ तुल
सीवनपहुंचाइफिरीसुतक्योंकछुपरतकह्यौ ९५ हौंतोसरिरही
अपनोसो रामलखणसियकोसुखमोकहभयोसखीसपनोसोजि
नकेविरहविषादवटाउहुखगमृगजीवदुखारीमोहिकहासजनी
समुझावतिहौंतिनकीमहतारी भरतदशासुनिसुमिरिभूपगतिदे
खिदीनपुरवासी तुलसीरामकहतहौंसकुचनिह्वैहैजगउपहासी
९६ आलीहौंइन्हहिंबुझावौंकैसें लेतहियेभरिभरिपतिकेहि

नमातहेतसुतजैसें वारवारहिहिनातहेरितजोवोलतेकोउहारे
अङ्ग लगाइलिपेवारेतें करुणामयसुतप्यारे लोचनसजलस
दारोवतसेखानपानविसराये चितवतचौंकिनामसुनिशो
चरामसुरतिउरआयेतुलसीप्रभुकेविरहवधिकहठिराजहंस
सेजोरे ऐसेउदुखितदेखिहौंजीवतिरामलखणकेघोरे१९७राग
सोरठ ऐधौएकवारफिरिआवो एवरवाजिविलोकिआपनेहुत
हुरेवनहिसिधावो जेपयप्यापपोषिकरपङ्कजवारवारचुचु
कारे कौजीवहिमेरेरामलाडिलेतेअवनिपटविसारे भरतसौगु
णीसुसारकरतहेअतिप्रियजानितिहारे तदपिदिनहुदिनहोतभ
वरेमनहुकमलहिगमारे सुनहुपथिकजौराममिलहिकनकहि
योमातसंदेसो तुलसीमोहिऔरसवहिनतेइनकोवडोअन्देशो
१९८ रागकेदारा काहूसोंकाहूसमाचारऐसपाये चित्रकूटतेरामल
खणसियसुनियतअनतसिधाये शैलसरितानिर्झरवनमुनिथ
लदेखदेखिसवआए कहतसुनतसुमिरतसुखदायकमानसखु
गमसुहाए वडअवलम्ववामविधिघटितविषमविषादवढाये
शिरसेंसुमनसुकुमारमनोहरवालकविंध्यचढाये अवधसकल
नरनारिविकलअतिअंकनिवचनअनभाये तुलसीरामवियो
गशोगवशसमुझतनहिसमुझाये१९९सुनीमेंसखीमङ्गलचा
हसुहाई शुभपत्रिकानिखादराजकीआजभरतकहआई कुशप
सोकुशलक्षेमअतितेहिपललैगुरुपहपहुचाई गुरुकृपालसंभ्रमपु
रघररसारदसवहिंसुनाई वाधिविराधसुरसाधुसुखीकरिऋषिसि
खआशिषपाई कुम्भजशिष्यसमेतसङ्गसियमुदितचलेदोभाई
रेवाविंध्यवीचसुपासथलवसेहैंपर्णगृहछाई पंथकथारघुनाथ
पथिककी तुलसिदाससुनिगाई२००इतिश्रीरामगीतावल्यामयो
ध्याकाण्डसमाप्तम्१ रागमल्लार देखेरामपथिकनाचतमुदितमोर

मानतमनुशनतडितललितघनधनुसुरधनगुरजनिटंकोर कम्मैकल
पवरवरवरहिफिरावतगावतकलकोकिलकिशोर जहंजहंप्रभुविचर
तरैतहंतहंसुसदएडकवनकौतुकनयोरे सघनछाहतमरुचिरज
जनिभ्रमवदनचंद्रचितवतचकोर तुलसीसुनिखगमृगनिसराह
तभयेहैंसुकृतसवइनकीश्रोर २०१रागकल्याण सुभंगशरासन
सायकजोरे खेलतरामफिरतमृगयावनवसतिसोमदुमूरतिमन
मोरे पीतवसनकटिचारुचारिशरचलनकोटिनटसोतृणतोरेश्या
मलतनुश्रमकणराजतज्यौनवघनसुधासरोवरखोरे ललितकं
धवरभुजविशालउरलेहिहिकंठरेखैंचितचोरे अवलोकतमुष
देतपरमसुखलेनशरदशशिकीछविछोरे जटामुकुटसरसीरुह
नयननिगीहैंतकतसुभौहसकोरे शोभाअमितसमातनकानन
उमगिचलीबहुदिशिमिनिफोरे चितवतचकितकुरङ्गकुरङ्गनिस
बभयेमगनमदनकेभोरे तुलसीदासप्रभुवाणचावतसहजसुभा
यप्रेमवशथोरे २०२रागसोरठ भेटेहैंरामलषनअरुसीता पञ्च
वटीवरपर्णकुटीतरकहैंकछुकथापुनीता कपटकुरङ्गकनकम
णिमयलखिप्रियसोंकहतिहंसबाला पाइपालिबेयोगमञ्जुमृग
मारेहुमञ्जुलछाला प्रियावचनसुनिविहंसिप्रेमवशगेंवहिंचा
पशरलीह्नै चल्योसोभाजिफिरिफिरिहेरतमुनिमखरखवारेची
ह्नै सोहतिमधुरमनोहरमूरतिहेमहरिणकेपाछे धावनिनवनि
विलोकनिविथकतिवसैतुलसीउरआछे २०३रागकल्याण क
रशरधनुषकटिरुचिरनिखङ्गप्रियाप्रीतिप्रेरितवनवीथिनवि
चरतकपटकनकमृगसङ्ग भुजविशालकमनीयकंधउरश्रमसी
करसोहैंसावरअङ्ग मानोमुक्तामणिमरकतगिरिपरलसतललि
तरविकिरणप्रसङ्ग नलिननयनशिरजटामुकुटविचसुमनमालम
नुशिवशिरगङ्ग तुलसिदासअसमूरतिकीवलिछबिविलोकिललजेअमित

अनङ्ग॰ २०४ रागकेदारा राघोभावतिमोहिविपिनकीवीथिह्व ध्वनि अरुणाक ञ्जवरणचरणशोकहरणअंकुशकुलिशादिकेतुअभित पवनि सुंदरश्यामलअङ्गवसनपीतसुरङ्ग कटिनिखङ्ग परिकरनिरखनि कनङ्ग कुरङ्ग सङ्ग साजे करशर चापराजिवनमनहरनचितवनि सोहतशिरमुकुटजटा पटलनिकर सुमनलतासहितरचीवनवनि लैसेंडश्रमसीकररुचिरराजनसुखतेतिउल्लसितभ्रुकुटिनकीनवति देखतखगनिकरमृगखनिनजुनथकितविसारिजहं तहंकीभवति हरिदरशनफलपायोहेज्ञानविमलजाचतभक्तिमुनिचाहतजवनि जिनकेमनमगनभयेहैरसरगुणनिके लेखेअगुणमुक्तिकवनिश्रवणसुखकरणिभवसरितातरणिगावततुलसीदासकीरतिपवनि २०५ रागसोरठ रघुवरदूरिजाइमृगमास्यौ लखणपुकारिरामहरुवेंकाहेमरतहुवेपसंभास्यौ सुनहुतातकोउतुमहिपुकारतप्राणनाथकीनाईकह्योलखणहन्योहरिणाकोपिसियहठिपठयेवरआईवन्धुविलोकिकहततुलसीप्रभुभाईभलीनकोहीमेरेजानजानकीकाहुखलछलकरिहरिलीन्ही २०६ आरतवचनिकहतिवेदेहीविलपतिभूरिविसूरिदूरिगएमृगसंगपरमसनेहीकहेकटुवचनरेखनाघीमैंतातक्षमासोकीजे देखिवधिकवशराजमरालिनितखणलालछिनिलीजेवनदेवनिसियकहनकहतियोछलकरिनीचहरीहेंगोमरकरसुरधेनुनाथज्योंलोंपरहाथपरीहों तुलसिदासरघुनाथनामसुनिअकनिगद्धधुकिधायो पुत्रिपुत्रिजिनिडरहिनजेहैनीचमीचहौंआयो २०७ फिरतनवारहिवारप्रचास्यौ चपरिचोंचगुलहनहनिरथपरहपखडकरिडास्यौ विरथविकलकियोछीनिलीन्हिसियघनघायनिअकुलौ तवअसिकाढिपरपांवरलेप्रभुप्रियापरान्यौ रामकाजखगराज आज लरयोजियतनजानकित्यागी

तुलसिदाससुरसिद्धसराहतधन्यविहगबड़भागी २०८ रागगौरी
हेमकोहरिराहनिफिरेरघुकुलमणिलखणललितकरलिये
मृगछाल ॥ आश्रमआवतचलेसगुणनभयेभलफरकोनामबाहु
लोचनविशाल सरितजलमलिनसरनिसूखिनलिनगुञ्जनक
लकूजनमरालकोलिनिकोलकिरातजहंतहंविलपातवननदि
किजातखगमृगमाल तरुजेजानकीलायेजायेहरिकपिहेरेनहं
करिरूरेफलनरसाल जेसुकशारिकापालेमातज्योंललकिला
लेतेऊनपढतनपढावैमुनिबाल समुझिसहमेसुठिप्रयानोनः
ईऊठितुलसीविबरणपरणतृणजाल ॥ औरसोसबसमाजुकुश
लनदेखों ॥ आजुगहवरिहियकहैकोशलपाल २०९ ॥ आश्रमनिर
खिभूलेद्रुमनफलेफूले ॥ अलिखगमृगमानोकबहुंनहेभुलिन
मुनिवधूटीउजरीपरीणकुटीपञ्चवटीपहिचानिठाढेरहेठढेअंम
सलिललियेप्रेमप्रमुदितहियेप्रियानपुलकिप्रियबचनकहैसब
शालनहेरीप्राणबल्लभानटेरीबिरहबिथाकिनखिलखगागदेरेरहे
रघुपतिगतिबिबुधविकल ॥ अतितुलसीगहनिबितदहनदहेहै ॥ अ
जदियोभरोसोतौलोंहैशोचखरोसोसियसमाचारप्रभुजौलोंनलहे
२१०रागसोरठ जबहिंसियसुधिसबसुरनिसुनाई भयेसुनिसजग
विरहसरिपैरनथकेरागयाहसीपाईकसिनूणीतीरघुनुधरधुरधी
रवीरदोभाई पञ्चवटीमोटहिप्रणामकरिकुटीदाहिनीलाई चले
बूझंतवनबेलिविटपखगमृगअलिअवलिसुहाई प्रभुकीदशासो
समोकहिवेकोकविउरआहनआई रटनिअकनिपहिचानिगञ्जु
फिरेकरुणामयरघुराई तुलसीरामहिप्रियाविसरिगईसुमिरि
सनेहसगाई २११ मेरेएकोहाथनलगीगयोबपुबीतिवादिकान
नज्योंकल्पलतादवदागी दशरथसोनप्रेमप्रतिपालयोहुतोस
कलजगसाखी बरबशहरतनिशाचरपतिसोंहठिनजाम॰

कीरखी भरतनमैरघुवीरविलोकेतापसभेषवनाये चाहतचलन
प्राणपांवरविनुसियसुधिप्रभुहिसुनाये वार वार करमीजिशीस
धुनिगद्धराजपछिताई तुलसीप्रभुकृपालतेहिऔसरआइगये
द्वौभाई ॥२१२॥ राघोगद्धगोदकरिलीहो नयनसरोजसनेहस॰



लिलधुनिमनहुंअर्द्धजलदीह्यो सुनहुंलषणखगपतिहिमि
लेवनमैंपितुमरणनजान्यो सहिनश्योसोकठिन विधातापा
स्योपसरूपजुभान्यो वहुविधिराम कह्यो तन राखनपरमधीरन
हिंडाल्यो रोकिप्रेमअवलोकिवदन विधुवचनमनोहरवोल्यो
तुलसीप्रभुभूठेजीवन लगिसमयनधोखलेहौं जाकोनाममर
नमुनिदुर्लभतुमहिकहांपुनिपैहौं ॥२१३॥ नीकेकैजाननरामहि
योहौं प्रणतपालसेवककृपाल चितपितुपटतरहिदियोहौं ॥१॥
तजगयोनिगतगद्धजनमभरिखाईकुजंतुजियोहौं महाराज

सुकृतीसमाजसवकृपरआजकियोहौं अवरा वचन भुखनामरूपच
सुरामउछङ्ग-लियोहौं ॥ तुलसीसीसमानवडभागीकीकहिस॰
कैवियोहौं २१४ मेरेजाननतातकछुदिनजीजे देखियआपुसु॰
अनसेवासुखमोहिपितकोसुखदीजे दिव्यदेह इच्छाजीवनज
गविधिमनाइमाङ्गिलीजै हरिहरसुयशसुनाइदशदेलोगकृ
तारथकीजे देखिवदनसुनिवचनअमियतनरामनयनजलभी
जे वोल्यौविहंग विहंसिरघुवरवलिकहौंसुभायतीजे मेरे
मरिवेसमनचारिफलहोंहिंतोकोनकहीजे तुलसीप्रभुदियोउ
तरुमोवहीपरिमानोप्रेमसहीजे २१५ मेरोसुनियेतात सन्दे॰
शो सीयहरणजनिकहहुपितासोंह्वैहै अधिक अन्देशो रावर
पुण्यप्रतापअनलमहअल्पदिन निरिपुदहिहै कुलसमेतसु
रसभादशाननसमाचारसबकहिहै सुनिप्रभुवचनपानिउरमू
रतिचरणकमलशिरनाई चल्यौनभसुनतरामकलकीरतिअरु
निजभागवडाई पितुज्योंगहक्रियाकरिरघुपतिअपनेधामपठा
यो ऐसेप्रभुविचारितुलसीशठतूं चाहतसुखपायो २१६ रागसूहा
विलावल सेवरीसोइउठीफरकतवामविलोचनवाहु सगुनसु
हावनेसूचतसुनिमनअगमउछाहु छन्दमुनिअगमउरआनन्द
लोचनसजलतनुपुलकावली तृणपर्णशालवनाइजलभरिक
लशफलचाहतचलीमञ्जुलमनोरथकरतिसुमिरतिविप्रवरवा॰
णीभली ज्यौकल्पवेलिसकेलिसुकृतसुफलफूलीसुखकली १
पाणप्रियापहुनेऐहैंरामलषणमोरे आजु जाननजनजियकीमृ
दुचितरामगरीवनेवाजु छन्द मृदुचितगरीवनेवाजुआजुविराजि
हैं गृहआइके ब्रह्मादिशंकरगौरिपूजितपूजिहौं अवजाइकैल
हिनाथहौंरघुनाथवानोपतितपावनपाइकै दुहुओर लाहुअ
घाइहुलसीतीसरेहुगुणगाइकै २ दोनारुचिररचे पूरण कं॰

र फलफूल ऽनुपम ऽमियहूतें ऽम्बक ऽवलोकत ऽनुकूल
छन्द ऽनुकूल ऽम्बक ऽम्ब ज्यौं निजडिम्भहित सब ऽानि
कै छण भवन छण बाहिर विलोकति पुन्य भूपर पाणि कै द्वौ भाइ ऽा
ये सेवरिका के प्रेम प्रण पहिचानि कै श्रवणहि सुनन चली ऽाव
त देखि लखण रघुराउ शिथिल सनेह कहै है सपनो विधि कैधौ
रत भाउ छन्द सत भाउ कै सपनौं निहारि कुमार कौशलराय के
गहे चरणजे ऽघहरण निज जन बचन मानस काय के लघु भाग भा
जन उदधि नमग्यौ लाभ सुख चित चाय के सो जननि ज्यौं ऽादरी
सानुज राम सूबे भाय के ६ प्रेमपट पावडे देत सुऽर्घ विलोचन का
रि ऽपा लै जो दिये ऽासन पङ्कज पाय पखारि छन्द पद पङ्कजा
त पखारि पूजे पन्थश्रम बिरहित भये फल फूल ऽंकुर मूल धरे
सुधारि भरि दोना नये प्रभु खान पुलकित गान स्वाद सराहि सादर ज
नुज ये फल चारि हू फल चारि दहि पर चारि फल शवरी दये ५ सुमन
वर्षि सुर मुनि मुदित सराहि सिहान कहि रुचि कहि सुधा सानुज मो
गि मागि प्रभु खात छन्द प्रभु खात मांगत देत शवरी राम भोगी या
के बालक सुमित्रा कौशिल्ल के पाहुने फल साग के पुलकत प्रसंशा
मिद्ध शिव शनकादि भाजन भाग के सुनि समुझि तुलसी जान राम
हि वश ऽमल ऽनुराग के ६ रघुबर ऽंचइ उठे शवरी करि प्रणाम
कर जोरि हो बलि बलि जो गई मञ्जु मनोरथ मोरि छन्द पुरई मनोरथ
स्वारथहु परमारथहुं पूरण करी ऽघ ऽौगुणन कि कोठरी करि कृपा
मुद मङ्गल भारी तापस किरातन कोल मृदु मूरति मनोहर चित धा
री शिर नाइ ऽायसु पाइ गवनी परम निधि पाले परी ७ सिय सुधि सब
जु कहीन खगेष निरखि निरखि हो भाई दै दै प्रदक्षिणा करति प्रणा
मन प्रेम ऽघाई छन्द ऽति प्रेम मानस राखि रामहि रामधाम
हि सागई नो हि मात ज्यौं रघुनाथ ऽपने हाथ जल ऽंजुलि दइ

तुलसी भनतसेवरी प्रणतिरघुवरप्रकृतिकरुणामई गावनसुनतस
सुरत भगतिहियहोई प्रभुपदनितनई २१७ इतिश्रीरामगीतावल्यां
आरण्यकाण्ड कांडसमाप्तम् ॥ रागकेदारा ॥ भूषणवसन विलो·
कतसियके प्रेम विवशमनकप पुलकतन नीरज नयन नीर भरे
पियके सकुचत कहत समुझिउरउमगतिशील सनेह सगुणगुण
तियके स्वामिदशा लखिलखण सखाकपिपधिले हैं मांट आंच·
मानो घियके शोचतहानिमनगुणिगुणिगये निघट फल सकल·
सुकियके वरणि यामवन्त नेहि अवसर बचन विलोक वीर रस वि
यके धीर वीर सुनिसमुझिपरस्पर वलउपायउड कत निजाहियके
तुलसिदाससह समउकहे कवि लागत निपट निठुर जड़ जिय
के २१८ रागकेदारा प्रभु कपिनायक वोलिकह्यो है वरषागईश
रद ऋतु आई अवलौनहि सियसोधुलह्यो है जाकारणतजिलो
क लाजतनुराखिवियोगसह्यो है ताको तो कपिराजु आजुलगि
कहनकाजु निवह्यो है सुनिसुग्रीवसभीतनमितमुखउत्तरदेन
चह्यो है आइगयेहरिजूथदेखिउर पूरिप्रमोदरह्यो है पठयेवदि
आधेदशहुदिशि चले वल भवनिकह्यो है तुलसी सियलगिभव
दधिनिधिमानोफिरिहरिचहतमह्यो है २१ इतिश्रीरामगीतावल्यां·
किष्किन्दकांडसमाप्तम् ॥ रागकेदारा ॥ रजायसुरामकोजवपायोगा
लमेलिमुद्रिकामुदितमन पवनतनयशिर नायो भालुनाथनल
नील साथचले वली वालिकोजायो फरकिसुअङ्ग भयेसगुणकह
तमानोमग मुदमङ्गललह्यो देखिविवरसुधिपाइगृद्धसों भवनि
अपनुवलुमायोसुमिरिरामतकितरकितोपनिधिलङ्कलूकसो·
आयोखोजतघरघरजनुदरिद्रमनु फिरतलागिधनुपायो तुलसी
सियदिलोकिपुलकौतनु भूरिभागभयो भायो २२० देखी जानकीज
वपाइपरमेंधीरसगीर सुनकेप्रेमउरन समाइ रतरगशरीरसुभायशेषे

तलगीउडिउडि धूलि मनहुं मनसिज मोहनी मरिगयो भोरे भू॰
लि रहनि निशिवासर निरंतर रामराजिवनयन जानि निकट नवि
रहिनी अरि अकनि तनि वचन नाथके गुरुगाय कहि कपिदई मुद्रि
काडारि कथा सुनि उठि लई कर वर रुचिर नाम निहारि हृदय
हर्ष विषाद अति पति मुद्रिका पहिचानि दासतुलसी दशासो केहि
भानि कहे वखानि २२१ रागसोरठ बोलि बलिमुद्रि रीसानुजकुश
लकोशलपाल अमियवचन सुनाइ मेटहि विरह ज्वाला जालु
कहत हित अपमान मैं यो होल हियसो इ सालु रोषक्षमि सुधि करत
कबहुं ललित लखण लालु परस्पर पति देवरहि का होति चरचाच
लुदेविकबहुं केहि हेतु बोले विपुल वानभालु शीलनिधि समर
थसुसाहिबदीनवन्धु दयालु दासतुलसीप्रभुहि काहुनकह्यौ
मेरोहालु २२२ सदल सकलहरणहैं कुशल कृपालु कोशलराउ शी
लसदन सनेह सागर सहज सरल सुभाउ नीद भूषन देवरहि प
रिहरे को पछिनाउ धीरधुरे रघुवीर कोंनहि सपनेहूं चितचाउसे
धविनु अनुरोध कतु को वोधविहितउ पाउ करत हैं सोइ समय॰
साधनफलति वनलवनाउ पठे कपि दिशिदशहुं जे प्रभु काज कु
ठिलनकाउ वोलि लिपहनु सान कियसनमान जानि समाउ द॰
ईहों संकेन कहि कुशलात सियहि सुनाउ देखिदुगी विशेष जा
नकि जानरिपुगति आउ कियो सीय प्रवोधसुदरी दियो कपिहि
लखाउ पाइ अवसर नाइ शिर तुलसी गुणगुरा गाउ २२३ सुप
न समीर को धीर धुरीसा वीरवडोइ देखिगति सियमुद्रिका की॰
बाल ज्यों दियरोइ अकनि कटुवाणी कुटिल की क्रोधविंध्यव
ढोइ सकुचि राम भयो ईश आयसु कलश भव जियजोई बुद्धिव
लसाहस पराक्रम अछत राखो गोइ सकल साज समाज साधक स
मयकह सबकोइ उतरि रुतेन मन तपद सकुचात सोचत सोई चुके

अवसरमन्द्रुसुजनहिसुजनसनमुखहोइ कहेवचनविनीतश्रीतिप्र
तीतिनीतिनिचोइ सीयसुनिहनुमानज्यान्योंभलीभांतिभलोइदे
विविनकरतूतिकहिवोजानिहै लघुलोइ कहेगोमुखकीसमर
सरिकालिकारिखघोइ करतकछुनहिवचनलहरिहियहरष
शोकसमोइ कहतमनतुलसीमिलहूकरौसघनसमोइ २२४
रागकेदारा होरघुवंशमणिकोदूतमानमातुप्रतीतिजानकि
जानुमारुतपूत मैसुनीवातें अशैलीकहिजेनिश्चरनीच क्यों
नमारेगालवैठेकालडाढनिवीच निदरिअरिरघुवीररवललै
जाउंजौहटिआजु डरौंआयसुभंगतें अरुविगरिहैसुरकाजवां
धिवारिधसाधिरिपुदिनचारिमेंद्वौवीर मिलहिंगेकपिभालुद
लसंगजननिउरधरुधीर चित्रकूटकथाकुशलकहिशीसना
योकीश सुहृदसेवकनाथकोसखिदई अवलअशीश भयेशी
तलश्रवणतनमनसनेवचनपियूषदासतुलसीरहीनयननि
दरशहींकीभूष २२५ तातनोहिसोंकेहतहोतिहियोगलानि
मनकोप्रथमप्रणसमुझिअछतननलखिनइगतिभइमातमल
निप्रियकोवचनपरिहरोजियकेभरोसेसङ्गचलीचनवडोलाभ
जानिप्रियतमविरहतोसनेहसरवससुतऔसरकोचूकिवोसरि
षनहानिआरजसुअनकेतोदयादुअनहूपरमोहिशोचमोतेस
वविधिनसानिअपनीभलाईभलोकियोनाथसवहीकोमेरेहीअ
दिनवसविसरीवानि नेमतोपपीहाहीकेप्रेमप्यारीमीनहींकेतुल
सीकहीहै नीकेहृदयआनिइतनाकहीसोकहीसियज्योंहीत्योंही
रहीप्रीतिपरसहीविधिसोनवसानि २२६ मातकाहेको कहति
अतिवचनदीन तवकीतुहींजानतिअवकीहोंही कहनसवके
जियकीजाननप्रभुप्रवीन औसेतोशोचहिं न्यायनिठुरनायकरत
पलमखगकुरङ्गकमलमीन करुणानिधानकोनेज्योंज्योंतनुसी

ण भयो त्यों त्यों मन भयो तेरे प्रेम पीन सिय को सनेह रघुवर की दशा सु
मिरि पवन पूत देख्यो प्रीति लीन तुलसी जन को जननि हिय प्रबोध
कियो समुझि तात जग विधि आधीन २२७ राग जयतिश्री कहो क
पि कब रघुनाथ कृपा करि हरिहैं निज बियोग संभ्रम दुख राजिव
नयन मयन अनेक छवि रवि कुल कुमुद सुखद मयंक मुख विरह
अव लसहाय समीर निज तन जरिवे कहर हीन कछू शाक अति
बल जल बरषत द्वौ लोचन दिन अरु रयनि रहत पेकहित क सु
दृढ़ ज्ञान अवलम्बि सुनहु सुत राखति परण विचारि दहन मतस
गुण रूप लीला विलास सुमिरण कर न रहत अन्तगत सुनहु नुमन्त
अनन्न कंत करुणा सुभाव सुशील कोमल अति तुलसिदास रघु हि
आस जानि जिय वरु दुख सहो प्रगट न कहि सकनि २२८ राग केदार
कबहु कपि राघो आवहिंगे मेरे नयन चकोर प्रीति वश राकाशशि
मुख देखरावहिंगे मधुप मराल मोर चातक है लोचन बहु प्रकार धाव
हिंगे अंग अंग छवि भिन्न भिन्न सुख निरषि निरषि तहं तहं छाविहिंगे
विरह अग्नि जरि रही लता ज्यों कृपा दृष्टि जल पलुहावहिंगे निज वि
योग दुख जानि दयानिधि मधुर वचन कहि समुझावहिंगे लोकपा
ल सुर नाग मनुज सब परे बन्दि कब मुकुतावहिंगे रावण वध रघुना
थ विमल यश नारदादि मुनि जन गावहिंगे यह अभिलाष रहइ नि
दिन मेरे राज विभीषण कब पावहिंगे तुलसिदास प्रभु मोह जनित
भ्रम भेद बुद्धि कब विसरावहिंगे २२९ सत्य वचन सुन मातु जान
की जन के दुख रघुनाथ दुखित अति सहज प्रकृति करुणा निध
न कीत व वियोग संभव दारुण दुख विसरि गई महिमा सुवाण की
नत कहु कहं रघुपति सायक रवि तम अनीक कहं जातुधान की वर
दम पशु शाखामृग चल बात कहेंगे विद्यमान वर कहंह मशिरवरु
प जपुञ्ज ज्ञान घन मदि सिखर निन आपने कहत दृग राद रे

देशसुनिहरिकोवहुत भईअवलम्ब प्राणकीतुलसिदासगुणसुमिर
रामके प्रेम मगन नहिसुधिअपानकी २३०॥रागकेदारा॥रावण
जो पैराम रणरोषे को सहिसकै सुरासुर समरथ विशिष कालदशा
निते चोपेत पवल भुज वलकै सनेह वलाशव विरञ्चिनीकीविधि
नषिसोफल राज समाजसुअन जन आपुन नास अपने पोषेतुला
पिनाकसाहुनृपत्रिभुवनभटवटोरसव केवलजोषेपरसुरामसेशूरि
शिरोमणि पल मे भये षेत के ओषे कालिकि वान वालिकी सुधिकरिस
सुरुहि ताहित खोलि मरोषे कह्यो कुमंत्रिनकोन मानिये वडी हानिजि
यजानिविदोषे जासु प्रसाद जन्मि जगपुरुषनिसागर सृजे खने अरु
पोषेतुलसिदाससोस्वामिन सूक्यौ नयन वीशमंन्दिरकेसेमोषे२३१
रागमारू॥ जोहौं प्रभु आयसुलै चलतौ तौ येहिरिसि जोहि सहित
दशानन जातुधानदल दलतौ रावण सोरसराजसुभटरससहितल
ङ्क खलखलतौ करिपुटपाक नाथ नायकहित घने घर घलतौ वडे
समाज लाज भाजन भयो वडो काज विनु छलतौ लङ्कनाथ रघुनाथ
वयर नरु आजु फैलि फुलि फलतौ कालकर्म्मदिकृपालसकलज
गजाल जासु करतलतौ नारिपुंसौंपर भूमिरारिरण जीवनमरणसु
षलतौ देखौं मे दशकण्ठ सभासव मोते कोउनसवलतौ तुलसीअ
रिउर आनि एक अवएनीगलामिनलगतौ २३२ तौलौंमात आपुनी
केरहिवो जौं लौं हौं ल्यावौं रघुवीर हि दिन द्वै औरदुसहदुखसहिवो
सोषिखेन कै वांधि सेतु करि उतरिवो उदधिन वोहिन चहिवो
प्रवलनुजदलदलिन पल आधमे जीवत दुरितदशाननगहिवो
वीरे वन्दविधवा वनिवनिको देखिवो वारि विलोचन चहिवोसानु
जसैनसमेतस्वामिपदनिरषिपरममुदमङ्गल लहिवोलकदह
उरआनिमानिवो सांच राम सेवक को कहिवो तुलसी प्रभुसुरसुयश
गाइहैं मिटि है सव कोशोचदौ दहिवो२३३ कपिके चलत सियको मन गहवरि

आयो पुलकशिथिलभयोशरीरनीरनयनद्व छायो कहनच
हयो संदेशनहिं कह्योपियकेजियकीजानिह दपसुदुसहदुस
रायोदेखिदशाव्याकुलसुग्रीषमके पथिकज्यौं धरिणिनरणिपा
यो मीचतेनीचलगी अमरताछलकोनबलकोयलनिरषिपरु
पप्रेमपायो केप्रबोधमानप्रीतिसोमन अशीसदीह्वीहै हैतिहारे
ई भायोकरुणाकोपलाजभयभयौकियोगौनमौनहीनचरण
कमलशीसनायो यहसनेहसरवसुसमौतुलसीरसनारूखीत
हितेपरलगायो २३४ रागवसन्त रघुपतिदेखो आयो आयोहनु
मन लंकेशनगरखेल्योवसन्त श्रीरामराजहिनसुदिनसोधिस
खीप्रबोधिलाख्योपयोधि सियपायपूजिआशिषपायफलअ
भियसरिसखायेधायकाननदरिनिहोरेरचिवनाय हठितैलवसन
यारनधिबंधाय दियठेलचलेसंगलोगलागि वरजोरदई चहुंओ
रआगि असतआहुतिकियेजातुधान लखिलपटभभरिभागे
विमान नभललकौतुकलंकाविलाय परिनामपचहिपातकीपा
यहनुमानहाक सुनिवरषिफूलसुरवारबारवरणहिंलंगूल भरिभु
अनसकलकल्याणधूमपुरजारिवारिनिधिवोरि लूमजानकी
तोबिपोषेप्रताप जयपवनसुअनदलितदुअनदाप नांचहिंकूदहिं
कपिकरिविनोदपिवतमधुमधुवनमगनमोद योंकहतलषणग
हेपायआयमणिसहितसुदितभेऊौउठाय लगेसेनसजलभयो
हियहुलासजयजयगावततुलसिदास २३५ रागजयतिश्री
सुनहुराम विश्रामधामहरिजनकसुता अतिविपतिसहतिहैसो
मिऌिवन्धुकरुणानिधिमनमहुरटतिप्रगटहुनहिकहति निजप
दजलजविलोकशोकरतनयननिवारिरहतनएकसरण मनहुंनी
लनीरजशशिसंभवरविवियोगहोश्रवनसुधाकण वहुराससी
सहिनतरुकेतरतुम्हरेविरहानिजजन्मविगोवतिमनहुंदुषद्रुदिषस८

कटमहंबुद्धि विवेकउदय मगुजोवति सुनिकपिवचनविचारिहृद
यहरिअनपाइनीसदासो एक मनतुलसिदासदुखसुखातीतहरि
शोचकरत मानहुं प्राकृत जन २३६ रागकदारा रघुकुलतिलक
वियोगतिहारे मैदेखीजब जाइ जानकी मनहुं विरह मूरतिमन
मारे चित्रसेनयन अरुगढे से चरणकर मढेसे श्रवणनहिं सुनति
पुकारे रसनारटतिनामकरशिर रुचिरहनितनिजपदकमलनि
हारे दरशन आसलालसामन महंराखेध्यान प्राणरखवारे तुलसि
दासपूजतिविजयानीकेरावरे गुणगणसुमन संवारे २३७ अतिहिं
अधिक दरशनकी आरति रामवियोग अशोकविटपतर सीयनिमि
षकल्पसमटारति बारबार वरवारिजलोचन भर भरिवरनवारि
उरढारति मनहुं विरहके सद्य घाय हियें लखितकितकि धरिधी
रतनारति तुलसिदास यद्यपिनिशिवासर छिनछिनप्रभुमूरति
हिनिहारति मिटतिनदुसहतापतउतनुकी यह विचारि अन्तरगति
हारति २३८ तुम्हरे विरह भईगतिजौन चितदैसुनहुरामकरुणा
निधिजानौं कछुपैसकोकहिहौंन लोचननीरकृपणकेधनज्यौं
रहतनिरन्तर लोचनकोंन हाधुनिखगीलाजपिंजरेमहंराखिहियें
बडवधिकहठौंन जेहिवाटिकावसतितहं खगमृगतजितजिभजे
पुरातनभौन स्वाससमीर भेटभईभोरेहु तेहिमगु पगुनधस्यौतिहु
पौन तुलसिदासप्रभुदशासीयकीमुखकरिकहतहोतिअतिगौन
दीजेदरशदूरिकीजैदुखहौतुमआरतिआरतहौन २३९ कपिकेसु
निकलकोमलवचन प्रेमपुलकिसवगातशिथिलभयेभरेसलि
लसरसीरुहनयन सियवियोगसागर नागरमन बूडनलग्योसहि
तचित चयन लहीनाव पवनजप्रसन्नतावरवसतहांगह्यौगुण
मयन शकतनबूझिकुशलबूझेविनुगिराविपुलव्याकुलउर अयन
ज्यौंकुलीनसुचिसुमतिवियोगिनि सन्मुख सहै विरहशरपयनधरि

धरिवीरकोशलपतिकिपेयत्वशकेउतरुनदयन तुलसिदासप्रभुस
खाअनुजसोंसयनहिकह्यो चलहुसजिसयन २४० रागमारूज
वरघुवीरपयानोकीह्नो छुभितसिंधुडगमगतमहीधरसजिसारं
गकरलीह्नो सुनिकठोरटंकोर घोरअतिचौंकेविधित्रिपुरारिजटा
पटलतेचलीसुरसरीशकेनसंभुसंभारि भयेविकलदिकपालस
कलभयभरेभुअनदशचारि खरभरलङ्कसशङ्कदशाननगर्भस्र
वहिअरिनारिकटककटातभटभालुविकटमर्कटकारकेहरिनाद कूदत
करिरघुनाथसपथउपराविवाद गिरितरुधर्नखमुखकरालरदबलह
करतविषाद चलेदशादिशिरिसभरिधरुधरुकहिको वराकमनु
जाद पवनपंगुपावकपतंगशशिदुरिगरथकेविमान पाचतसुर
निमिषसुरनायकनयनभारअकुलान गयेपूरिसरधूरिभूरिभय
अगथलजलधिसमान नभनिशानहनुमानहांकसुनिसमुझत
कोउनअपान दिग्गजकमठकोरा हसाननधरतधरणिनवीरवा
रहिवारअमरषतकरघतकरकैपरीशरीर चलीचमूचहुओरसोर
कछुवनैनवरणतभीर किलकिलातकसमसतकोलाहलहोतनी
रनिधितीरजातुधानपतिजानिकालवशमिलेविभीषणआई सर
णागतपालककृपालुकियोतिलकलियोअपनाइ कौतुकहीवारिध
वंधाइउतरेसुवेलतटजाइ तुलसिदासगढदेखिफिरेकपिप्रभुआ
गमनसुनाइ ३४१ रागआसावरी आयेदूतदेखिसुनिशोचवशटमन
मे वाहिरवजावैगालभालुकपिकालवशमोसेवीरशोचहतजीत्यै
ए रणमेरामकामलरिकालहरणवालिवालकहिघालिकोगणत
अटसजलऔनघन काजकोनकपिराजकायरकपीसमाजमेरेअनु
मानहनुमानुहरिगणमे समय सयानीरानीमदुवानीकहैपियपावक
नहोहिजातुधानवेणुवनमे तुलसीजानकीदियेस्वामीसोसनेहकिंवे
कुशलनततरुसवहैहेवारसरणमे ३४२ आपनीआपनी भांतिसवक

हूंकहीहै मन्दोदरीमहोदरमालिवानमहामतिराजनीतिपहुंचजा
हांलोंजाकीरहीहै महामदअन्धदशकन्धन करतकानमींचुव
रानीवहुठकु गहनिगहीहै हंसिकहैं सचिवसयानेनमोसोकहतच
हतमेरुउडगनवडीवयारवहीहै भालुनरवानरअहारनिश्चरनि
कोसोउनृपवालकनिभागीधारिलहीहै देखोकालकौतुकपपील
कनिपखलागेभागमेरेलोगनिकेभईचितचहीहै तोसोनतिलोक
आजुसाहससमाजुसाजुमहाराजुआयसुभोजोईसोईसहीहै तुल
सीप्रणामकैविभीषणविनीतिकहै ख्यालवेधेतालकपिकाललङ्क
दहीहै २४३ दूसरोनदेखतसाहिवसमरामे वेदऽपुराणकविकोवि
दविरतरतजाकोयशसुनतगावतगुणगाने मायाजीवजगजालसु
भावकरमकालसवकोसासकसवमेसवुआमे विधिसेकरणहार
हरिसेपालनहारहरसेहरणहारजपहिं जाकेनामे सोईनरवेषजा
निजनकीविपतिमानिमोनोनाथसोईजानेंभलोंपरिनामे सुभटसि
रोमणिकुठारपाणिसारिषेहुंलखीआपालखाई इहांकियेशुभसामे
वचनविभूषणविभीषणवचनसुनिलागेदुखदूषणसेदाहिनेउवा
मे तुलसीहमकिहियेहन्योलातभलेतातचल्यौसुरतरुताकितजि
घोरघांमे २४४ जायमायपायपरिकथासोसुनाईहै समाधानुकरत
विभीषणकोवारवारकहाभयोनाततातमारेवडेभाईहै साहिवपि
तुसमानजातुधानकोतिलकताकेअपमानतेरीवड़ीयैवडाईहै गए
तगलानिजानिसनमानिशिखदेतिरोषकियेदोषसहेसमुझेभलाई
है इहांतेविमुखभयेरामकीशरणगयेभलोनेकुलोकुराखेनिपटनि
काई है मातपगशीसनाइतुलसीअशीसपाइचलेभलेसगुणकह
नमनभाईहै २४५ धाईकोसोकरांउरौकठिनकुफिरेसुकृतसङ्कट
सौजालगत्यानिहूगहौकृपानिधिकोमिलौयैमिलिकैकुवेरजाय
हपायआयचलकठारमेरचौसमाचारधायपोचशोचतसुमरेरह

ईमिलेमहेशादिरनहलउपदेशरामकीशरणजाहिसुदिननहेरेजा·
कोनामकुंभजकलेशसिंधुसोषिवेकोमेरोकह्योमानिनातवांधेजानि
वेरे तुलसीसुदिनचलेपायेहैशगुणभलेरङ्क·लूटिवेकोंमानोंमणिगण
टेरे २४६ रागकेदारा शङ्करशेषआशिषपाईकै चलेमनहिमनकह·
तविभीषणशीसमहेशहिनाइकै गयेशोचभयेशगुणसुमंङ्गलदश
दिशिदेतदेखाइकै सजलनयनसानन्दहृदयतनप्रेमपुलकअधि
काइकै अन्तहुभागलोभाईकीकियोअतभलोमनाइकै भइकुवेरकी
लानविधानाराखीवातवनाइकै नहितोकोंकुवेरघरामिलिहरहित
कहतेचितलाइकै जोसुनिसगुणरामताकेनिजवामताविहाइकै अ
नाआस अनुकूलमूलधरमगमुदमूलजनाइकै कृपासिंधुसनमा·
निजानिजनदीनलियोअपनाइकै स्वारथपरमारथकरतलगतश्रम
पथगयोसिराईकै सपनोकैसोदुखसुखशशिसुरसींचनदेतनिराइ
कै गुणो····रीशसोंदसीनापतिहितहनुमानहिजाइकै मिलिहौं
मोहिकहाकीनेअवअभिमतअवधिअघाइकै मरतोंकहांजाइकै
जानैलटिलालचीललाइकै तुलसिदासभजिहौंरघुवीरहिअभय
निसानवजाइकै २४७ पदप रागरीवनिवाजकै देखिहोंजाइपाइलो
चनफलहिनसुरसाधुसमाजकेगईवहोरओरनिर्वाहकसाजक
विगरेसाजकेशवरीसुखदगृद्धगतिदायकसमनशोककपिराजके
नाहिनमोहिऔरकलहूकछुजैसेंकागजहाजके आयोशरणसुख
दपदपङ्कजचौयेरावणराजेकआरतिहरणशरणसमरथसवदि
नअपनेकीलाजके तुलसीपाहिकहतननपालकमोसेनिपरनि
काजके २४८ महाराजरामपाहिजाउंगोसुखस्वारथपरिहरिकरि
होसोइज्योंसाहिवहिसोहांउगोशरणगतसुनिवे·गिवोलिहै हौं
निपटहिसकुचाउंगो रामगरीवनिवाजनिवाजिहैंजानिहैठा
कुरठांउगों घारहैंनाथहाथमाथेएहितेकेहिलाभअघाउंगोस

पनोसो अपनोकक्कू लखिलघुलोचन लोभाउंगो कहिहों वलिसे
टिहाएवरोंविनमोलहीं विकाउंगो तुलसीपटऊतरे ओढि हौंउ
वरिजूठनिखाउंगो २४९ आइसचिवविभीषणके कही कृपासिं
धुदशकंधवन्दुलघुचरणशरणआयोसही विषमविषादवारिनि
धिवूडतथाहकपीशकथालही गयेदुखदोषदेषिपदपङ्कज अव
लसाधसकोरही शिथिलसनेहसराहतनखशिखनीकीनिकाई
निरखही तुलसीमुदितदूत भयेमनमें अमियलाहुमांगतमही
२५० विनतीसुनिप्रभुमुदितभये ऋक्षराजकपिराजनीलनलवो
लिवालिनन्दनलये वूझियकहाउजाइपाइनयधर्मीसहितउतरद
येवलीवन्धुताकोविमोहवशवयरीजवरवसवयेवांहपगारहारले
तेरेसमयनकवहु फिरिगयेतुलसी अशरणस्वामिकेविरदवि
राजतनितनये २५१ हियविहसिकहतहनुमानसों सुमतिसाधु
सुचिसुहृदविभीषणवूझिपरत अनुमानसों होंवलिजाउं औरको
जानैकहिकपिकृपानिधानसोंकुलीनहोइस्वामीसन्मुखज्यों
तिमिरसंतिहैभानसों खोटोखरोसभीतपालियेसोसनेहसनमा
नसोंतुलसीप्रभुकीवोजोभलोसोइवूझिसरासनवाणसों २५२ सगावे
दारसंवेहुविभीषणआइहैवूझतिविहंसिकृपालुलखणसुनि
कहतसकुचिशिरनाइहै ऐहेकहानाथ आयोह्यांकोकहिजात
वनाइहै रावणारिपुहिराखिरघुवरविनुकोत्रिभुवनपतिपाइहैप्रभु
प्रसन्नसवसभासराहतिदूतवचनमनभाइहै तुलसीवोलियेवेगि
लखणसोभईमहाराजरजाइहै २५३ चलेलेनलखनहनुमानहैं
मिलेमुदितवूझिकुशलपरसपरसकुचतकरसनमानहैं भयोरजाय
सुपाइधारियेवोलतकृपानिधानहैं दूरितेंदीनवन्धुदेखेजनदेत
अभयवरदानहैं शीलसहसहिमवानतेजशतकोटिभानुहुकेभानहैं
भक्तनिकोहितकोटिमातुपितुअरिहुकोकोटिकृशानहैं जनगुणर

जगिरिगणसकुचत निजगुणगिरिनरपरवानहै बाँहपगारबोल
को अविचलुवेदकहतगुणगानहैं चरचा चलनि विभीषणकीसो
इसुनतसुचितदैकानहैं चारु चापतूणीरनामरसकरनि सुधारत
वाणहैं हरषनसुरवर्षतप्रसूनसुभसगुणकहतकल्याणहैं तु
लसीतेकुनककृत्यजेसुमिरतसमयसुभावनध्यानहै २४१ एमैकर



त प्रणामनिहारिकै उठे उमगि आनंदप्रेम परिपूरण विचारिकै
भयेविदेह विभीषणउतइतप्रभु अपनपोविसारिकै भलीभां
तिभावते भरतज्यों भेट्यो भुजापसारिकै सादरसबहि मिलाइसम
जहिनिपटनिकरवैठारिकै वूझतकुशलसेमसप्रेम अपनाइभरोसे
भारिकै नाथकुशलकल्याणसुमङ्गल विधिसुखसकलसुधारिकै
देतलेतजेनामराबरो विनयकरतमुखचारिकै जोमूरतिसपनेन
विलोकतमुनिमहेशमनमारिकै तुलसीतेहिहौंलियोअङ्कभरिकहस.

कछु न सवारि कै २५५ करुणाकर की करुणा भई मिटी मीचु लहि
लंका शंक गई काहू सों न खुनिस खई दशसुख न ज्यौं दूध माखी ज्यौं
आपु काढि साढी लई भवभूषण सोइ कियो विभीषण मुदमङ्गल
महिमामई विधिहरिहरमुनिसिद्ध सराहत मुदित देवदुंदुभि दई
वारहिं वार सुमन वरषत हिय हरषन कहि जय जय जई कौशिकशि
ला जनक शंक दहर भृगुपति की टारी दई षग मृग सवर निशाचर स
व की पूजी विनु वादी सई युग युग कोटि कोटि करतव मित कररी नक
छु वरणी नई राम भजन महिमा हुलसी हिय तुलसी हू की वानि गई २
५६ मंजुल मूरति मङ्गल मई भयो विलोकि विशोक विभीषण नेह देह सुधि
रीनगई उठि दाहिनी ओर तें सन्मुख सुखद माँगि वैठ लई नखशिष निर
षि निरषि सुरदपावत भावत कछु कछुक भई वार कोटि शिर काटि साटि ल
टि रावण शंकर ये लई सोई लंक लखि अतिथि अनवसर राम तृणा य
मज्यों दई प्रीति प्रतीति रीति शोभा सरिया हत जहँ नहँ थई वाहु व ली
वाने न वोल को वीर विश्वविजई नर्द कौ दयालु दूसरो दुनी जेहिं जरनि
दीन हिय की हई तुलसी का को नाम जपत जग जगती जामति विनुव
ई २५७ सव भाँति विभीषण की वनी कियो कृपाल अभय कालहु तें गई संसृति
सासनि घनी सषा लषण हनुमान शंभु गुरु धनी राम कोशल धनीहि
यहि और ओर की हौं विधि रामरूप औरे टनी कलुषकलङ्क कले
श कोश भयो जो पद पाई रावण रणी सोई पद पाइ विभीषण भो भव
भूषण दलँदूषण अपनी वाँह पगारु दार शिरोमणि प्रतपालक पावन प
णी सुमन वरषि रघुवर गुण वरणत हरषि देव दुन्दुभि हनी रङ्क नि
वाज रङ्क राज किये गये गर्व गिरि गिरि गनी राम प्रणाम महामहिमा
कर सकल सुमङ्गल मणि जनी होइ भलो ऐसे हि अजहुँ गये राम शरण
परिहरि मणी भुजा उठाइ साखि शंकर करि कसम खाइ तुलसी भनी २५
८ कै कौं न विभीषण का वने गयो छाडि छल शरण राम की जो १

फलचारिचारौजनैमङ्गलमूलप्रणामजासुजगमूलअमंगल
केखनैनेहिरघुनाथहाथमाथेदियोकोताकीमहिमाभनैनामप्रता
पपतितपावनकियेजेनअघानेअघनिअघनेकोउदरनटोकोऊख
धोजपिभयेहैंसबापसतनैहुतोल्लातकृशगातखातखरिमोद
पाइकोदृकणौसोतुलसीचातकभयोजाचतरामश्यामसुन्दरघनै
२५९ अपतिभागविभीषणकेभलेएकप्रणामप्रसन्नरामभयेदुरित
दोषदारिद्रदलेरावणकुम्भकरणवरमागतशिवविरञ्चिवाचा
छलेरामदरशपायोअविचलपदसुदिनसगुणानीकेचलेमि
लेनिविरनोकिस्वामिसेवककीठकठतरुफूलेफलेतुलसीसुनि
सनमानबन्धुकोदशकन्धरहंसिहियजले २६० गएरामशरणस
बकोभलोगनीगरीबबडोछोटोबुधमूढहीनबलअतिबलोपङ्गु
अन्धनिर्गुणीनिसम्बलजोनलहैयाचेचलोसोनिवह्योनीकेज
नमिजगराजमारगचलोरामप्रतापदिवाकरकरोगरततु
हिनज्यौंकलिमलोसुनहितनामलेतभवनिधितरिगयोअजामि
लसोखलोप्रभुपदप्रेमप्रणामकामतरुसद्यविभीषणकोफलोतुल
सीसुमिरतनामसबनिकोमङ्गलमयनभजलथलो २६१ सुयशसुनि
श्रवणहींनाथआयोशरणउपलकेवटगृद्धसबरीससृतिशमनशो
कश्रमसींचसुग्रीवआरतिहरणरामराजीवलोचनविमोचनविप
तिश्यामनवतामरसदामवारिदवरणलसतजटाजूटशिरचारुमुनि
चीरकटिधीररघुवीरतूणीरसरधनुधरणजातुधानिशभ्राताविभीषण
नामबन्धुअपमानगुरुग्लानिचाहतगरणपतितपावनप्रणतपाल
करुणासिंधुराखिएशरणसौमित्रिसेवितचरणदीनताप्रीतिसंकुलि
तमृदुवचनसुनिपुलकतनप्रेमजलनयनलागेभरणबोलिलङ्के
शकहिअङ्कभरिभेटिप्रभुतिलकदियोदीनदुखदोषदारिद्रदरणाय
निवरजातिआसनसबभांतिगनकियोकल्याणभाजनसुमङ्गल

र रणादासतुलसीसदयहृदयरघुवंशमणिपाहिकहेकाहिकीहोन
नारणा२६२दीनहितविरदपुराण निगमगोआरतबन्धु कृपालुमृदु
लचितजानिशरणाहों आयोतवरिपुकोहों अनुज विभीषण वंशमनि
शाचरजायो सुनिगुणशीलसुभावनाथकोमैचरणनिचितलायो
जानतप्रभुदुखसुख दासनिकोताते कहिनसुनायो करि करुणाभ
रि नयनविलोकहु तबजानौ अपनायो वचन विनीत सुनतरघु
नायकहंसिकरिनिकटबोलायो भेट्योहरि भरि अङ्क भरतज्यौंल
ङ्कापतिमनभायो करपङ्कजशिरपरसिअभयकियोजनपर हेतुदे
खायो तुलसिदासरघुवीरभजनकरिकोनपरमपदपायो२६३राग
धनाश्री सत्यकहौं मेरोसहजसुभाउ सुनहु सखाकपिपतिलङ्का
पतितुमसोकोनदुराउ सबविधिहीनदीनअतिजडमतिजाकोक
तहुं नठांउ आये शरणभजो नतजो तेहि यह जानत ऋषिराउ जिनके
होहिनसवप्रकारचितनाहिन औरउपाउ तिनहिलागिधरिदेहक
रौंसवडरौंन सुयशनसाउ पुनि पुनि भुजाउठाइकहतहौं सकलसभ
पतिआउ नाहिनकोउ प्रिय मोहि दाससम कपटप्रीतिवहिजानसु
निरघुपतिकेवचन विभीषणप्रेममगनमनचाउ तुलसिदासतजि
आसवासखबजैसे प्रभुकहंगाउ२६४ नाहिनभजिवेयोगवियोऔर
घुवीरसमानआनकोपूरणकृपाहियो कहेहु कौनसुरशिलातारि
मुनिकेवर मीतकियो कौने गढ अधमकोपितुज्यों निजकरपिण्ड
दियोकौनदेवसेवरीकेफलकरिभोजनसलिलपियो वालित्रासवा
रिधिबूडतकपिकेहिगहिवाहलियो भजनप्रभाउविभीषणभाष्यो
सुनिकपिकपटजियो तुलसिदासकोपतिकोशलपतिसवप्रकारव
रियो२६५रागजयतिश्री कवदेखोंगीनयनवहमधुरमूरति राजी
वदलनयनकोमलकृपाअयनमयननिवहछविअङ्क निदरनि
शिरसिजटाकलापपाणिसायकचापउरसिरुचिरवनमालसूरनि

तुलसिदासरघुवीरकीसोभासुमिरिभईहैमगननहितनुकीसुरति॥२
९६॥रागकेदारा॥कहुकबहुदेखिहोंआलीहोंआरजसुअनसानुजसु
भगतनजबतेंबिछुरेबनतबतेदवसीलागीतीनहुभुअनमूरतिसु
रतिकियेप्रगटप्रियतमहियेमनकेकरनचाहेचरणछुअनचित
चाटेमोचियोगदरसनकहिबेयोगपुलकगातलागेलोचनचुअनतु
लसीत्रिजटाजानिसीयअतिअकुलानीमृदुबानीकह्योऐसेहैंदे
वनदुअननमीचरननमहारीसुरकुञ्जसुखकारीरविकुलरविअब
चाहतनअन॥९७॥अबलौमैंतोसोंनकहेरीसुनुत्रिजटाप्रियप्राणना
थबिनुबासरनिसिदुखदुसहसहेरीविरहविषमविषबेलिबढीउर
गुरुखसकलसुभायदहेरीसोइसींचिबेलागिमनसिजकेरहटनय
ननितरहतनहेरीस शरीरसुखप्राणवारिचरजिवनआसतजि
चलनचहेरीतेप्रभुसुयशसुधासीतलकरिराखेतदपिनलभल
हेरीरिपुरिसिघोरनदीविवेकबलधीरसहितहुतेजानबहेरीदैमु
द्रिकाटेकिततेहिऔसरसुचिसमीरसुतपैरिगहेरीतुलसिदाससब
सोचपोचमृगमनकाननभरिपूरिरहेरीअबसखिसियसंदेहपरिह
रुहियआइगयेदोउवीरअहेरी॥९८॥रागविलावलसोदिनसोनेको
कहुकबऐहैजादिनबन्ध्योसिंधुत्रिजटासोतूसम्भ्रममोहिआ
निसुनैहैबिभ्रदेवनसुरसाधुसतावनरावणकियोआपनोपैहैक
नकपुरीभयोभूपविभीषणविबुधसमाजविलोकनधैहैदिविदु
न्दुभीप्रसंसिहैमुनिगणनभतलबिमलबिमाननछैहैपरषिहै
कुसुममानुकुलमणिपरतबमोहिपवनपूतलैजैहैअनुजसहित
ऐभईहैकौसिकमहतनुछबिकोटिमनोजहिनैहैइननयननयेभांति
प्राणपतिनिरषिहृदयआनन्दसमैहैबहुरोसदलसनाथसलक्षण
कुशलकुशलविधिअवधदेखिहैगुरुपुरुलोगसासुदोउदेवरमिल
तदुसहउनतपतबिनैहैमङ्गलकलसबधावनघरपैहैमांगनजो।

जेहि भैहै विजयरामराजाधिराजकोतुलसिदासगावनयशगैहै ३६९
सियजियधीरजधरियराघवश्रवधैहै पवनपूत [illegible] जोरिसुधि
सहजकृपालुबिलम्बनलैहैं सेनसाजिकपिभालुकालसमकौतुक
हीपायोधिवधैहैं घेरोईदेखिवोलङ्कगढकिकलजातुधानीपछितै
हैं निचरशलभकृशानुरामशरउडिउडिपरतजरतजउ जैहैं रावण
करिपरिवारअगमनोपमसुरजानवहुतसकुचैहै तिलकसारि
श्रपनाइविभीषणश्रभयबांहदैश्रमरवसैहैं जयधुनिमुनिवर्षि
हैंसुमनसुरव्योमविमाननिसानेबजैहैं वन्धुसमेतप्राणवल्लभपदप
रसिसकलपरितापनसैहैं रामवामदिशिदेखितुमहिसवनयनयच
लोचनफलपैहैं तुमश्रपनिहितचितइहोनाथतनुवारवारप्रभुतुमहि
चितैहैं येहशोभासुखसमयविलोकनकाहूतोपलकेनहि लैहैं
कपिकुललखणसुयशजयजानकिसहितकुशलनिजनगरवसै
हैं प्रेमपुलकिआनन्दमगनमनतुलसिदासकलकीरतिगैहै ३७०
इतिश्रीरामगीतावल्यांसुन्दरकाण्डसमाप्तम् ५ रागमारू मानुस
जहुंगिरवपरिहरिकोधपियपूरोश्रायोतकाहिकहुकरिरघुवीर
विरोधजेहिनाडिकासुवाहुमारिमखराखिजनायोश्रापुकौतुक
हीमारीचमीचमिसप्रगटयोविशिषप्रतापुसकलभूपवलगर्वस
हिततोचोकठोरशिवचापु व्याहीजेहिजानकीजीतिजगहरोप
रसुधरदापु कपटकाकसासतिप्रसादकरिविनुश्रमवध्योविरा
धुखरदूषणत्रिशिरकबन्धहतिकियेसुखीसुरसाधुएकहिवा
णवालिमारयोजेहिजोवलउदधिश्रगाधुकहुघोंकन्तकुशलवी
तीकेहिकियेरामश्रपराधुलांघिनसकेलोकविजईतुमजासुश्रनु
जकृतरेखुउतरिसिन्धुजारयोप्रचारिपुरजाकेदूतविशेषु कृपासि
धुखलचनक्षमासुसमयश्रजावनसुनिशेषु सोइविरदैतवीरकोश
लपतिनाथसमुझिजियदेषुमुनिपुलस्तिकेयशमयङ्कमहकन

कलङ्कहठिहौहि औरप्रकारउउबारनहीकहुंमैदेष्योजगटोहिच
लुमिलिवेगिकुशलसादरसियसहितअग्रकरिमोहितुलसि
दासप्रभुशरणायदसुनिअभयकरैगेतो ॥२७॥ रागकाह्नरा तूदशकं



॥भलेकुलजायो गामहुशिवसेवाविरञ्चिवरभुजबलवि॰
पुलजगतयशपायो खरदूषणत्रिशिरकबन्धरिपुजेहिवालि
यम लोकपठायोताकोदूतपुनीतचरितहरिसुभसंदेशकरणाहौं
आयोश्रीमदन्धपअभिमानमोहवशजानतअनजाननहारल्यायो
ताजिव्यलीकभजिकारुणीकप्रभुदैजानकिहिसमुझायोवोनेतव
हितहोंहिकुशलअचलराजचलिहैनचलायो नाहितरामप्रतापअ
नलमहुहैपतंगपरिहैशठधायोयद्यपिअङ्ग॰ दनीतिपरमहितक
ह्यौतथापिनककुमनभायोतुलसिदाससुनिवचनक्रोधअतिपाव॰
कजरतमनहुघृतनायो ॥२८॥ नैमेरोमरमकछुकनाहिंपायो रे…

कपिकुटिलढीठपसुपांवरमोहिदासजज्यौंडांटनआयो भ्राताकुम्भ
करणिरिपुघातकसुतसुरपतिहिं वंधकरिल्यायो निजभुजवल अति
अतुलकहौंक्यौंकन्दुकज्यौंकैलाशउठायो सुरनरअसुरनागखगकि
न्नरसकलकरतमेरोमनभायो निरखरुचिरआहारमनुजतनुजाकोप
शखलमोहिसुनायो कहाभयोवानरसहायमिलिकरिउपायजोसिंधु
वंधायो जीतरिहै भुजवीशचोरनिधिऐसोकोत्रिभुवनमेजायोसु
निरअशीसवचनकपिकुञ्जरविहंसिईशमायहि शिर नायो तुलसि
दासलंकअकालवशगणतनकोटियतनसमुझायो २०३ रागकाहग
सुनखलमैंनोहिवहुतवुझायोयेतेमानशठभयेमोहवशजानतहू
चाहतविषखायो जगतविदितअतिवीरवलजानतहौंकिधौंअव
विसरायो विनुप्रयाससोउहत्योएकशरशरणागतपरप्रेमदेखायो ·
पावहुगेनिजकर्मजनितफलभलेठौरहठिवयरवढायोवानरभा
लुचपेटनिमारतनववढ़ैहैंगढ़छितायो होंहींदशननोरिवेलायककं
हाकरौंजोनआयसुपायो अवरघुवीरवाणविदलितउरसोवहिगो
रणभूमिसुहायो अविचलराजविभीषणकोसवजेहिरघुनाथचर
णचितलायो तुलसिदासएहिभांतिवचनकहिगर्जतचल्यौवालि
नृपजायो २०४ रागकेदारा रामलषणउरलाइलएहैं भरेनीरराजी
वनयनसवअङ्गपरितापनयेहैं कहतससोकविलोकवन्धुमुख
वचनप्रीतिगुथयेहैं सेवकसखाभक्तिभायपगुणचाहतअवअथये
हैं निजकीरतिकरतूतितातनुमसुकृतीसकलजयेहैं मैंतुमविनु
तनुराखिलोकअपनेअवलोकलयेहैं मेरेप्रणकीलाजइहांलोंह
ठिप्रियप्राणदयेहैं लागतसागविभीषणहीपरसीपरआजुभये
हैं सुनिप्रभुवचनभालुकपिगणासुरसोचसुखायगयेहैं तुलसी
आइपवनसुतविधिमनोफिरिनिरमयेनयेहैं २०५ रागसोरठ
मोपेतोनककुह्वैआईओरनिवाहिभलीविधिभायपचल्यो

लषणसे भाई परपितु मातु सकल सुख परिहरि जहि वन विपति व टाई ताको कहा सुर लोक गोकत निम्य कोन प्राण पठाई आनत हों या उर कठिन सौं कुलिश कठिन गापाई सुमिरि सनेह सुमित्रा सुत को दर कि दरार न जाई तात मरण निप हरण गृह वध भुज दाहिनी गंवाई तु लसी मै सब भाँति आपने कुलहि कालिमा लाई २७६ मेरो सब पुरषार थ थाको विपति वटावन बन्धु बाहु विनु करो भरोसो काको सुनु सु- ग्रीव साचेहूं मोपर फेरो वदन विधाता ऐसे समय समर संकट हौं तज्यों लषण से भ्राता गिरि कानन जैहैं सारवामृग हों पुनि अनुज संघाती हैहै कहा विभीषण की गति रही शोच भरि छाती तुलसी सुनि प्रभु वचन भालु कपि सकल विकल हिय हारे जामवंत हनूमं न्त वोलि तव औसर जानि प्रचारे २७७ एग मारू जोहों अव अनु सासन पावों तो चन्द्रमहि निचोरि चैल ज्यौं आनि सुधा शिर नावों के पाताल दलौं व्याला वलि अमृत कुण्ड महि ल्यावों भेदि भुअन करि भानु वाहिरो तुरत राहु दै तावों विवुध वैद्य पर्व राअनो धरि तौ प्रभु अनुग कहावों पर कौमी चुनीव मूख कज्यौं सव हि को पा पव हावों तुम्हरे हि कृपा प्रतापने हारे हिने कु विलम्बन लावों री जे सोई आयसु तुलसी प्रभु जेहि तुम्हरे मन भावौ २७८ सुनि हनु- मन्त वचन रघुवीर सत्य समीर सुअन सव लायक कह्यो राम धरि धीर चाहिय वैद्य ईश आयसु धरि शीश कीश वल अयन आन्यो स दन सहित सोवत ही जौं लौं पलक परयन जियें कुधर निशि मिलेम् लि का कीही विनय सुख पन उठ्यौ कपीश सुमिरि सीतापति चल्यो सजीवन लषन कालनेमि दलि वेगि विलोक्यो द्रोणाचल जिय जा नि देखी दिव्यौषधी जहां तहं जरी न परि पहिचानि लियो उठाइ क धर कन्दुक ज्यों वेग न जाइ वखानि ज्यों धाये गज राज उधारण स पदि सुदर्शन पाणि आनि पहार जोहार प्रभुकि यो वैद्यराज उपचा

र करुणासिंधु बन्धु उठि भेट्यो मिट्यो सकल दुष भार मुदित भालु कपि
कटक लह्यो जनु समर पयोनिधि पार बहुरि ठौर हीं राखि मही धरल्या
यो पवन कुमार सेन सहित सेवकहि सराहत पुनि पुनि राम सुजान
बरषि सुमन हिय हरष प्रशंसन बिबुध बजाइ निशान तुलसिदास
सुधि पाइ निशाचर भयो मनहु बिनु प्राण परी भोर ही रारि लङ्क गरद
ईहां कह हनुमान २७९ राग केदारा कौतुक ही कपि कंधर लियो है
चल्यो नभ नाइ माथ रघुनाथहि सरिस न बेगि बियो है देख्यो जात
जानि निशिचर बिनु फर सर हन्यो हियो है पर्यो कहि राम पवन राख्यो
गिरि पुर तेहि तेज पियो है जाइ भरत भरि अङ्क भेटि निज जीवन दा
न दियो है दुख लघु लखण मरम घाय तन सुनि सुख सखी कीश जि
यो है आय सुइ ले स्वामि शङ्क ठउत पर लन कछू कियो है तुलसिदास
बिहस्यो अकाश सों कैसे के जात सियो है २८० भरत शत्रुसूदन बि
लोकि कपि चकित भयो है राम लखण रण जीति अवध आये कै
धों मोहि भ्रम कैधौं काहूं कपट ठयो है प्रेम पुलकि पहिचानि जानि
कै पद पद्म नियो है कह्यो न परत जेहि भांति दुहु भाइन सनेह सों सो
उर उलाइ लायो है समाचार कपि गहरु भो ते हि लापत यो है कुधर
सहित चढ़ो बिशिष बेगि पठवो सुनि हरि हिय गर्व गूढ़ पयो है तीर
ते उतरि जस कह्यो चहै गुणगण निज यो है धन्य भरत धन्य भरत भयो
मगन मौन रह्यो मन अनुराग रयो है यह जलनिधि खन्यो मथ्यो लं
घ्यो बंध्यो अंचयो है तुलसिदास रघुबीर बन्धु महिमा को सिन्धु तु
रि को कपि पार गयो है २८१ होतो नहिं जौ जगत जनम भरत को तो
कपि कहत कृपाण धार मग चलि आचरत बरत को धीरज धर्म धरणि
धर हुं ते गुरु धरु धरणि धरत को सब सद्गुण सनमानि आनि उर अ
घ औगुण निदरत को शिव हु न सुगम सनेह राम पद सुजननि सुल
भ करन को सर जि निज यश सुरतरु तुलसी कहुं अभिमत फरनि फरन को अ

सुनिरणधायललखणरायपेरेहै स्वामिकाजसंग्रामसुभटसोंलोहेल
लकारिलरेहैं सुभ्रनशोकसन्तोषसुमित्रहिरघुपतिभक्तिवरेहैं सि
ण शिराणगातसुखातसिणहि सिराहु लसत होत हरेहैं कपिसोंकह
तिसुभाय अम्वके अम्वक अम्वुभरेहैं रघुनन्दनविनुवंधुकभोस
रयद्यपिधनुदुसरेहैं तातजाहु कपिसंगरिपुसूदनउठिकरजोरि
खरेहैं प्रमुदितपुलकिपैंतपूरेजनुविधिवरासुढरढरेहैं अम्वअ
नुजगतिलखिपवनजभरतादिगलानिगरेहैं तुलसीसवसमुक्ष
इमानतेहि समयसचेतनकरेहैं २९३ रागकेदारा विनयसुनायवीर
परिपाय कहो काहकपीशशुचिसुमतिसुहृदसुभाय स्वामिसङ्क
टहेतुहोंजडजननिजनम्योजाय समीपाइकहाइसेवकघट्यो
तोनसहाय कहतशिथिलसनेहभोजनुधीरघायलधाय भरतग
तिलखिमातसवरहिज्योंगुडीविनुवायु भेटहिंकहिंवोकह्योयोंक
ठिनमानसमाय लाललोने लखणसहितसुललितलागतनाय
देखिवन्धुसनेहअम्वसुभाउलहाणकुठाय तपत तुलसीतर
शित्रासकुपेहिनयेतिहु ताप २९४ हृदयघाउमेरे पीर रघुवीरे
पाइसचिवनिजागिकहतयोंप्रेमपुलकिविसरेशरीरे मोहिकह्य
पूछतपुनिपुनिजैसेपाठअरथचरचाकीरे शोभासुखछविलाहु
भूपकहंकेवलकांतिमोलहीरे तुलसीसुनिसौमित्रिवचनसवध
रिनसकतधीऐधरिउपमाराम लखणकीप्रीतिकीक्योंदीजैसीरे
नीरे २९५ रागकान्हरा राजतरामकामशतसुंदर रिपुरणजीतिअनु
जसंगशोभितफेरतचांपविशिषवनरुहकर श्यामशरीररुचिरश्र
मसीकरशोणितकणविचवीचमनोहर जनुखद्योतनिकरहरहित
गणभ्राजनमरकतशैलशिखरपर घायलवीरविराजतचहुंदि
शिहरषितसकलऋरसअरुवनचर कुसुमितकिंसुकतरुसमूह
महंतरुणतमालविशालविटपवर राजिवनयनविलोकिकृपा

कारियेअभयमुनिनागविबुधवर तुलसिदासपद रूपअनूपमहूद-
पसरोजन्वसि दुसह विपति हर २९६ राग असावरी अवधिआज
किधौं औरो दिन द्वैहै चढि धवरहरविलोकि दखिए दिशि वृन्धौ
पथिक कहाते आयेवेहें वहु रिविचारिहारिहियशोचत पुलकगात
लागे लोचन चैहै निज वासरनिवरषपुरवैयो विधिमेरेतहंकरम
कठिनकृतवेहै वनरघुवीरमातुगृह जीवति निलज प्राणसुनि-
सुखलैवैहै तुलसिदासमोसो कठोरचितकुलिशसालभंजी कोहै
है २९७ आली अवरामलषणकितद्वैहै हैं चित्रकूटतजयौं नवतेन
लहीसुधिवधूसमेतकुशलसुतद्वैहै वारिवयारिविषम आतप
सहिविनुवसनभूमितलखेहैं कन्दमूलफलफूलअसनवनभो
जनसेहिनमिलतकसवैहें जिनहि विलोकिसोचिहैं लताद्रुम
खगमृगमुनिलोचनजलद्वैहै तुलसिदासतिन की जननीहौं-
मीसी निठुरऔर कहुं केहें २९८ राग सोरठ वैठीसगुनविचारतिमा
ता कव ऐहैं मेरेवालकुशलघर कहहु कागफुरिवाता दूधभात
की दोनी देहौं सोने चोच मंढैहौं जव सियसहितविलोकिनयनभ
रिएमलषणउरलैहौं अवधिसमीपजानिजननीजियअतिआतु
रअकुलानी गणकवुलाय पायपरि पूछतिप्रेममगनमृदुवाणीते
हि औसरकोउभरतनिकटतेंसमाचारलेआयो प्रभुआगमनुसुन
ततुलसीमानोमीनभरतजलपायो २९९ रागगौरी हेमकरीवलि
वोलिसुवाणी कुशलक्षेमसियरामलषणकवऐहैं अवध अवध
रजधा असिसुरिककुङ्कमनरणिसुलोचनमोचनिशोचनिवेदव-
खानी देविदयाकरिदेहिदरशफलजोरिपाणिविनवहिसवरा
नीसुनिसनेह मयवचननिकटद्वै मञ्जुलमण्डलकेमडरानीसु
भमङ्गलआनन्दगगनधुनिअकनिअकनिउरजरनिजुडानी
फरकनलागे सुअङ्ग विदिशिदिशिमन प्रसन्नदुखदृश्यशिरानीक

उपहार लिये सीयसहित आसीन सिंहासन निरषिजो हारतरषिहि ये मङ्गल गान वेद धुनि जयधुनि मुनि अशीसधुनि भुअनभरे बर षि सुमन सुर सिद्ध प्रशंसत सब के सब सन्ताप हरे राम राज भइ काम धेनु महि सुख सम्पदा लोक छाये जन्म जन्म जानकीनाथ के गुणग ण तुलसिदास गाये २९३ इति श्री रामगीतावल्यां लङ्का काण्ड समा प्तम् ६ बनते आइ के राजा राम भये भुआल मुदित चौदहु भवन सब सुर सुखी सब सब काल मिटे कलुष कलेश कुलक्षण कपट कुपंथ कुचाल गये दारिद दोष दारुण दम्भ दुरित दुकाल कामधुक महि कामतरु उपल मणिगण लाल नारि नर तेहि समय सोहत भरे भाग सु भाल बरण आश्रम धर्मरत मन वचन भेष मराल राम सिसेवक स नेही साधु सुमुख रसाल रामराज समाज बरणत सिद्धि सुर दिगपाल सुमिरि सो तुलसी अजहु हिय हर्ष होत बिशाल २९४ राग ललित भोर जानकी जीवन जागे सूत मागध प्रवीण बेणु बीणा धुनि धोर गा यक सरस रागे श्यामल सलोने गात आलस बस जमात प्रिया प्रेमर स पागे उनीदे लोचन चारु मुख सुखमा शिंगारु हेरि हारे मारु भूरि भागे सहज सहाई छवि उपमा न लहै कवि मुदित विलोकन ला गे तुलसिदास निशिवासर अनूप रूप रहत प्रेम अनुरागे २९५ रा ग कल्याण रघुपति राजीव नयन शोभा तनु कोटि मयन करुणार स अयन चयन रूप भूप माई देखो सखि अतुलित छवि सन्तक न्नकानन रविगावन करत कीरति कविकोविद समुदाई मज्जन करि सरजु तीर ठाढे रघुवंश बीर सेवत पद कमल धीर निर्मल चित लाई ब्रह्म मण्डली मुनिन्द बृन्द मध्य इन्दु वदन राजत सुखसदन लो क लोचन सुखदाई विथुरित शिर रुह वरुथ कुंचित विच सुमन जू थ मणियुत शिशु फणि अनीक शशि समीप आई जनु सभीत दे अंको र देखु युगल चिर मोर कुण्डल छवि निरखि चोर सकुचत अधिकाई ल

लतभृकुटितिलकभालचिबुकऽधरद्विजरसालहासचारुतर
कपोलनासिकासुहाईमधुकरयुगपङ्कजबिचशुकबिलोकिनी
रजपरलरतमधुपऽवनिमनोबीचकियोजाईसुंदरपटपीतबिश
दभ्राजतबनमालउरसितुलसिकाप्रसूनरचितबिबिधबिधिबनाई
तरुतमालऽधबिचजनुत्रिबिधकीरपांतिरुचिरहेमजालऽन्त
रपरितातेंनउड़ाईशङ्करहृदपुण्डरीकनिवसतहरिचञ्चरीक
निर्ब्यलीकमानसगृहसन्ततरहछाईऽतिशयआनन्दमूलतु
लसिदाससानुकूलहरणसकलशूलऽवधमण्डनरघुराई२६
६राजतरघुबीरधीरभञ्जनभवभीरपीरहरणसकलसरजुतीर
निरखहुसखिसोहैंऽनुजमनुजनिकरसङ्गकरणदनुजबलबि
भङ्गऽङ्गऽङ्गछबिऽनंगऽगनितमनमोहैंसुखमासुखशील
ऽयननयननिरखिनिरखिनीलकुंचितकचकुण्डलकलनासिक
चीतपोहैंमनहुंइन्दुबिम्बमध्यकञ्जमीनखंजनलखिमधुपमक
रकीरऽायनकिनकिनिजगौहैंललितगण्डमण्डलसुबिशाल
भालतिलकझलकतऋजुरमयङ्कऽङ्करुचिरबङ्कगौहैंऽरुणऽ
धरमधुरबोलरदनदमकदामिनिद्युतिहुलसनिहियहंसनबा
रुचितबनितिरछोहैंकम्बुकण्ठभुजबिशालउरसितरुणतुलसि
मालमञ्जुलमुक्तावलियुतजागतिजियजोहैंजनककालिन्दनन्द
नीमणिन्द्रनीलशिखरपरसिधसतिलसतिहंससेनिशंकुलऽ
धिकोहैंदिव्यतरदुकूलभव्यनव्यरुचिरचम्पकचयचञ्चलाक
लायकनकिनिकरऽालिकिधौंहैंसज्जनरसपुरुषनिकेतभूषण
मणिगणसमेतरूपजलधिबपुषलेतमनगयन्दबोहैंऽपकनि
वचनचातुरीतुरीयपेमपेखिमगनपगनपरतइतउतसबचकि
ततेहिसमोहैंतुलसिदासयहसुधिनाहिंकोनकीकहांतेऽाइको
नकाजकाकेढिगकोनठांउकोहैं२६७देखुसखिऽाजुरघुनाथ

मयूरगिहारु चारु चंदन मनहुं मरकत शिखर लसत निहारु रु॰
चिर उरउपवीत राजत पदिक गजमणिहारु मनहुं सुर धनु न॰
खत्रगण विचतिमिगंजनिहारु विमलपीत दुकूल दामिनि द्युति
विनिंदनिहारु वदनसुखमासदनशोभित मदनमोहनिहारु
सकल अङ्ग अनूपनहिकोउसुकविवरणनिहारु दास तुलसीनिर
षतेहिंसुख लहतनिरषिनिहारु ॥३०१॥ सखिरघुवीरमुखछविदे॰
खु चित्तभीतसुप्रीतिरङ्ग स्वरूपता अवरेखु नयनसुषमानिरषिन
गरिसुफलजीवन लेखु मनहुं विधियुगजलजविरचे शशिसुपूर
णामेखु भृकुटिभालविशालराजितरुचिर कुंकुमरेखु भ्रमर द्वैर
विकिरणल्यायेकरगाजनुउनमेखु सुमुखकेशसुदेशसुन्दरसुम
नसंयुतपेखु मनहुंउडगणबाहु आयोमिलनतमतजिदेखु श्र॰
वणकुण्डलमनहुंगुरुकविकरतवादविशेखु नासिकाद्विजअ
धरजनुरह्योमदनकरिबहुवेषु रूपवरणिनसकतनारदशंभुशा
रदशेषु कहैतुलसिदासकौंमतिमंदसकलनरेषु ॥३०२॥ राग जयति
श्री देखोराघोवदनविराजत चारु आनन वरणि वितोक तहीं सु॰
खसुख किधौं छविवरनारिशिंगारु ॥ रुचिरचिवकरदजोतिअनू
पम अधर अरुणसितहासनिहारु मानोशशिकरवश्यो चहतक
मलमहुं प्रगटतदुरतनवजतविचारु नाशिकसुभगमनहुंशुक
सुन्दर चितवतचकितार्थ्यअपारु कलकपोलमृदुवोलमनोह
रीलिचिन चतुरमयनापोवारु नयनसरोजकुटिलकचएडलभ
कुटिसुभालतिलकशोभासारु मनहुं केतुकेमकर चापशरगेवि
सरिमेमोहितमारु निगमशेषशारदशुकशंकर वरणतरूपनपा
वतपारु तुलसिदासकहकहौंकवनविधि अतिलघुमतिजड॰
कूरगंवारु ॥३०३॥ राग ललित आजुरघुपतिमुखदेखलागत
सुखसेवक निरषिशोभाशारदशशिसिहार रशनवदनलाल

विशद हांसरसाल मानोहिमकरकररारवेराजीवमनाइ अरुणनय-
नविशाल ललितभृकुटिभालतिलकचारुकपोलचिवुकनाशा सुहा
इ वियरे कुटिलकचमानहुं मधु लाल च अलिनलिनयुगल ऊपर
रहे लोभाई श्रवणसुन्दरसमकुण्डलकलयुगमतुलसिदास अनूपउ
पमा कहीनजाइ माना मरकतसीपसुन्दर ससिसमीप कनकमकरयु
नविधिविरचेवनाइ १०४ ॥ राग भैरो ॥ प्रातकालरघुवीर वदनछ
विचितयचतुरचितमेरे होंहिं विवेकविलोचननिर्मलसफलसुशी-
तलनेरे भालविशाल विकट भ्रकुटीविचि तिलकरेखरुचिराजै मन
हुंमदनतमतकिमरकत धनुयुगल कनकशरसाजे रुचिरपल-
क लोचनयुगतारकश्याम अरुणासितकोये जनु अलिनलिनकोश
महुंवधुकसुमन सेजसजिसोये विलुलित ललित कपोलनिपर
कचमेचक कुटिल सुहाये मानो विधु महं वनरुह विलोकि अ-
लि विपुलसकौतुक आये शोभित श्रवणकनककुण्डलक
ल अवलंवित भुजमूले मनहु केकितकि गहन चहत युग-
इन्दुप्रमिकूले अधर अरुणतर दशनपांतिवर मधुर मनोह
रहासा मनहुं शोन सरसिजमहुं कुलिशनिनडितसहितकृत
वासा चारुचिवुक शुकतुण्डविनिन्दक सुभगसुउन्नतनाशा तु
लसिदास छविधामराम मुख सुखदश मन मवचासा १०५ ॥
राग केदारा ॥ सुमिरनश्रीरघुवीरकी वांहैं होतसुगमभवउद
धि अगम अति कोउलांघतकोउउतरतथाहैं ॥ सुन्दरश्यामश
रीरशैलतें धसिजनुदैयसुना अवगाहैं अमित अमल जलपरि
पूरण जनु जनमीशिङ्गारसविनाहैं धारैं वाण कूलधनुभूषण
जल चरभमर सुभगसवधाहैं विलसतिवीचिविजयविरदाव-
लिकरसरोज शोहनसुखमाहैं सकल भुवनमङ्गलमन्दिरके
द्वारविशालसुहाई शाहैं जेपूजीकौशिकमखऋषियनिजनकग

गयशङ्करगिरिजाहै भव धनुदलिजानकीविवाहीभयेविहालन पालतपाहै परसुपाणि जिनकियेमहामुनिजेचितये कतहू नकपाहै जातुधानतियजानि दियेगिनिदुखदई सीयसुनाइकुचाहै तिनरिपुमारिसुररिनारितेइशीसउघारि देवाईधाहै दशमुखविवशतिलोक लोकपतिविकलविनायेनाकचनाहै सुवसवसेगावत जिनकोयश अमरनागनर सुमुखसनाहै जेभुज वेदपुराणनवाहैं करिआईकरिहैं करतीहै तुलसिदासदासनिपरछाहे ३०६ ॥

रागभैरो रामचन्द्रकरकञ्ज कामतरुवामदेवहितकारी सियसनेहवरवेलिवलितवरवन्धुप्रेमवरवारी मञ्जुलमङ्गलमूलमूलतरुकदमनोकुरसाखा रोमपरसानखसुमनसुफलसव कालसुजनअभिलाखा अविचलअमलअनामयअविरलललितरहितछलछाया शमनसकलसन्तापपापरुजमोह मानमदमाया सेवहिंशुचिमुनिभृङ्गविहगमनमुदितमनोरथपाये सुमिरतहियहुलासतुलसीअनरागउमगिगुणगाये ३०७ रामचरणअभिरामकामप्रदतीरथराजविराजे शङ्करहृदैभक्तिभूतलपरप्रेमअक्षयवटभ्राजे श्यामवरणपदपीठअरुणतललसतिविशदनखश्रेणी जनुरविसुताशारदासुरसरिमिलचलिललितत्रिवेणी अङ्कुशकुलिशकमलध्वजसुन्दरभ्रमरतरङ्गविलासा मज्जहिंसुरसज्जनमुनिजनमनमुदितमनोहरवासा विनुविरागजपयागयोगव्रतविनुतीरथतनुत्यागे सवसुखसुलभसद्यतुलसीप्रभुपदप्रयागअनुरागे ३०८ रागविलावल रघुवररूपविलोकुनेकुमन सकललोकलोचनसुखदायकनखशिखसुभगश्यामसुन्दरतन चारुचरणतलचिह्नचारिफलचारिदेतपरचारिजानिजन राजतनखजनुकमलदलनिपरअरुणप्रभारञ्जिततुषारकण जंघाजानुआनुउरुकटिकिङ्किणिमणिपटपीतसुहावनरुचिरनिषङ्गनाभिरोमा

वलिविवलिवलितउपमाकछुपावन भृगुपद चिह्न पदिकउर शोभितमुक्तामालकुङ्कुमअनुलेपन मनहु परस्पर मिलिपङ्कजर विप्रगणोनिज अनुराग सुयशघन बाहु विशाल ललित शायक धनुकर कङ्कनके पूर महाधन विमलदुलदलनदामिनि द्विजिय ज्ञोपवीत लसत अतिपावन कम्बुग्रीव छविसींव चिबुकद्विज अध रकपोल बोल भयमोचन नासिक सुभगकृपाकरि पूरणतरुणअ रुणराजीवविलोचन कुटिलभृकुटिवरभालतिलक रुचि अुचि सुन्दरतर श्रवणविभूषन मनहुंमारिमनसिजपुरारि दियेशशिहि चापशरमकरअदूषण कुञ्चितकचकञ्चन किरीटशिर जटित जोतिमय बहुविधिमणिगण तुलसिदासरविकुलरविछवि कवि कहिनसकतशुकशम्भुसहसफण ३०९ रागकाहरा देखोरघुप तिछवि अतुलित अति जनुतिलोक सुख मास केलि विधिराखी रुचिर अङ्ग अङ्ग निप्रति पद्मरागरुचिमृदुपदतलध्वजअङ्कुश कुलिशकमल एहि सूरति रही आनि बहुविधिभकन की जनु अ नुराग भरी अन्तरगति सकलसुचिह्न सुजनसुखदायकऊरधरेख विशेषविराजति मनहुं भानुमण्डलहिं संवारतधर्योसुत विधिसु त विचित्रमाति सुभगअंगुष्ठ अङ्गुली अविरल कछुकअरुणनख जोति जगमगाति चरण पीठ उन्नत नतपालक गूढ गुल्फ जंघाकद ली जति कामतूणतलसरिस जानुयुग उरु करि कर करभहिंविल खावति रसनारचितरत्नचामीकरपीतवसन कटिकसे सरवसति नाभि सरसि त्रिवली नश्रेणिकारोमराजिसे वालछविपावति उर मुक्ता॥ मणि माल मनोहर मनहु हंस अवली उड़ि आवति हृदय पदि क भृगु चरण चिन्ह वर बाहु विशाल जानुलगि पहुंचति कलके। यूर पूर कंजन मणि पहुंची मञ्जु कञ्जुकर शोहति सुजन सुरेख सु रखअङ्गुलिसुमसुंदरपारिसुद्रिकाराजति अङ्गुलिवाणकमान

वारण छवि सुरनि सुखद असुरनि उर शालति श्यामशरीर सुचन्द्र नचर्नित पीत दुकूल अधिक छवि छाजति नीलजलद परनिरखि चन्द्रिकादुरनित्यो गिदामिनि जनुदमकति यज्ञोपवीत पुनीतिविराजतगूढ यंत्रवनिपीन अंसतति सुगरु पृष्ठ उन्नत कुकाटिकाकम्बुकरद शोभामन मानति शरद समय सरसीरुहनिरकमुख सुखमा कछुकहत नहि बनति निरखतही नयननि निरुपम सुख रविसुत मदन सोम द्विति निदरति अरुण अधरद्विज पांति अनूपम ललितहंसनि जनमन आकरति विद्रुमरचित विमान मध्य मानो सुरमण्डली सुमन चयवरषति मञ्जुलचिबुक मनोहर हनु यलकलकपोल नाशा मन मोहति पंकज मान विमोचन लोचन चितवनि चारु अमृत जल सींचति केश सुदेश गंभीर वचन वरश्रुति कुण्डल डोल निजियजागति लखिनलनील पयोद रसित सुनि रुचित मोरजोरी जनु नाचति भौहैं वंकु मयङ्क अङ्कचिकुङ्कुम रेख भाल भलि भ्राजति शिर सिहेम हीरक माणिक मय मुकुट प्रभा सब भुअन प्रकाशति वरणत रूप पार नहि पावत निगम शेष शुक शङ्कर भारति तुलसिदास केहि विधि वखानि कह पह मन वचन अगोचर मूरति ३०१ राग मल्लार आली री राघव के रुचिर हिंडोरना झूलन जैये टेक फटिक भीती सुचारु चहुं दिशि मणिमय पौरि गचकांचल खिमननाच सखि जनु पांच सर सुफ हौरि तोरण वितान पताक चामर ध्वज सुमन फल घौरि प्रतिछांह छवि कविसारि वदै प्रतिसों कहै डरु औरि १ मदन जय वेखम्भ रोर वे खम्भ रल विशाल पाटीर पार विचित्र भंवरावलि तवे लनालाल डाराडी कनककुंकुमतिलक रे खेसिमनसिजमालपटुली मदि करतिहदयजनुकलधौत कोमल मालर २ जनयेस घनघन घोर मृदु धुरि सुखद सावण लाग बम पांति सुर ध१

नुद्रुम कद्रामिनि हरित भूमि विभाग दादुर मुदित भरे सरित सर महि
उमग जनु अनुराग पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवनबा
ग ३ सो समो देखि सुहावनो नवसत संवारि संवारि गुणरूप यौवन
सींव सुन्दरि चली झूलन निहारि हिंडोल शाल विलोकि सब अञ्चल
पसारि पसारि लागी अशीशन राम सीतहि सुख समाज निहारि ४
झूलहि झुलावहि ओसरिन्ह गावहि सुगुरुड मलार मञ्जीर नूपुर
वलय धुनि जनु काम करतल तार अति मचत श्रम कण मुख
निबिथुरे चिकुर बिलुलित हार तमतडित उडगण अरुण बिधु·
जनु करत व्योम विहार ५ हिय हरषि वरषि प्रसून निरषि निवि·
बुधतिय तृणतूरि आनन्द जल लोचन मुदित मन पुलक तन·
भरि पूरि सब कहहि अविचल राज नित कल्याण मङ्गल भूरि चि
रजियो जानकी नाथ जग तुलसी सजीवनि मूरि ६॥३११॥राग
सुहो ॥ कौशलपुरी सुहावनि सरि सरजू के तीर भूपावली मुकु
ट मणि नृपति जहां रघुवीर पुर नर नारि चतुर अति धर्मनिपुन र
त नीति सहज सुभाय सकल उर श्रीरघुवर पद प्रीति छन्द ॥
श्रीराम पद जलजात सबके प्रीति अविरल पावनी जो चहत शु
क शनकादि शम्भु विरञ्चि मुनि मन भावनी सबही के सुन्दर म·
न्दिर अजिर राउ रङ्क न लखि परे नाकेश दुर्लभ भोग लोग करहिं न
मन विषय निहरे १ सब ऋतु सुखप्रद सो पुरी पावस अति कमनीय
निरषत मनहि हरत हठि हरित अवनि रमनीय वीरवहटि विरा
जहि दादुर धुनि चहुं ओर मधुर गरजि घन वरषहि सुनि बोलत
मोर ॥ छन्द ॥ बोलत जो चातक मोर कोकिल कीर पारावत घने·
खग विपुल पाले बालकन्हि कूजत उडात सुहावने वक राजि रा
जति गगन हीं सुरधनु तडित दिशि सोहहीं नभ नगर की शोभा
अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं २ गृह गृह रचे हिंडोर नाम

हिंग चकांच सुढार चित्र विचित्र चहु दिशि पर दाफ टिकपगा
र सरल विशाल विराजहिं विद्रुम खम्भ सुजोर चारु पाटिप
ट पुरट की मर कत मर कत भौर छन्द मरकत भवर डार डीक
नक मणि जटित दुति जग मगरही पटुली मनहु विधि निपुन
नानिज प्रगट करि राखी सही बहुरङ्ग लसत वितान मुक्ता दा
म सहित मनोहरा नव सुमन माल सुगंध लोभे मञ्जु गुञ्जत मधु
करा ३ सुरड सुरड फूलन लगीं गज गामिनि वर नारि कुसुभि
चीर तनु सोहहीं भूषण विविधि संवारि पिकवयनी मृगलो
चनी सारद शशि सम तुरड राम सुयश सब गावहीं सुस्व
र सुसारंग गुरड छन्द सारङ्ग गुरड मलार सोरठ सुहव सुघर
नि राजहीं बहु भांति तान तरङ्ग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं
अति मचत छूटत कुटिल कच छवि अधिक सुन्दरि पावहीं
पट उडत भूषण खसत हंसि हंसि अपर सखी झुलावहीं ४
फिरि फिरि झूलहि भावनि अपनी अपनी बार विबुध विमा
न थकित भये देखत चरित अपार वरषि सुमन हरषहिं उर
वरणहिं हरि गुण गाय पुनि पुनि प्रभुहिं प्रशंसहिं जय जय
जानकि नाथ छन्द जय जानकी पति विशद कीरति सकल
लोक मलापहा सुर वधू देहि अशीस जीवहु राम सुख सम्प
ति महा पावस समय कछु अवध वरणत सुनि अघौघ नसाव
हीं रघु वीर के गुण गण नवल नित दास तुलसी गावहीं ५॥
३१२॥ राग असावरी॥ सांझ समय रघु वीर पुरी की शोभा आजु व
नी ललित दीप मालिका विलोकहिं हित करी अवध धनी फ
टिक भीति शिखरनि पर राजति कञ्चन दीप अनी जनु अहि
नाथ मिलन आयो मणि शोभित सहस फणी प्रति मन्दिर क
लशनि पर भ्राजहिं मणि गण दुति अपनी मानहु प्रगटि वि

पुल लोहित पुर पठइ दिये अवनी घर घर मङ्गल चार ये करस
हरषि नरङ्ग गणी तुलसिदास कल कीरति गावहि जो कलिमल
समनी ३१ राग गौरी अवधनगर अति सुन्दर वर सरिता के तीर ॥
नीति निपुन नर तिय वसहि धर्म धुरंधर धीर सकल ऋतु सुख
दायक ता महं अधिक वसन्त भूपमौलिमणि जहं वसें नृपति जान
की कन्त वन उपवन नव किशलय कुसुमित नाना रङ्ग बोलत म
धुर मुखर खग पिक वर गुञ्जत भृङ्ग समय विचारि कृपानिधि द्वार दे
खि अति भीर खेलहु मुदित नारि नर विहंसि कह्यौ रघुवीर नगर ना
रि नर हरषित सब चले खेलन फाग देखि राम छवि अतुलित उमगत
उर अनुराग श्याम तमाल जलद तनु निर्मल पीत दुकूल अरुण कञ्ज
दल लोचन सदा दास अनुकूल शिर किरीट श्रुति कुण्डल तिलक
मनोहर भाल कुञ्चित केश कुटिल भ्रू चितव निभक्त कपाल कपोल सु
क नासिक ललित अधर द्विज जोति अरुण कञ्ज महुं जनु युग पांति
रुचिर गजमोति वर दर ग्रीव अमित वल बाहु सुपीन विशाल कङ्कन
हार मनोहर उर सिलसिलित वनमाल उर भृगु चरण विराजत द्विजप्रि
य चरित पुनीत भक्त हेतु नर विग्रह सुर वर गुणागोतीत उदर त्रिरे
ख मनोहर नाभी अति गम्भीर हाटक घटित जटित मणि कटितट
रत मञ्जीर उरु अरु जानु पीन मृदु मरकत खंभ समान नूपुर मुनि
मन मोहन करत सुकोमल गान अरुण वरण पद पङ्कज नख द्युति
इन्दु प्रकाश जनकसुता कर पल्लव लालित विपुल विलास कञ्ज कु
लिश ध्वज अंकुश रेख चलन शुभ चारि जनमन मीन हरण कह
वनसीर चीसंवारि अङ्ग अङ्ग प्रति अतुलित सुखमा वरणि न जाइ
चहि सुख मगण होहिं मन फिरि नहि अनत लोभाइ खेलन फागु अ
वधपति अनुज सखा सब सङ्ग वरषि सुमन सुर निरखहिं शोभा अमि
त अनङ्ग ताल मृदङ्ग झांझ डफ बाजहिं पनव निसान सुघर सरस

ह नाइन्ह गावहिं समयसमान वीणावेणुमधुर धुनिसुनि किन्नरगंधर्व
निजगुणगरु अहरु अपतिमानहि मनतजिगर्व निजनिज अटनि
मनोहर गान करहि पिकवयनि मनहुं हिमालपशिषरनिलशनिअ
मरमृगनयनि धवलधामतें निकसहिं जहतहं नारि वरुन्थमानहुं
मथतपयोनिधिविपुल अपसरा नृत्य किंसुक चरणसु अंसुकसुख
मासुखनिसमेत जनुविधुनिवहरहे करिदामिनिनिकरनिकेत कु
ङ्कुमसरस अबीरनिभरहि चतुर नरनारि ऋतुसुभायसुठि शोभितरे
हि विविधविधिगारि जो सुख योग यागजपतपतीरथतेंदूरि राम
कृपातेसोइ सुख अवधगलिनरह्यौ पूरि खेलिवसन्तकियोप्रभुमज्ज
नसरजूनीर विविधभांतियाचकजन पायेभूषणचीर तुलसिदास
तेहि अवसरमागीभक्तिअनूप मृदु मुसुकाय दीन्ह तव कृपादृष्टिर
घुभूप २१७ रागबसन्त खेलत वसन्तराजाधिराज देखतनभकौ
तुकसुरसमाज सोहै सखा अनुजरघुनाथसाथ झोलीन्ह अबी
र पिचकारिहाथ वाजहिं मृदङ्ग डफतालवेणु छिरकहिं सुगंधभ
रे मलयरेणु उतयुवतिनृत्यजानकि सङ्ग समयपटभूषणसरि
सरङ्ग लियेछरीवेत सौंधेविभाग चांचरिझूमकगावेसर सराग किं
किनिनूपुरधुनिअतिसुहाय ललनागणजवजेहिधरहिधायलो
चन आंजहिं फगुआमनाय छाडहिं न चाइ हाहाकराय चढिखर
निविदूषक स्वांगसाजि करैं कूटि निपटगइ लाजभाजि नरनारि
परस्पर गारिदेत सुनिहंसतरामभाइन निहंसतरामभाइनसमेतव
रषतप्रसूनवर विबुधवृन्द जयजयदिनकरकुलकुमुदचन्द ब्र
ह्मादि प्रशंसत अवधवास गावतकलकीरति तुलसिदास २१८॥
रागकेदारा देखत अवधको आनन्द हरषिवरषतसुमनदिनदिन
देवतनिकोवृन्द नगरचनाशिषनकोविधितकतबहुविधिवन्द
निपट लागतअगमज्योजल चरहिगमनस्वछन्द मुदित पुरलोगनि